आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 सितम्बर, 2017
डाक प्रेषण तिथि 10 सितम्बर, 2017

वर्ष : 75 अंक : 09
आश्विन, 2074 मूल्य : 10 रु.

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
WPP LICENCE NO. JAIPURCITY/WPP-004/2015-17

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

कषाय अंक-3

75 हीरक वर्ष

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

अहंकार के कारण - 1. व्यक्ति सोच में संकीर्ण तथा सच्चाई से विमुख होता है।
2. ज्ञान का द्वार अवरुद्ध हो जाता है।
3. व्यक्ति दूसरों का तिरस्कार करता है, फलतः स्वयं का भी तिरस्कार होता है।
4. सम्बन्धों में टकराव होता है।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
WPP Licence No. JaipurCity-004/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एयमट्ठं निसामित्ता,
हेऊ कारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी,
देविंदं इणमब्बवी।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.19

यह हेतु और कारण प्रेरित,
नमिराज अर्थ श्रुतिगोचर कर।
सुरपति को बोले चिन्तन कर वाणी,
ज्ञानामृत से भर कर।।

सितम्बर, 2017

वीर निर्वाण संवत्, 2543

आश्विन, 2074

वर्ष 75 अंक 9

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर
जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, फैक्स : 0141-4068798, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

'कषाय' अंक (3)

सम्पादकीय-	जिनवाणी की हीरक यात्रा (9)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
विचार-वारिधि-	गुणग्राहकता	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
प्रवचन-	कषाय आत्मा पर विजय हेतु सम्यक् आस्था से हो वास्ता	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	11
	क्रोध कषाय : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण (2)	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	16
शरीर-विज्ञान	मित्र जीवाणु के कार्य (2)	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	20
कषाय-विवेचन -	आचार्य गुणधर कृत 'कषायपाहुड' : एक मनोवैज्ञानिक कृति	-प्रो. वीरसागर जैन	21
	मान कषाय एवं अष्टविध मद : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण	-डॉ. पवनकुमार जैन	24
	अहंकार का स्वरूप एवं उस पर विजय	-श्री पारसमल चण्डालिया	41
	दिगम्बर आगम षट्खण्डागम एवं कसायपाहुड में वर्णित मान कषाय का स्वरूप	-डॉ. योगेशकुमार जैन	47
	लोभ कषाय : परिभाषा, दुष्परिणाम तथा परिहार	-डॉ. सुषमा सिंघवी	52
	कषाय विजय का सोपान : सेवा	-श्रीमती सुशीला बोहरा	55
कथा-	कषाय विजेता	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	9
कविता/गीत-	दो मुक्तक	-श्री पीरचन्द चोरडिया	23
	क्रोध	-श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	57
चिन्तन-	करें कषाय-निग्रह	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	15
	जीने का अन्दाज़	-श्रीमती सुमन डागा	51
	स्वाध्याय और कषाय	-श्रीमती शान्ता मोदी	59
बाल-जिनवाणी -	क्षमा वीरस्य भूषणम्	-श्री संजय अंशुजी सुराणा	84
	लेखक की सीख	-डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि	84
	बहुत बड़ी सीख	-श्री पारसमल चण्डालिया	85
	जैन धर्म : उभरते प्रश्न व उत्तर	-श्री प्रमोद महनोत	85
	Maintaining A Healthy Relationship with Your Parents	-*Miss Anjita Bhandari*	86
	पाँचवाँ बोल - पर्याप्ति छह	-संकलित	87
	You can	-*Collected from 'Anmol Ratan'*	87
	सामायिक सूत्र : वर्ग पहेली	-संकलित	88
	स्वच्छता और हम	-श्री प्रणत धींग	89
	स्वर्णिम बाल्यकाल	-श्री अरिन चोरडिया	91
परिणाम-	जिनवाणी के अंकों पर आयोजित प्रतियोगिता का परिणाम	-संकलित	80
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	58
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	60
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	82

सम्पादकीय

जिनवाणी की हीरक यात्रा (9)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

युवा पीढ़ी की मनःस्थिति, उसके रचनात्मक कार्यों, धार्मिक रुचि आदि के सम्बन्ध में आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के सान्निध्य में 19 से 21 नवम्बर 1980 को मद्रास में श्री अ.भा जैन विद्वत् परिषद् की राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें लगभग 90 विद्वान् सम्मिलित हुए। संगोष्ठी की रिपोर्ट जिनवाणी के जनवरी 1981 के अंक में विस्तार से 16 पृष्ठों में प्रकाशित हुई, जिसमें कई बिन्दु युवकों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। डॉ. नरेन्द्र भानावत के महामंत्रित्व में जैन विद्वत् परिषद् संगोष्ठियों के आयोजनों के साथ जैन विद्या के प्रोत्साहन हेतु छात्रवृत्ति एवं निबन्ध प्रतियोगिताओं का भी समय-समय पर आयोजन करती रही। आचार्य श्री हस्ती के सान्निध्य में ही नहीं अन्य आचार्यों एवं संतों के सान्निध्य में भी विभिन्न शहरों में उनके द्वारा संगोष्ठियों का आयोजन हुआ। श्री अखिल भारतीय महावीर जैन श्राविका संघ का षष्ठ अधिवेशन मद्रास में आयोजित हुआ। उस समय श्राविकाओं का संगठन महावीर जैन श्राविका संघ के नाम से था। विदेशों में जैन धर्म के प्रचार की आवश्यकता उस समय भी अनुभव की जा रही थी। श्री रसिकलाल सी. शेठ ने नवम्बर 1981 के अपने आलेख में यह प्रतिपादित किया कि विदेश में बसे हुए अपने भाई-बहनों में धर्म भावना बहुत है। यह धर्म भावना टिकी रहे एवं दृढ़ बने, ऐसे प्रयत्न की आवश्यकता है। बैंगलोर में श्री प्रकाशमल जी भण्डारी सहित चार मुमुक्षुओं ने 9 फरवरी 1981 को पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से जयनगर कॉर्पोरेशन ग्राउण्ड, बैंगलोर में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। इनमें श्री प्रकाशमुनिजी तपस्वी एवं उग्रविहारी संत थे।

09 मई 1981 को रायचूर में सुश्री सरला कांकरिया एवं सुश्री चन्द्रकला हुण्डीवाल की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई जो वर्तमान में महासती सरलेशप्रभाजी एवं महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. के रूप में जिनशासन को दीप्त कर रही हैं। जून 1981 के अंक से करुणा एवं जीव दया को प्रोत्साहित करने वाले आलेख 'इनकी ज़िन्दगी : आपका फैशन' सचित्र प्रकाशित हुए। डॉ. इन्दरराज बैद ने वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा को नये शब्द देते हुए लिखा- 1. सुनो, 2. पढ़ो, 3. गुनो, 4. गहो, 5. कहो। डॉ. इन्दरराज बैद के 'तिरुक्कुरल में निहित जैन भावना' पर आलेख तथा समय-समय पर उनकी कविताएँ भी प्रकाशित हुईं।

स्थानकवासी परम्परा साहित्य सर्जना की दृष्टि से भी समृद्ध रही है। डॉ. नरेन्द्र भानावत ने अपने तीन आलेखों में जयमल्ल, कुशलोजी, रायचन्द, चौथमल, दुर्गादास, आसकरण, जीतमल, सबलदास, रत्नचन्द्र (गुमानचन्द्रजी के शिष्य), रत्नचन्द्र (मनोहरदासजी के शिष्य), कनीराम, विनयचन्द्र, लालचन्द्र, हिम्मतराम, सुजानमल, रामचन्द्र, तिलोकऋषि, किशनलाल, नेमिचन्द, दीपचन्द, गजमल, माधवमुनि, खूबचन्द, अमीऋषि, जवाहरलाल, चौथमल (जैन दिवाकर), चौथमल (जयमलजी की परम्परा), मिश्रीमल (मधुकर केसरी) आदि संत कवियों, विनयचन्द, जेठमल आदि श्रावक कवियों तथा हरकूबाई, हुलासाजी, सरूपाबाई, जड़ावजी आदि साध्वी कवयित्रियों का साहित्यिक परिचय दिया है (जुलाई से सितम्बर 1981)। शोधार्थियों के लिए ये आलेख उपयोगी हैं।

13 सितम्बर 1981 को श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान का दीक्षान्त समारोह श्री डी.आर. मेहता की

अध्यक्षता एवं न्यायमूर्ति श्री गुमानमलजी लोढ़ा के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। संस्थान के स्नातक श्री धर्मचन्द जैन, गौतमचन्द जैन, पारसमल जैन, धर्मेन्द्र कुमार जैन और सरदारसिंह जैन ने शिक्षा पूर्ण कर विदाई ली।

10 जनवरी 1982 को आदर्श संत आचार्य हस्ती के प्रथम शिष्य श्री लघु लक्ष्मीचन्दजी म.सा. का 76 वर्ष की आयु में 50 चातुर्मासों की निरतिचार संयम साधना के साथ संथारापूर्वक बीजापुर (कर्नाटक) में स्वर्गगमन हो गया। जनवरी-फरवरी के संयुक्तांक में उन पर श्रद्धांजलि स्वरूप कुछ आलेख प्रकाशित हुए। वे सरलता, निर्मलता और सेवाभावना के प्रतीक थे। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया का 02 फरवरी 1982 को बीकानेर में देहावसान हो गया। उस समय स्वाध्याय संघ निरन्तर प्रगति पथ पर बढ़ रहा था, यह 174 क्षेत्रों में की गई पर्युषण पर्वाराधना से विदित होता है। श्री जैन स्वाध्याय विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, स्टेशन बजरिया सवाई माधोपुर द्वारा प्रथमा, प्रवेशिका एवं बालबोध परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया। अपभ्रंश, भाषा एवं साहित्य के प्रौढ़ विद्वान् डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन के आलेख जिनवाणी पत्रिका में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे। प्राकृत से ही अपभ्रंश का विकास हुआ एवं अपभ्रंश से ही हिन्दी एवं अन्य आंचलिक भाषाओं का। उनका कथन है जब तक अपभ्रंश भाषा, साहित्य और उसके शब्दों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया जाता तब तक हिन्दी भाषा और उसके साहित्य की प्रवृत्तियों के विकास का प्रामाणिक विश्लेषण करना संभव नहीं।

मार्च 1982 से जिनवाणी में पुनः कुछ वर्षों पश्चात् बालकथामृत प्रारम्भ हुआ, जिसमें कथा के साथ प्रश्न भी दिए जाने लगे। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को पुरस्कृत किया जाने लगा। स्थानकवासी परम्परा में पूज्य धर्मसिंहजी महाराज को पूरे 32 आगमों का अभ्यास था तथा उन्होंने भगवती, जीवाभिगम आदि पाँच आगमों को छोड़कर 27 आगमों पर टब्बे (टिप्पण) लिखे थे। इसके अतिरिक्त यंत्र, हुण्डी, चर्चा, टीप, बोल आदि का भी उन्होंने लेखन किया। इनके बारे में कथन है कि वे दोनों हाथों से ही नहीं, दोनों पैरों से कलम पकड़कर लिख सकते थे (मार्च 1982)। जिनवाणी में समर्पित सेवाभावी व्यक्तित्वों के लिए एक नया स्तम्भ प्रारम्भ हुआ, जिसका लेखन श्रीमती विमला डी. मेहता ने किया। 26 अप्रेल 1982 को सुश्री इन्दुबाला सुराणा, नागौर एवं विरक्ता विमलाकंवर, बारनी की जोधपुर में भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। वर्तमान में आप महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. एवं महासती श्री विमलावतीजी म.सा. के रूप में शासन की सेवा कर रही हैं। रायचूर चातुर्मास में 8 से 10 नवम्बर 1981 को आयोजित स्वाध्याय संगोष्ठी के कतिपय आलेख जून 1982 के अंक में प्रकाशित हुए।

जिनवाणी पत्रिका में उन दिनों जिनवाणी पत्रिका का प्राण एवं वैचारिक क्षमता को विकसित करने वाला आचार्य हस्ती का कोई न कोई प्रवचन प्रायः हर अंक में प्रकाशित हो रहा था। पूज्य आचार्य श्री हस्ती का एक प्रवचन सितम्बर 1982 में 'न्यायपूर्ण आचरण से शांति' शीर्षक से प्रकाशित हुआ, जिसमें संसार की स्थिति को सुधारने के लिए धर्म भावना एवं नैतिक आचरण पर बल प्रदान किया गया। 30 नवम्बर 1982 को श्री सुरेश कुमार जैन दादा जलगांव को 'समाज चिन्तामणि' उपाधि से अलंकृत किया गया। श्री सुरेश दादा का संकल्प था भगवान महावीर जैन विश्वविद्यालय की स्थापना करना, किन्तु चाहते हुए भी यह योजना मूर्तरूप न ले सकी।

जनवरी 1982 से अंग्रेजी आलेख प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रसंत विनोबा भावे का दीपावली के दिन 78 वर्ष की आयु में जैन विधि के अनुसार संथारापूर्वक निधन हो गया। रत्नसंघ के तपोधनी एवं प्रभावी संत श्री श्रीचंदजी महाराज का 17 जनवरी 1983 को इन्दौर में निधन हो गया।

पण्डितरत्न श्री हीरामुनिजी महाराज के 'मीठी वाणी बोलिये' शीर्षक से प्रकाशित प्रवचन में कहा गया- ''वचन रत्न ही ऐसा अनमोल रत्न है, जो द्वेषियों का द्वेष

मिटाकर प्रेम बढ़ा सकता है। जिनसे जान-पहचान नहीं है उनसे जान-पहचान करा सकता है। यह वह रत्न है जो मन के भीतर में रहे हुए रहस्य को बाहर ला देता है।'' 12 जनवरी 1983 को प्राचीन साहित्य के संग्राहक, समुद्धारक, गवेषक विद्वान एवं जिनवाणी के प्रसिद्ध लेखक श्री अगरचन्द नाहटा 72 वर्ष की अवस्था में काल कवलित हो गए। 19 जनवरी 1983 को जानकी नगर इन्दौर में सुश्री शान्ताजी मेहता की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई, जो सम्प्रति महासती श्री शान्तिप्रभाजी म.सा. के रूप में जिनशासन की सेवा में सन्नद्ध हैं। जयपुर के प्रसिद्ध डॉक्टर श्री ताराचन्दजी गंगवाल के भारतीय शाकाहार विषय पर छह किश्तों में महत्त्वपूर्ण आलेख प्रस्तुत हुए, जो आहार विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। 2 जून, 1983 को आचार्य श्री कुशलोजी म.सा. की पुण्यतिथि को 200 वर्ष होने के उपलक्ष्य में महामंत्री श्री माणकमल भण्डारी एवं अध्यक्ष श्री नथमल जी हीरावत के नेतृत्व में तप-त्याग के विशेष कार्यक्रम निर्धारित किये गए। अक्षय तृतीया पर सवाईमाधोपुर में 79 तपस्वी बहनों ने पारणे किए। स्वामी श्री ब्रजलालजी म.सा. का 2 जुलाई 1983 को 82 वर्ष की आयु में तथा जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश के रचयिता श्री जिनेन्द्र जी वर्णी का 24 मई को स्वर्गगमन हो गया। जिनवाणी में दीक्षा कुमारी का प्रवास के दूसरे भाग का प्रकाशन सितम्बर अंक से प्रारम्भ हुआ। यह उपन्यास वैराग्य की दृढ़ता एवं आचारनिष्ठा से सराबोर है। युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी का 26 नवम्बर को नाशिक में देवलोकगमन हो गया। उनमें मिश्री की मिठास एवं मधुकर की गुणग्राही दृष्टि थी। 19 दिसम्बर 1983 को कोडबाक्कम वडपल्ली मद्रास में शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के सान्निध्य में पूर्णिमाबाई बोहरा-कांजीपुरम्, सविताबाई वेदमुथा-सिरगुप्पा (कर्नाटक) सुश्री अंजुकुमारी-फाजिलाबाद, हिण्डौन की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई, जो सम्प्रति व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी, सेवाभावी महासती श्री दर्शनलताजी एवं व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी के रूप में संघ को दीप्त कर रही हैं।

15 दिसम्बर 1983 को जयपुर के रामनिवास बाग में पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से श्री प्रमोदकुमारजी मेहता सुपुत्र श्री सूरजमलजी मेहता, अलवर ने श्रमण दीक्षा अंगीकार की, जो सम्प्रति तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के रूप में जिनशासन को दीप्तिमान कर रहे हैं।

पण्डितरत्न श्री मानमुनिजी म.सा. के 'नमो आयरियाणं', 'मुनि पद का वैशिष्ट्य' आदि प्रवचनों का प्रकाशन जिनवाणी में हुआ। प्राध्यापक उ.भा.कोठारी अमलनेर ने जैन हस्तलिखित ग्रंथ भण्डारों के परिचय पर विस्तृत प्रकाश डाला, जो जिनवाणी के फरवरी से मई 1984 के अंकों में प्रकाशित हुआ। यह आलेख जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, नागौर, अजमेर, जोधपुर, पीपाड़ सिटी, चुरू, जालोर, देलवाड़ा, अहमदाबाद, खंभात, पाटन, सूरत, बड़ोदरा, शत्रुजंय तीर्थ, भावनगर, जामनगर, लींबड़ी, राधनपुर, ईडर, मुम्बई, शोलापुर, कारंजा, नागपुर, कोल्हापुर, दिल्ली, आगरा, अलीगढ़, उज्जैन, इन्दौर, सागर, ग्वालियर, रतलाम, भोपाल, पंजाब, बिहार, बंगाल, कर्नाटक आदि विभिन्न स्थानों के हस्तलिखित ग्रंथ भण्डारों का परिचय प्रदान करता है। शोधार्थियों के लिए यह आलेख उपयोगी है। मरुधर केसरी श्री मिश्रीमलजी म.सा. का 17 जनवरी 1984 को स्वर्गारोहण हो गया। आप कड़क मिश्री के नाम से प्रसिद्ध थे। आप आगमों के विशिष्ट ज्ञाता, आशु कवि, कुशल संगठक एवं श्रमण संघ के दृढ़ आधार स्तम्भ थे। आपकी प्रेरणा से बकराशाला, गौशाला, पुस्तकालय, विद्यालय, अस्पताल जैसी लोक कल्याणकारी संस्थाएँ स्थापित हुईं। अजमेर में प्रवर्तक श्री कुन्दनमलजी म.सा. का 20 फरवरी को स्वर्गगमन हो गया। आपके पूज्य आचार्य श्री हस्ती से मधुर सम्बन्ध थे। पद्मश्री श्री मोहनलालजी चोरडिया, मद्रास का 05 फरवरी 1984 को देहावसान हो गया। आप एक उदारमना समाजसेवी थे। 07 अप्रेल 1984 को निर्मला जी सुराणा की नागौर में दीक्षा सम्पन्न हुई, जो वर्तमान में व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. के रूप में शासन को समृद्ध कर रही हैं।

जुलाई 1984 का अंक सामायिक-संगोष्ठी विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ। इस अंक में नवम्बर 1983 में जयपुर में आयोजित सामायिक-संगोष्ठी के कतिपय आलेख उपलब्ध हैं। इसलिए यह अंक 64 पृष्ठों के स्थान पर 132 पृष्ठों का प्रकाशित हुआ। इसमें श्री भंवरलाल कोठारी-बीकानेर, श्री सरदारमल कांकरिया-कोलकाता, डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया-अलीगढ़, श्री कन्हैयालाल लोढ़ा-जयपुर आदि के आलेखों को स्थान दिया गया। सन् 1984 का आचार्य हस्ती का चातुर्मास रेनबो हाउस, मण्डोर रोड़, जोधपुर में 18 मासक्षपण एवं अनेकविध तप-त्याग के साथ उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। 22 जुलाई को मालवकेसरी श्री सौभाग्यमलजी म.सा. का रतलाम में 89 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आचार्य हस्ती की सेवा में रहे पण्डित शशिकान्त झा का 12 अगस्त 1984 को निधन हो गया। अक्टूबर से दिसम्बर 1984 का अंक कर्मसिद्धान्त विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसके चार खण्डों में 51 आलेख कर्मसिद्धान्त के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। लगभग 350 पृष्ठों की पाठ्य सामग्री इस अंक में उपलब्ध है। सम्पादक डॉ. भानावत द्वारा यह अंक आचार्य हस्ती के 75 वें जन्मदिवस के अवसर पर उन्हें समर्पित किया गया।

सन् 1965 एवं 1966 की जिनवाणी यात्रा-

श्री उमेशमुनिजी 'अणु' ने कोटा सम्प्रदाय के आचार्य श्री छगनलालजी महाराज का परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि बूंदी से लगभग 8 कोस दूर रानीपुरा ग्राम में संवत् 1911 में फतहचन्दजी म.सा. के सान्निध्य में उनकी दीक्षा सम्पन्न हुई। श्री अगरचन्द नाहटा ने कतिपय श्वेताम्बर विदुषी कवयित्रियों पर परिचयात्मक आलेख लिखा, जिसमें खतरगच्छ, तपागच्छ आदि की साध्वियों का उल्लेख है। जयपुर में आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार की स्थापना पौष शुक्ला चतुर्दशी संवत् 2016 को लाल भवन जयपुर में हुई। शोधार्थियों के लिए यह भण्डार अति उपयोगी है, क्योंकि इसमें अनेक प्राचीन पाण्डुलिपियाँ एवं प्रकाशित ग्रंथ उपलब्ध हैं। मार्च एवं अप्रेल 1965 का अंक सामायिक अंक के रूप में लगभग 200 पृष्ठों में प्रकाशित हुआ, जिसमें उपाध्यायश्री हस्तीमलजी महाराज, उपाध्याय श्री अमरचन्दजी महाराज, मुनि श्री फूलचन्दजी 'श्रमण', श्री उमेशमुनिजी 'अणु', श्री विजयमुनिजी, प्रो. सागरमल जैन, डॉ.देवेन्द्रकुमार जैन, श्री चाँदमल कर्णावट, डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया आदि के आलेख प्रकाशित हैं। क्रियोद्धारक पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज पर श्री राजमल ओस्तवाल ने 8 पद्यों में स्तुति करते हुए लिखा-

पूज्यरत्न के गुणकीर्तन से, धर्म सम्पदा पायेंगे।
शुद्धमति एकाग्रचित्त से, गुरु का ध्यान लगायेंगे।।

जुलाई-अगस्त-सितम्बर 1965 का अंक संयुक्तरूप से 40 पृष्ठों का प्रकाशित हुआ। इसमें उपाध्यायश्री हस्तीमलजी म.सा. की प्रेरणा से मध्यप्रदेश स्थानकवासी जैन युवक संघ द्वारा स्वाध्याय संघ योजना का श्री मोतीलाल जी सुराना के संयोजन में शुभारम्भ किये जाने का उल्लेख है। मध्यप्रदेश स्वाध्याय संघ आज भी इन्दौर में कार्यरत है। नवम्बर 65 के अंक में श्री जिनेन्द्रकुमार जैन 'एडवोकेट' एवं श्री जतनराज जैन 'साहित्यरत्न' का नाम सम्पादक मण्डल में जुड़ा तथा श्री चम्पालाल कर्नावट मुम्बई चले गए। प्रबन्ध सम्पादक श्री भंवरलाल बोथरा ही रहे। दिसम्बर 1965 के अंक में उपाध्याय श्री हस्तीमलजी म.सा. का महत्त्वपूर्ण आलेख 'साधना के तीन विष' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। आत्म साधक पुरुष को विभूषा, स्त्री संसर्ग एवं प्रणीतरस भोजन स्वरूप तीन विषों से बचना चाहिए। यह आलेख आज भी साधकों के लिए उपयोगी है। अप्रेल 1966 के अंक में पाटण के जैन ज्ञान भण्डार पर श्री सोहनमलजी कोठारी का आलेख महत्त्वपूर्ण है। वहाँ हेमचन्द्राचार्य ज्ञान भण्डार अत्यन्त समृद्ध है। इसका निर्माण तत्कालीन निजाम द्वारा बेलज्यिम के विख्यात आर्किटेक्ट श्री गस्पर की योजनानुसार कराया गया, जो पूर्व एवं पश्चिम की स्थापत्य कला का संमिश्रण हैं। पाटण में और भी ज्ञान भण्डार हैं। संवत्सरी को लेकर श्री कुन्दनमलजी महाराज ने श्री रतनलाल डोसी के

सम्यग्दर्शन में प्रकाशित प्रश्नों का सटीक उत्तर दिया। अगस्त-सितम्बर-अक्टूबर का अंक तप विशेषांक के रूप में 212 पृष्ठों का प्रकाशित हुआ, जिसमें तप के सैद्धान्तिक, तुलनात्मक एवं सामयिक स्वरूप को प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत अंक में तप के सम्बन्ध में न केवल जैन दर्शन के अनुसार निरूपण हुआ है, अपितु वैदिक परम्परा एवं बौद्ध परम्परा में प्राप्त तप का भी विवेचन उपलब्ध है। 26 आदर्श तपस्वियों का विवेचन भी एक आलेख में हुआ है। इस अंक का सम्पादन डॉ. नरेन्द्र भानावत ने किया। दिसम्बर 1966 के अंक में गुलाबपुरा स्वाध्याय संघ की रिपोर्ट प्रकाशित की गई, जिसमें 43 स्थानों पर 75 स्वाध्यायियों द्वारा पर्युषण में सेवा देने का उल्लेख है। (सन् 1967 से हीरक यात्रा पूर्व अंकों में प्रकाशित हो चुकी है।) **(क्रमशः)**

कषाय विजेता

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

पूरे विश्व को विजय करने का सपना लिये प्रतापी सम्राट् अपनी पूरी सेना के साथ आगे बढ रहा था। मस्तक् अहंकार से गर्वित हो रहा था। मायावी चेहरे पर कुटिल मुस्कान थी। आंखों में क्रोध के अंगारे थे। दिल में लोभ था, विश्व विजेता बनने का। सम्राट् की जयकार करती हुई सेना आगे बढ़ रही थी। अचानक सम्राट् ने पूछा- सेना की गति मंद क्यों हो गयी?

सेनापति ने जवाब दिया- ''राजन्! आगे कोई प्रभावशाली जैन संत बैठे हैं। सैनिक उनको देखकर स्वतः ही नतमस्तक हो रहे हैं।''

सम्राट्- ''अच्छा यह बात है बुलाओ उसे।''

सेनापति- ''सम्राट् यह जैन साधु है, बुलाने पर नहीं आते। यही श्रेयस्कर होगा कि आप ही उनके दर्शन हेतु पधारने का कष्ट करें।''

सम्राट् के अभिमान को चोट तो लगी फिर भी संयत होते हुए रथ से उतरा और सेनापति के साथ जैन संत के पास पहुँचा। पहली बार इन्सान की देह में साक्षात् भगवान के दर्शन हो रहे थे। लगता था सूर्य देव साक्षात् धरती पर पधार गये। वह आभा मण्डल और वह अपूर्व तेज। चेहरे पर चांद सी सौम्यता और शीतलता। सम्राट् आकर्षित हो गया। फिर भी चेहरे पर कुछ कठोर भाव लाकर पूछा- ''हे साधु! तुम मेरे सम्मान में खड़े क्यों नहीं हुए।''

संत- ''क्या दास के आने पर उसके सम्मान में खड़ा होना चाहिए क्या?''

सम्राट्- ''नहीं तो।''

संत- ''राजन्! तुम तो मेरे दास के भी दास हो।'' सम्राट् का हाथ तलवार की मूठ पर चला गया, फिर भी संयत होते हुए पूछा- ''वह कैसे?''

संत फरमाते हैं- ''राजन्! तुम क्रोध, मान, माया, और लोभ के दास हो और मैंने इन चारों को जीत लिया है। ये चारों मेरे दास हैं इसलिए तुम मेरे दास के दास हो।''

सम्राट् आश्चर्य से पूछा- ''भगवन्! आपने इन चारों को कैसे जीता?''

संत- ''राजन्! मैंने क्रोध को क्षमा से जीता है, मान को विनय से जीता है, माया को सरलता से और लोभ को संतोष से जीता है। इन चारों को जीतने के बाद मोह को जीता है।''

सम्राट्- ''हे नाथ! आप ही सच्चे विजेता हैं। मैं तो हारा हुआ जुआरी हूँ।''

संत- ''राजन्! स्वयं को जीतने वाला ही विजेता होता है। आत्मा को जीतने वाला ही विजेता होता है।''

सम्राट् की सेना वापस राजमहल की ओर लौट रही थी और सेनापति देख रहा था कि सम्राट् का मुकुट जमीन पर पड़ा था और जो हाथ तलवार की मूठ पर था वह हाथ पंचमुष्टि लोच से अपने केशों का त्याग कर रहा था। सम्राट् संयम लेकर अपने जीवन का कल्याण करने के लिए यानी संत भगवन्तों को चरणों में नतमस्तक था।

-राष्ट्रीय मंत्री,
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
504, रिद्धी विनायक अपार्टमेन्ट, दिग्विजयनगर,
खेमे का कुआ, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

विचार-वारिधि

गुणग्राहकता

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- जो मोह के कारण पाप में फँसे होते हैं, उनमें त्याग की बुद्धि ही उत्पन्न नहीं होती।
- संसार की समस्त सम्पदा और भोग के साधन भी मनुष्य की इच्छा पूरी नहीं कर सकते हैं।
- जैसे घृत की आहुति से आग नहीं बुझती, वैसे ही धन की भूख धन से नहीं मिटती है। तन की भूख तो पाव भर अन्न से मिट जाती है, किन्तु मन की भूख असीम है। उसकी दवा त्याग और संतोष है, धन प्राप्ति या तृष्णा पूर्ति नहीं।
- यदि मनुष्य इच्छा को सीमित करले तो सब कारण स्वतः समाप्त हो जाएंगे, विषमता टल जायेगी, वर्गभेद मिटकर सब ओर शान्ति और आनन्द की लहर फैल कर यह पृथ्वी स्वर्ग के समान बन जाएगी।
- कुसंग में पड़ा तरुण तन बल, ज्ञान और आत्मगुण सभी का नाश करता है।
- उत्तेजक वस्तुओं के भोजन और शृंगार प्रधान वातावरण में रहने के कारण बच्चों में काम-वासना शीघ्र जागृत होती है।
- समाज यदि समय रहते बच्चों के सुसंस्कार के लिए तन, मन, धन नहीं लगाएगा तो इसके कटु फल उसे अवश्य भोगने पड़ेंगे।
- चिकित्सक रोग का दुश्मन, पर रोगी का मित्र होता है। यही दृष्टिकोण आत्म-सुधार की दिशा में भी रखा जाए तो शासन तेजस्वी रह सकता है।
- वस्तुतः मर्यादित जीवन में शान्ति है तथा अमर्यादित जीवन में अशान्ति।
- आज दूसरों को झगड़ते देख मनुष्य उपदेश देता है, किन्तु स्वयं सहनशीलता को जीवन में नहीं अपनाता, संयम और विवेक से काम नहीं लेता।
- साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।
- जिस साधक में श्रद्धा और धैर्य हो, वह अपने सुपथ से विचलित नहीं होता। संसार की भौतिक सामग्रियाँ उसे आकर्षित नहीं करती, बल्कि वे उसकी गुलाम होकर रहती हैं।
- यद्यपि शरीर चलाने के लिए साधक को भी कुछ भौतिक सामग्रियों की आवश्यकता होती है, किन्तु जहाँ साधारण मनुष्य का जीवन उनके हाथ बिका होता है, वहीं साधक की वे दास होती हैं।
- समाज के अधिकांश लोग अनुकरणशील होते हैं। वे अपने से बड़े लोगों की नकल करने में ही गौरव अनुभव करते हैं। इस प्रकार देखा-देखी से समाज में गलतियाँ फैलती रहती हैं।
- आज धर्म और कानून की उपेक्षा कर मनुष्य व्यर्थ की हिंसा बढ़ा रहा है। फलतः देश का पशुधन और शुद्ध भोजन नष्ट होता जा रहा है।
- मनुष्य को मधुमक्खी के समान बनना चाहिए न कि मल ग्रहण करने वाली मक्खी के समान।
- पुत्र की अपेक्षा पुत्रियों में सुशिक्षा और सुसंस्कार इसलिए आवश्यक है कि उन्हें अपरिचित घरों में जाना तथा जीवनपर्यन्त वहीं रहना है।
- लड़की यदि सुशीला और संस्कारशील होगी तो परिवार को प्रेम के बल पर अविभक्त और अखण्ड रख सकेगी।
- जो विरोधाग्नि का मुकाबला शान्ति के शीतल जल से करते हैं, वे विरोधी को भी जीत लेते हैं।
- जो ज्ञानी होकर स्वयं जागृत हैं, जड़ पदार्थ उसे अपनी धारा में नहीं बहा सकते हैं।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

कषाय आत्मा पर विजय हेतु सम्यक् आस्था से हो वास्ता

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. शास्त्रीय सन्दर्भों से, दृष्टान्तों से एवं घटित घटनाओं से विषय का प्रतिपादन करते हैं। आस्था से वास्ता होने पर रास्ता स्वयं अनुशास्ता बन जाता है। 31 मई 2017 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन-सम्पादन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

जानकारी को जीवन में रूपान्तरित कर आस्था से वास्ता जोड़कर संघ के अनुशास्ता बनने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और विवेक के प्रकाश को जीवन में आचरित कर आचरण के प्रतिपालक-प्रतिपादक आचार्य भगवन्त-उपाध्याय भगवन्त के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्......।

बन्धुओं!

जानने, मानने और करने की शक्ति से सम्पन्न होता है उसे मानव कहते हैं। जानकारी का सदुपयोग, मानने का प्रभाव और करने का सम्यक् आचरण। जानना, मानना और करना तीनों आत्मा के कार्य हैं। दो निज गुण के रूप में और एक सहकारी साधन के रूप में।

पच्चीस बोल तत्त्व का सार है। जिनशासन में ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए पच्चीस बोल प्रवेशद्वार है। पन्द्रहवें बोले- आत्मा आठ में द्रव्य आत्मा के अन्तर्गत असंख्य प्रदेशों के समूह को कह दिया है और भावों के आधार पर पीछे की सात आत्माएँ कही हैं। ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा और चारित्र आत्मा आठ भेदों में महत्त्वपूर्ण हैं, चारित्र में तप का समावेश कर दिया, वीर्य आत्मा को अलग कह दिया। सम्यक् दर्शन से पहले ज्ञान और चारित्र आत्मा नहीं होती।

भाव क्या? वर्तमान पर्याय से उपलक्षित द्रव्य ही भाव है। पहले गुणस्थान में अनादि काल की छः आत्माएँ हैं, ज्ञान आत्मा नहीं। जीव का लक्षण है- ज्ञान और दर्शन। ''उवओगलक्खणो जीवो'' अर्थात् जीव का उपयोग लक्षण है।

लक्षण किसको कहना? असाधारण गुण को लक्षण कहते हैं। यानी स्पेशल क्वालिटी। वह असाधारण गुण इसी द्रव्य में होगा, अन्य में नहीं। असामान्य गुण जीव को जड़ से अलग करने वाला है। 'स्वपरव्यवसायि ज्ञानं प्रमाणम्।' स्व-पर को जानना जीव का लक्षण है। स्व-पर का ज्ञान ही प्रमाण है। जब तक कषाय की तीव्रता है अनन्तानुबन्धी और मिथ्यात्व का उदय है तब तक जानकारी और जीवन में दूरी है। उस समय ज्ञान लक्षण वाले जीव के ज्ञानात्मा नहीं होती। खाई है तब तक जानकारी ज्ञान नहीं कहलाती। निज विवेक का अनादर- अविवेक, अविद्या, अज्ञान ही दूरी उत्पन्न करता है। यही खाई है।

जानकारी और जीवन में जब विषमता होती है तब जानकारी का उपयोग कर्त्तव्य पालन में नहीं होता। हम 'एगे णाणे' की चर्चा कर रहे हैं। ज्ञान एक है। ज्ञानात्मा को प्रकट करती है दर्शनात्मा। पहले गुणस्थान में ज्ञान नहीं, फिर भी दर्शन आत्मा है। भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 10 में आठ आत्माओं का अधिकार वर्णित है। द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा, दर्शन आत्मा प्रत्येक जीव में सदा-सर्वदा चौदह गुणस्थान और सिद्ध अवस्था तक पाई जाती है। दर्शन है- निर्विकल्प बोध; सामान्य बोध। ध्यान में यह बोध होता है। कोई विकल्प

नहीं होता, मात्र बोध होता है। देखने या अनुभव करने पर ही इसे जाना जा सकता है। इस शरीर की सच्चाई को कौन नहीं जानता? राइप्पसेणीय सूत्र में चित्त सारथी द्वारा केशी श्रमण के चरणों में उपस्थित होकर राजा परदेशी कहने लगा- ''मेरी दादी धर्मात्मा थी। वह खूब धर्म करती थी, इसलिए आपके सिद्धान्त से देवलोक में गई होंगी। वह यदि नीचे आकर मुझे कह दे कि मैं देवलोक में आनन्द से बैठी हूँ तू राजा पाप छोड़- धर्म कर, तो मैं मान लेता कि आत्मा है। मेरी दादी आकर कहे तो मैं पाप का त्याग कर दूँगा।''

''मेरे दादा ने खूब पाप किए इसलिए आपके सिद्धान्त के अनुसार वे नरक में गए होंगे। वे आकर भी मुझे बोल दें तो मैं मान लेता।'' चलो, नरक वाला आने में स्वाधीन नहीं, पर स्वर्ग वाला तो स्वाधीन है।

परदेशी के प्रश्न पर उत्तर दिया गया- ''देव क्यों नहीं आ सकते। उदाहरण के लिए मुनिराज ने पूछा कि तू नहा-धोकर, शृंगार से सुसज्जित होकर, रानियों के साथ कौमुदी-महोत्सव के लिए राज सेवकों द्वारा सेवित होकर जा रहा है, अटवी-भ्रमण या अन्य उत्सव के लिए जा रहा है उस समय सफाई विभाग का कर्मचारी जो गटर साफ करता है, गटर में विष्ठा है, बदबू है वह कहे- ''आओ, परदेशी! थोड़ी देर के लिए यहाँ पधारो तो क्या आप उस गटर का जायजा लेंगे?''

भंते! नो इणट्ठे समत्थे- यह अर्थ समर्थ नहीं है। ऐसा करना मेरे लिए संभव ही नहीं है। एक सोने का कलश बनाकर उसमें मल-मूत्र भरकर रेशम के कपड़े से ढ़ककर कोई कहे कि आप इसे अपने पास रख लें तो? इसके लिए कोई तैयार नहीं। फिर इस विष्ठा के भण्डार, मल-मूत्र की थैली को सोने के आभूषणों से कैसे सजाते हैं? बोला जाता है-

दीपे चाम चादर मढ़ी, हाड़ पिंजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह।।

यह शरीर हाड-मांस का पुतला है। इससे घृणित और क्या हो सकता है? नाक से श्लेष्म, आँख से गीड और शरीर से खून-मांस, मल-मूत्र ये सब अशुचि हैं, इनका भण्डार शरीर में है। अगर ज्ञान में दृढ़ आस्था हो जाती तो भोग में जीवन-बुद्धि नहीं होती। भोग में जीवन बुद्धि अनन्तानुबंधी है। इसका कारण अपने ज्ञान का अपने पर प्रभाव नहीं होना है। जब तक अजीव में जीव की श्रद्धा है, तब तक ज्ञान-आत्मा प्रकट नहीं होती। आत्मा से वास्ता होने पर रास्ता स्वयं अनुशास्ता बन जाता है। जब राजा तू गटर के पास जाना नहीं चाहता तो दादी बदबू बहुल इस मर्त्य लोक में कैसे आए?

उत्तराध्ययन का 19 वां अध्ययन मृगापुत्र का है। शास्त्र में दो मृगापुत्र हैं। एक- मृगा लोढ़ा के नाम से विख्यात है, एक है मृगापुत्र। मृगा लोढ़ा का दुःख-विपाक सूत्र में वर्णन है। उसके न आँख है, न कान। आँख-नाक-कान आदि के स्थान पर है मामूली छिद्र। मुँह भी व्यवस्थित नहीं, वहाँ भी केवल छिद्र। उसका ऐसा बीभत्स रूप कि देखते ही घृणा हो जाय। अंग हैं तो बस औपचारिकता पूर्ति के लिए। मृगा लोढ़ा के जीव को गर्भ में मरवाने के लिए कितने ही प्रयास किए गए, किन्तु आयुष्य प्रबल था। वह राजा के यहाँ पैदा हुआ। वहाँ खाने-पीने की पूरी सामग्री उपलब्ध थी, संभालने वाले भी थे। जन्म भले ही राजा के घर हुआ परन्तु बदबू ऐसी कि उसे तलघर में रखना पड़ता। उसका आहार सामान्य व्यक्ति से कई गुना अधिक था। पैदा होते ही उखरड़ी पर फेंक देने की योजना थी, पर राजा ने कह दिया- पहली सन्तान को उखरड़ी पर फेंक देंगे तो फिर संतान स्थिर नहीं रहेगी। अतः इसे प्रच्छन्न (गुप्त) रखकर इसका पालन करो।

गौतम स्वामी भगवान की आज्ञा से मृगा लोढ़ा को देखने आते हैं। माता ने अपनी नाक कपड़े से बांधी और गणधर गौतमस्वामी से प्रार्थना की कि आप भी नाक पर कपड़ा बांध लीजिए। अन्दर भयंकर बदबू है। मनुष्य जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल पर पूर्वजन्म का दुरुपयोग, अन्याय-अनीति राजसत्ता से जनता पर

जुल्म-दमन-अत्याचार, नरक में यातना पाकर कुछ सरलता-कुछ भद्रता, कुछ विनीतता से आयु तो मानव की मिल गई, पर जीवन नारकीय वेदना का।

गौतमस्वामी ने देखा- एक गाड़ा भर कर खाना तहखाने में पहुँचाया जा रहा है। खाना खाने के साथ इधर खाया, उधर पीप-रुधिर की उल्टी हुई तो उसे भी चाट रहा है। उल्टी को देखकर किसी का भी मन बिगड़ सकता है। मृगा लोढ़ा जो भी खाता, वह मुँह से और अशुचि के स्थान से बाहर निकलता। ऐसी दुर्दशा कोई कैसे देख सकता है?

यह स्थिति क्यों बनी? पहले के किए गए पाप, षड्यंत्र और दुरुपयोग आँखों के सामने आ रहे हैं, दुःख-विपाक सूत्र में पूर्व जन्म के पाप, उच्छृंखलता, अन्याय-अनीति, माँस-भक्षण, मदिरा-सेवन एक-एक पात्र को देखना हो तो आप शास्त्र देखें, पढ़ें।

किसी को मारे, किसी को लूटे, काम करे अन्याय का,
जैसा करोगे वैसा भरोगे, लेखा है राई-राई का,
नहीं छोटे-बड़े की दरकार है,
चाहे कर ले तू जतन हजार है,
नहीं बचा सकेगा परमात्मा,
फिर औरों का क्या एतबार है।
जरा कर्म देख कर करिये.....।।

'जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम्'। तत्त्वार्थ सूत्र के सातवें अध्याय में कहा है कि जगत का स्वभाव-स्वरूप देखने से संवेग आता है और काया की सच्चाई वैराग्य जगाती है। आस्था से वास्ता हो जाए तो कौन सा इस काया में रत रहेगा। काय-रता ही तो कायरता है।

कषाय आत्मा कर्म-संयोग से बनती है, कषाय-उदय से बनती है, योग और वीर्य में भी संयोग का प्रभाव है किन्तु ज्ञान-दर्शन आदि जीव के गुणों वाली आत्माएँ संयोग वाली आत्मा नहीं है।

संयोग क्या? उत्तराध्ययन सूत्र की प्रथम गाथा से आप परिचित हैं ही-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे।।

द्रव्य संयोग बाहर की चीज है। यह शरीर पट्टे पर बैठा है। सुने हुए, माने हुए सम्बन्धों का सद्भाव, यह भाव संयोग हैं। याद करें उस दिन को जब हम अपने उस नाम को जानते भी नहीं थे, जिस नाम से आज जुड़े हुए हैं।

सुने हुए, माने हुए सम्बन्ध का सद्भाव संयोग है। मुझे किसी ने कहा- ''प्रमोद। एक-दो बार कहा, पाँच-पच्चास बार कहा, सौ बार कहा तो मेरा अन्तर्मन कहेगा- प्रमोद तू ही है।''

दीपावली के दिन आप घर पर दीपक लाते हैं। मिट्टी से बने दीपक में पानी डालते हैं। कुछ ही समय में वह पानी कहाँ चला जाता है? आप मटकी लाते हैं। मटकी में पानी डालते हैं तो थोड़ी देर में वह पानी नहीं दिखता। वह पानी चाहे दीपक में हो या मटकी में मिट्टी पानी चूस जाती है। इसी तरह बार-बार जो शब्द कान तक आते हैं, उस सुने हुए का, माने हुए का सद्भाव जम जाता है।

एक भाई बोलता है- व्याख्यान बहुत अच्छा है। जिनवाणी की अच्छी वर्षा हो रही है; सुनकर भीतर में गुदगुदी-सी लग जाती है, यह संयोग की गुलामी है। इतने में पीछे से आवाज आई- ''प्रमोदमुनि फालतू की बातें करता है तो........?'' अभेद भाव का सम्बन्ध अहं को और भेदभाव का सम्बन्ध मम को दृढ़ करता है। मैं और मेरा। मैं अहं भाव है, मेरा मम भाव। देह नाम में दृढ़ता होने पर देहाभिमान से भय पैदा होता है। भेद से संघर्ष होता है।

संयोग दुःख का मूल है। हर वियोग में दुःख महसूस होता है। हमारे सामने आदर्श है- कर्म नहीं, काया नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं। ज्योत में ज्योत विराजमान का आदर्श अव्याबाध सुख

है। जहाँ कुछ नहीं, वहाँ सब कुछ है। जहाँ कुछ है, वहाँ कुछ नहीं। हम कुछ के पीछे क्यों बर्बाद हो रहे हैं? बाहर में कुछ को पाना सब-कुछ गंवाना है। छह खण्ड का अधिपति चक्रवर्ती भी आत्म-साम्राज्य के सामने नगण्य होता है।

एक भाई संत के चरणों में कह रहा था कि मेरे पास इतनी जमीन है, इतनी जायदाद है, इतने खेत-खलिहान हैं। धन-सम्पदा की कोई कमी नहीं है। आप कोई भी सेवा हो तो मुझे मौका दें। मेरे पास खूब सामग्री है। संत ने उस भाई को एक नक्शा दिखाया। नक्शा सामने रखकर कहा- यह दुनिया का नक्शा है, इसमें तेरी जमीन कहाँ है? नक्शे में देश इतना-सा है, प्रान्त उससे कम और शहर का नाम तो केवल मात्र बिन्दु जितना। नक्शे में जमीन और खेत बताना संभव नहीं है। मतलब क्या? बाहर में सब कुछ पाया नहीं जा सकता। कुछ पाकर सब कुछ गंवाना क्या मूर्खता नहीं है?

संयोग में सुख की दासता अच्छी नहीं। बाहर के पदार्थों से सुख मिलेगा, यह विपरीत मान्यता है। विपरीत जानकारी के कारण विवेक का आदर नहीं हो पाता। मृगा लोढ़ा पृथ्वी पर भार बना हुआ है। न हाथ, न पैर। वह अपना कोई काम नहीं कर सकता। आस्था से वास्ता नहीं हुई; अतः पराधीनता का, जड़ता का, अभाव का रास्ता भव-भव में दुःखों का रास्ता बन गया।

उत्तराध्ययन सूत्र का 19 वां अध्याय है- राजकुमार मृगापुत्र का। वह भी राजा का पुत्र है। वह विवशता में नहीं, बल्कि राज-रानियों से घिरा हुआ है। भोग के सभी साधन सुलभ हैं। संगीत चल रहा है। नृत्य हो रहा है। रसना इन्द्रिय के पोषण की सभी सामग्री उपलब्ध है। उस पर किसी राजा ने आक्रमण नहीं किया। उसे न रोग है, न शोक है। वह राजमहल के झरोखे में बैठा है। नगर के तिराहों-चौराहों पर देख रहा है। उसे राज-मार्ग पर चलते एक संत दिखाई दिए। दृष्टि पड़ते ही चिन्तन चला कि मैंने कहीं देखा है? कहाँ देखा, इसको लेकर मृगापुत्र विचार-मग्न है। स्मृति-पटल पर बार-बार जोर दे रहा है। चिन्तन की धारा गहराई में चल रही है। सार्थक चिन्तन, स्वरूप का चिन्तन, तत्त्व का चिन्तन। शुभ-कर्म, स्थूल शरीर का सदुपयोग, भगवत् चिन्तन, प्रशस्त अध्यवसायों से, लेश्याओं के शुभ परिणामों से जाति-स्मरण ज्ञान हो गया। यह शरीर अशुचि का घर है। मल-मूत्र और अशुचि देखकर शरीर की अनित्यता सामने आती है तो लगता है कि यह शरीर पानी का बुदबुदा है। यह गुब्बारा है न जाने कब फट जाय? बिजली की चमक कितनी देर तक? काया का स्वभाव हृदयंगम हुआ, वैराग्य उभर आया, स्वर्ण के भाजन में विष्ठा- नहीं नहीं मुझे अपने पास नहीं रखनी। आस्था से वास्ता हुआ जानकारी जीवन बनी; रास्ता स्वयं का अनुशास्ता बन गया।

जानकारी और जीवन का राग ही तो विवेक को प्रकट नहीं होने देता। हिंसा, हिंसा है। 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका में जो कुछ हुआ, आपको शायद याद होगा। जरा-से झूठ के पीछे कैसे कर्म बंधते हैं? हिंसा कितनी भयानक होती है? हिंसा-झूठ-चोरी जैसे पाप अनन्तानुबंधी-मिथ्यात्व के उदय से विशेष-विशेष होते हैं। बोलचाल की भाषा में इसे गहरी खाई कह सकते हैं। जानकारी का उपयोग दूसरों को बताने के लिए है तब तक जीव अज्ञान में रहता है। सम्यक्-दर्शन में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की रुचि होगी। ज्ञान के साथ आस्था, आस्था के साथ आचरण। आचरण का निर्धारक तत्त्व है- आस्था। एगे णाणे- एगे दसंणे।

हम देखना शुरु करें। सच्चाई को देखना शुरु करने वाले को अपने शरीर से निकलने वाली पसीने की गंध कैसी लगती है? दृश्य और द्रष्टा। जब तक द्रष्टा दृश्य नहीं बन जाय, ज्ञानात्मा प्रकट नहीं हो सकती।

पृथ्वी का सबसे बड़ा रत्न है- सम्यक् दर्शन। दर्शन के अभाव में ज्ञान, ज्ञान नहीं और दर्शन के अभाव में चारित्र, चारित्र नहीं। सम्यक्-दर्शन है तो ज्ञान है और चारित्र भी है। सम्यक् दर्शन के बिना ज्ञान जीरो है। सम्यक्-दर्शन के बिना चारित्र भी जीरो है। सम्यक्-

दर्शन नहीं तो ज्ञान और चारित्र डबल जीरो है। 'एक' के बिना जीरो का कोई महत्त्व नहीं। उत्कृष्ट चारित्र आराधना में उत्कृष्ट दर्शन की अनिवार्यता है। क्षायिक समकिती तुरन्त ही उत्थान कर उत्कृष्ट कर्म-निर्जरा करता है।

दोनों मृगापुत्र- एक ने मिली हुई सत्ता का दुरुपयोग किया; योग-आत्मा को कषाय-आत्मा के अधीन कर दिया; जानकारी एवं जीवन में खाई बना दी। उस भव में सोलह महारोग, नरक में भीषण यातना, पर अभी कहाँ पीछा छूटा? अभी तो दुःख की लम्बी परम्परा है।

दूसरा मृगापुत्र- पूर्व में साधना-आराधना इस भव में विपुल सामग्री, इष्ट-प्रिय-कान्त रूप सौन्दर्य, पर साधुता की स्मृति, ज्ञान-आत्मा का सदुपयोग, योग पर उपयोग की लगाम, चारित्र-आत्मा से सही करते हुए नहीं करने तक पहुँचना।

कषाय-आत्मा कमजोर होती है तो अनन्तानुबन्धी चतुष्क की जकड़ से मुक्त होती है। शेष बारह कषायों की स्थिति, अनुभाग में भी विशेष-विशेष कमी होती है। तब ज्ञान-आत्मा प्रकट होती है। आठ कषायों के उदय से छुटकारा मिलने पर चारित्रात्मा प्रकट होती है। जानकारी जीवन में समता होने पर, ज्ञान आचरण की एकरूपता होने पर कषाय-आत्मा से छुटकारा मिलता है। अब चारित्र यथाख्यात होता है। उत्कृष्ट पुण्य के साथ प्रवृत्ति का अन्त, योग-आत्मा गई। उपयोग, शुद्ध उपयोग; चारित्र वीर्य का कार्य पूर्ण हुआ और आठ आत्मा के दुःखों का अन्त। मेरे प्रभु.... प्रभु का मैं।

करें कषाय-निग्रह

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

संसार के प्राणियों में कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) सर्वत्र पाया जाता है जो आत्म-गुणों का घातक है। क्रोध प्रीति को शुष्क करता है तो मान आत्मा के विनय गुण का घात करता है। माया आत्मा के मैत्रीगुण को आवृत्त करती है और लोभ समस्त सद्गुणों को विकृत कर देता है। क्रोधी व्यक्ति अंधा होता है, अभिमानी किसी की कुछ सुनता नहीं, मायावी व्यक्ति की जुबान का कोई भरोसा नहीं और लोभी की नाक (इज्जत) ही नहीं होती।

कषाय से 'कसाई' बना व्यक्ति हिंसा, क्रूरता, रक्तपात का सदा पोषण करता है। कषाय आत्मा का स्वभाव नहीं अपितु विभाव है। कषाय दाहक और संहारक होते हुए भी मोहक लगते हैं। विषयों के प्रति राग रहने से कषाय उद्दीप्त होते हैं, कषाय के उद्दीप्त होने से परिणाम क्षुब्ध हो जाते हैं। परिणाम क्षुब्ध होने से भविष्य बिगड़ जाता है। अतः प्राप्त संयोग और साधनों का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना होगा अन्यथा कषाय के संस्कार पुष्ट हो गए तो दुःख की परम्परा बढ़ जायेगी।

दुःख का मूल कषाय है। कषाय के बीज का उन्मूलन होने पर दुःख स्वयं उन्मूलित हो जाते हैं। इसलिए क्रोध से प्रारम्भ कर मोह तक के उन्मूलन के लिए निरन्तर सम्यक् प्रयत्न करते रहना होगा। कषाय के कृश होने पर समता का प्रादुर्भाव हो जाता है। कषाय पर विजय पाने हेतु क्रोध को उपशम भाव से, मान को मृदुता से, माया को सरलता से, लोभ को संतोष से जीतना होगा तभी अज्ञान दूर होकर गुण प्रकट हो सकेगा।

प्रियता, सरलता, मित्रता एवं उदारता को नष्ट करने वाले इन कषायों का जागृतिपूर्वक निग्रह करने का सम्यक् पुरुषार्थ कर जीवन में नम्रता की पावन सरिता बहाएँ, वैराग्य का नन्दनवन महकाएँ, मन के उपवन में हर पल प्रसन्नता के सुवासित पुष्प खिलाकर सौरभ फैलाएँ।

*-'हुकम', 5-ए/1, सुभाषनगर,
पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)*

क्रोध कषाय : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण (2)

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शिष्य रत्न श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा 1-2 अक्टूबर 2016 को निमाज में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रदत्त प्रवचन के आधार पर लिखित आलेख एवं चर्चा के आधार पर तैयार प्रश्नोत्तर। आलेख पूर्व में प्रकाशित हो चुका है, प्रश्नोत्तर यहाँ दिए जा रहे हैं।-सम्पादक

क्रोध के सम्बन्ध में लोग कुछ प्रश्न पूछते हैं, उनका सामान्य रूप से समाधान देखते हैं।

प्रश्न 1: बच्चों पर, नौकरों पर गुस्सा करना पड़ता है। क्या करें?

उत्तर: माता-पिता क्रोध करके अपनी सन्तान को समझाना-सुधारना चाहते हैं, पर उनका यह सोचना उचित नहीं है। बच्चों को प्रारम्भ से ही इस तरह ढालना चाहिए कि वे आँख के इशारे से ही समझ जाएं अथवा प्रेम से मधुर भाषा में उन्हें समझावें। उन्हें आप जिस गलत कार्य से रोकना चाहते हैं, उससे होने वाले अहित बतावें। आज भी ऐसे माता-पिता हैं जो कहते हैं हमारे बच्चों को गुस्सा आता ही नहीं है। क्योंकि हम कभी उनके सामने क्रोध से पेश ही नहीं आये। सदैव इन्हें आत्मीयता से ही समझाते हैं। क्रोध की अपेक्षा प्रेम अधिक असरकारक होता है, साथ ही दीर्घ स्थायी भी होता है। ऐसे सुन्दर व्यवहार से बच्चे भी सदैव प्रसन्न रहते हैं। महात्मा गाँधी भी बच्चों को प्रेम से समझाने के ही पक्षधर थे। साथ ही माता-पिता का कर्त्तव्य बनता है कि दम्पती भी सन्तानों के सामने झगड़ा न करें। क्रोध का वातावरण न मिलने से उनमें सहज ही शान्तता, सौम्यता, प्रसन्नता बनी रहेगी। संतान को भी आपस में प्रेम से रहने के ही संस्कार प्रदान करें। अधिकारी का, मालिक का अपने अधीनस्थ कर्मचारी पर सौहार्दपूर्ण, अपने आत्मीय परिजन के समान ही व्यवहार होना चाहिए। आगमकाल में अपने यहाँ कार्यरत कर्मचारी को कौटुम्बिक पुरुष के रूप में माना जाता था, पुकारा जाता था। लोग तर्क करते हैं उन पर गुस्सा नहीं करेंगे, रौब नहीं जमायेंगे तो वे सिर पर चढ़ जायेंगे, कार्य बराबर नहीं करेंगे, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। आप उनके साथ प्रेम से व्यवहार करेंगे, उनकी जरूरतों का ध्यान रखेंगे तो वे दौड़कर कार्य करेंगे, अच्छा कार्य करेंगे। प्रेम प्राणिमात्र को प्रिय है। प्रेम की शक्ति अद्‌भुत है, आप एक बार विश्वासपूर्वक आजमाकर देखिये। कठोर शब्दों का उपयोग करना पड़े तो ऐसा करते समय भावना द्वेष पूर्ण न हो, सुधार के लिए संतुलित रूप में कहने का अभ्यास करें।

प्रश्न 2: कहाँ तक सहन करें, सहन करने की भी कोई सीमा होती है? गुस्सा आ जाता है।

उत्तर: भगवान फरमाते है जहाँ तक मोक्ष नहीं हो जावे, वहाँ तक समता से सहन करना है। किसी जिज्ञासु ने गुरु से प्रश्न किया- कहाँ तक सहन करें। गुरु ने कहा- जब तक चलनी द्वारा कुएँ से पानी नहीं निकल जाए तब तक सहन करो। जिज्ञासु ने पूछा यह कैसे सम्भव है? गुरु ने कहा- धैर्य रखो, शरद ऋतु में चलनी में रहा हुआ वह पानी बर्फ बन जाएगा, तब अपने आप निकल जायेगा।

प्रश्न 3: अपकारी को उपकारी कैसे मान लें?

उत्तर: बाहर में अपकारी कोई होता ही नहीं हैं। अपकारी तो स्वोपार्जित अशुभ कर्म हैं। विपरीत व्यवहार करने वाला तो अपकारी नहीं, उपकारी है। वह हमें कर्म कर्ज से मुक्त करने में मदद कर रहा है। उसे शत्रु नहीं, मित्र मानने पर समाधि टिक सकती है। संत तुकाराम की पत्नी उनके प्रति विपरीत व्यवहार करती थी तो भी वे उसे उपकारी ही मानते थे। सिर पर गन्ने के प्रहार से उसके दो टुकड़े हो गए। मुस्कुराते हुए कहने लगे, अच्छा है- अलग से तोड़ने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। लो एक आपका और एक मेरा। महात्मा सुकरात की पत्नी भी उनसे विपरीत ही चलती थी, तो भी सदैव प्रसन्न रहते थे। एक बार तो उसने भला-बुरा सुनाकर कचरे की बाल्टी सिर पर उंड़ेल दी। वे हँसते हुए कहने लगे- बादल पहले गरजते हैं, पीछे बरसते हैं। वातावरण सहज शांत हो गया।

प्रश्न 4: सहनशीलता कैसे बढ़ायें?

उत्तर: अभ्यास से, सकारात्मक सोच से सब संभव है। भयंकर क्रोधी स्वभाव वाले भी अभ्यास से सम्यक् विचारधारा से सहनशील बन जाते हैं। मानव तो क्या तिर्यंच विषधर चंडकौशिक भी क्षमाधर बन गया। सहनशीलता से होने वाले तात्कालिक समाधि रूप फल को तथा परम्परा से होने वाले सिद्धि तप फल को सामने रखें। इससे सहनशील बनने में बल मिलता है। प्रतिकूल करने वाले को उपकारी मानने से भी सहनशीलता बढ़ती है।

एक सेठ के घर रामू नाम का नौकर था। वह बड़े ही तेज स्वभाव का था। उसके व्यवहार को देखकर तो उसे नौकर क्या, कोई सेठ ही कह सकता है। एक बार उस सेठ के घर मेहमान आया। सेठ ने कहा- ''रामू! जरा दो गिलास पानी लाना।'' नौकर बोला- ''दो का क्या करोगे? आपने तो अभी पानी पीया है।'' सेठ बोला- ''गर्मी है, प्यास लग जाती है।'' ठीक है, यह कहकर वह दो गिलास पानी लाया। थोड़ी देर बाद सेठ ने कहा- ''रामू! जरा दो कप चाय लाना'' रामू कहता है- ''दो क्या करोगे, आपने तो अभी चाय पी है।'' सेठ कहता है- ''अरे भाई, मेहमान का साथ देना पड़ता है।'' अच्छा ठीक है, यह कहकर दो कप चाय लाया। थोड़ी देर बाद सेठ ने कहा- ''रामू! इस बैठक की चद्दर में सल पड़ गये, इसे ठीक कर दे।'' रामू कहता है- ''आपमें बैठने का तरीका भी नहीं है, बार-बार चद्दर अव्यवस्थित कर देते हो'', यह कहकर उसने चादर को ठीक किया। सेठ फिर से कहते हैं- ''देख रामू! कमरे में कचरा बहुत हो गया है जरा सफाई कर दे।'' रामू कहता है- ''क्या सारे दिन यही कार्य है, अभी थोड़ी देर पहले तो सफाई की, बार-बार कचरा फैला देते हो, यह कहकर सफाई की। आगन्तुक मेहमान कहने लगे, यह नौकर है या आपका मालिक? सेठ बोले- यह मेरा मुद्गर है, मैंने इसे मेरी पसन्द से पैसे देकर रखा है। यह बहुत उपयोगी है। यह मेरी सहनशीलता की शक्ति को बढ़ाता है। जैसे मुद्गर से व्यायाम करके व्यक्ति शरीर की शक्ति को अभिवर्द्धित करता है, वैसे ही इसके व्यवहार से मैं सहनशीलता को बढ़ाता हूँ। अपकारी में भी ऐसी उपकारी की बुद्धि होने पर अवश्य सहनशीलता बढ़ती है।

प्रश्न 5: कोई झूठ बोलता है तो मुझे सहन नहीं होता, गुस्सा आ जाता है, क्या करें?

उत्तर: झूठ बोलना किसी के स्वभाव में हो सकता है, पर मेरे स्वभाव में तो क्षमाभाव ही होना चाहिए। झूठ बोलने की गलती वह करे और हम क्रोध करके दुःखी होने की गलती, यह तो

समझदारी नहीं, नासमझी है। दुनिया में झूठ बोलने वालों की कमी नहीं है। क्या उनके झूठे व्यवहार से आप हमेशा क्रोध ही करते रहेंगे? ऐसे तो आप कभी शान्त रह ही नहीं पायेंगे। हमें दूसरों के व्यवहार के आधार पर नहीं अपनी सम्यक् समझ के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करना है। संगमदेव ने भगवान महावीर को चोर साबित करने की कोशिश की, पर भगवान ने उस पर क्रोध नहीं किया, क्षमाभाव ही रखा, यह है सही समझ।

प्रश्न 6: कोई कहा नहीं माने तो गुस्सा आ जाता है, क्या करें?

उत्तर: अपने आपसे पूछना चाहिए, क्या मैं तो सबका कहा मानता ही हूँ। जब हम स्वयं ही दूसरों का पूरा कहा नहीं मानते हैं तो अन्य से ऐसी अपेक्षा रखना भी उचित नहीं है। कहना नहीं मानने में, कहना नहीं मानने वाले का दोष नहीं है, अपितु स्वयं की अपात्रता का दोष है। कभी-कभी अहंकार में आकर व्यक्ति अनर्थ कर बैठता है, जिसका हर्जाना स्वयं को भी भुगतना पड़ता है। भगवान महावीर के जीव ने त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में शय्यापालक के कानों में गर्म-गर्म शीशा उंडेलकर उसे यातना दी, जिसका परिणाम भगवान महावीर के भव में कानों में कीले ठुकवाकर देना पड़ा। अतः ऐसे अहंकारी भावों के फरेब में न आवें। सावधान हो जाएँ, क्रोध न करें।

प्रश्न 7: कई लोग कहते हैं क्रोध थोड़ी देर ही आता है, पर उसमें भी पारा चढ़ जाता है, क्या करें?

उत्तर: आग की चिंगारी भले ही छोटी ही हो पर वह भी विश्वसनीय नहीं है। जरा-सी चिंगारी भी दावानल का रूप धारण कर लेती है। कहा है- ''अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं कसायथोवं च। न हु मे विससियव्वं, थोवं पि हु तं बहु होई। अर्थात् ऋण, व्रण (घाव) अग्नि और कषाय (क्रोध), ये थोड़े होते हुए भी इनको अधिक होने में देर नहीं लगती। उन शान्त स्वभावी मुनिराज को चण्डकौशिक के भव में क्रोध थोड़ी देर का ही आया था। परन्तु वह थोड़ी ही देर का क्रोध भी उन्हें दुर्गतिदायक साबित हुआ। ऐसा विचार कर अपने आप को शान्त बनाएं।

प्रश्न 8: हमारी गलती नहीं, फिर हम क्यों सुनें?

उत्तर: हमारी गलती नहीं होने पर भी अगर हमें कोई कटुक सुनाता है तो इसमें हमारा अशुभ कर्म का उदय है। सुनाने वाला तो मात्र निमित्त है। उस सुनाने वाले पर क्रोध करके तो और अशुभ कर्म का बंधन करना है, जो आंगे और क्रोधोदय का कारण बनेगा। वर्तमान में उसे समता से सहने में ही कर्म-निर्जरा है, समझदारी है। कर्म परम्परा को समाप्त करने का उपाय है। सती अंजना (पवनसुत हनुमान की माता) को उसकी सास ने खूब सुनाया, दुर्व्यवहार किया, अंजना के सौ भाइयों ने भी उसे घर पर ठहरने से स्थान देने से इंकार कर दिया, भला-बुरा कहा। पर उसने उनको दोषी नहीं मानकर स्वयं के कर्मों को दोष दिया। जिससे उसकी समाधि स्थिर रही, कर्म निर्जरा हुई। सीताजी के साथ भी विपरीत व्यवहार होने पर उन्होंने श्री राम को दोष न देकर अपने कर्मों को ही दोष दिया। मूला सेठानी ने चंदनबाला के साथ दुर्व्यवहार करने में, जली-कटी सुनाने में कसर नहीं रखी, पर उसने सब अपने ही कर्मों का दोष मानकर समाधिभाव को सुरक्षित रखा।

प्रश्न 9: किसी के द्वारा कुछ नुकसान होने पर गुस्सा आ जाता है, कैसे रोकें ?

उत्तर: जो नुकसान दूसरे से हुआ है, वह मेरे से हो जाता तो, ऐसा विचार करने पर दूसरे पर

गुस्सा नहीं आयेगा। कोई भी व्यक्ति जानबूझ कर नुकसान नहीं करता। भूल होना स्वाभाविक है। मान लीजिये- कार्य करते हुए किसी के हाथ से कप-प्लेट फूट गए। तब यही विचारना चाहिए कि यह मेरे हाथ से फूटते तो किस पर गुस्सा करता। अब कलह करके क्यों इस शान्त वातावरण को दूषित करूँ। कटुक कहकर क्यों सामने वाले का दिल दुखाऊँ, क्यों कर्म बन्धन करूँ। गई हुई वस्तु पुनः आने वाली नहीं है। क्षमाभाव रखने में ही समझदारी है। वस्तु से ज्यादा व्यक्ति को महत्त्व देना चाहिए। एक नयी बहू के हाथ से गर्म-गर्म घी की तपेली (भगोनी) छूट गई। काफी मात्रा में घी गिर गया। सास दौड़ी-दौड़ी आयी और बहूरानी से बोली- "बेटी! कहीं जली तो नहीं है। घी की चिन्ता मत करना यह फिर आ जायेगा।" इतना सुनते ही बहू के हर्षाश्रु टपक गये। वह कहने लगी- "ऐसा तो मेरी सगी माँ भी नहीं करती। वह भी एक बार तो डाँट देती, पर आप तो उनसे बढ़कर प्रेमदाता मिली।"

प्रश्न 10: क्रोध में जबाब तो नहीं देते, पर मन से क्रोध को कैसे जीतें?

उत्तर: क्रोध के क्षणों में आपस में सवाल-जवाब नहीं करना चाहिए, यह तो ठीक है। परन्तु क्रोध में अबोल होकर भी नहीं बैठना चाहिए। ऐसा व्यक्ति बाहर तो क्रोध जाहिर नहीं करता, पर अन्दर ही अन्दर कूढ़ता रहता है, जलता रहता है। यह क्रोध की खतरनाक स्थिति है। इसमें भयंकर शारीरिक, मानसिक व आत्मिक हानि है। कई बार व्यक्ति छोटा होता है, सामने वाला बड़ा होता है। ऐसी स्थिति में वह जवाब नहीं दे पाता, पर मन ही मन दुःखी होता रहता है। उसे ज्ञानबल से मन को समझाना चाहिए। क्षमाभाव को पुष्ट करना चाहिए। प्रीति को प्रधानता देनी चाहिए। अपने आप पर दया करनी चाहिए। आपस में बातचीत करके हुई कटुक बात का निराकरण करना चाहिए। ताकि प्रद्वेष लम्बे समय तक न चले।

कुमार को राजा उदायन की ओर से राज्य नहीं मिला, इस कारण उसने पिताजी पर द्वेष रखा जो उसके विराधक होने का कारण बना।

प्रश्न 11: क्रोधी व्यक्ति को समझाने पर भी वह समझता नहीं है, क्या करें?

उत्तर: दूसरे के समझाने से नहीं अपितु स्वयं को क्रोध की अनर्थता समझ में आने पर ही क्रोध छूटता है। एक बात का विशेष ध्यान रखें, क्रोध के क्षणों में व्यक्ति को नहीं समझावें। जब व्यक्ति शांत हो जाए तब उसे उसकी गलती का अहसास कराएँ ताकि वह आगे के लिए क्रोध से बच सके। कहते हैं-

चढ़ते पानी पेशवो, तामस में अरदास।
चढ़ते ताव औषध दे, तीनों बात विनाश।।

अर्थात् नदी-नाले में जब बरसात का पानी भरपूर आ रहा हो, उस समय उसमें प्रवेश करना यह विनाश का ही कारण बनता है, क्योंकि जल की गहराई का पता नहीं होता। चढ़ते बुखार में कोई भी अनुभवी वैद्य (डॉक्टर) दवा नहीं देता। पहले वह जल आदि के प्रयोग से उसे कम करता है-फिर औषध देता है। देवे तो दवा बेकार हो जाती है। इसी तरह तामस (क्रोध) में समझाना भी निरर्थक है। उस समय समझाने पर व्यक्ति और अधिक उत्तेजित हो जाता है। कभी-कभी तो वह गुस्से में समझाने वाले को भी भला-बुरा सुना देता है, पिटाई तक कर देता है। इसीलिए अनुभवियों से उस समय उसे समझाने का निषेध किया गया है। उसके शान्त न होने पर ही उसे समझावें। वह क्रोध नहीं करने का संकल्प करेगा तो अवश्य क्रोध को जीत पायेगा।

मित्र जीवाणु के कार्य (2)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. मित्र जीवाणुओं से हमें यह फायदा है कि ये रोगाणुओं को दबा कर रखते हैं। जैसे कि करोड़ों सूक्ष्म सैनिक हमारे शरीर की पहरेदारी करते हैं। ये ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि रोगाणुओं से इनका भोजन के लिए मुकाबला होता है। अगर इनका खाना रोगाणु चट कर जाएँ तो इन्हें क्या मिले? अगर रोगाणु हमें बीमार कर दें तो इनका घर, यानी हमारा शरीर बिगड़ता है। हमारे स्वास्थ्य में ही इनका स्वास्थ्य होता है। हमारा जीवित रहना प्रमाण है कि मित्र जीवाणुओं से हमारा सहयोग रोगाणुओं की हिंसा पर भारी पड़ता है।
2. रोगाणुओं ने एंटीबायोटिक दवाओं को सहना सीख लिया है। लेकिन मित्र जीवाणु इन दवाओं से मारे जाते हैं। कुछ लोगों में एंटीबायोटिक लेने के बाद इस रोगाणु का प्रकोप बढ़ जाता है।
3. रोग तभी होता है जब रक्षक कमजोर पड़ जाएँ। एंटीबायोटिक दवाएँ उन्हें कमजोर करती हैं, जो आजकल हमारे यहाँ बहुत जल्दी और बार-बार ले ली जाती हैं, जबकि इनका उपयोग सावधानी से होना चाहिए।
4. प्रकृति ने हमें सहज ही रोगों से लड़ने की जो शक्ति दी है वो कभी कमजोर भी पड़ती है, चाहे वह रोगाणुओं की वजह से हो या कुपोषण से या किसी और कारण से। इस रोगप्रतिरोधक तंत्र को ताकत मिलती है मित्र जीवाणुओं से।
5. जैसे मित्र जीवाणुओं पर शोध कम हुआ है, ठीक वैसे ही माँ के दूध का मोल भी ठीक से नहीं आँका गया है। शायद इसलिए कि माँ के दूध का व्यापार नहीं हो सकता, उसमें मुनाफे की गुंजाइश नहीं होती।
6. शिशु आहार बनाने वाली कंपनियों ने माँ के दूध पर मामूली शोध किया है, जो माँ के दूध का पर्याय बन चुके पैकेटबंद 'फॉर्मूला' पाउडर बेचती हैं, जिसका अंतरराष्ट्रीय व्यापार कुछ अरब डॉलर का है। लेकिन पिछले कुछ सालों में जीवाणुओं पर हुए शोध के बाद माँ के दूध को नए सिरे से समझा जाने लगा है।
7. सबको मालूम है कि माँ के दूध पर पले बच्चों की रोगप्रतिरोध क्षमता ज्यादा होती है। आजकल कुछ वैज्ञानिक कहने लगे है कि माँ के दूध की एक और बड़ी भूमिका है, और वह है शिशु की रक्षा। यह जीवाणुओं की मदद से होता है।
8. माँ के शरीर में रक्षक बैक्टीरिया को पोसने की व्यवस्थाएँ भी हैं। माँ के दूध में एक खास किस्म की शर्करा होती है। इससे शिशु की रोगप्रतिरोध को सहारा मिलता है। माँ का दूध मिलते ही शिशु के पेट में 'बिफिडोबैक्टीरिया' नामक श्रेणी के जीवाणु आ बसते हैं और फिर इनकी मौजूदगी में रोगाणु आसानी से पैर नहीं जमा पाते।
9. माँ के दूध में ऐसे रस भी होते हैं, जो खतरनाक रोगाणुओं को मल के रास्ते बाहर निकाल देते हैं।
10. कुछ वैज्ञानिक ऐसी दवा खोज रहे हैं जो माँ के दूध जैसा ही व्यवहार रोगियों के पेट में करे। दवा बने, बिके, उससे बीमारियों की चिकित्सा हो, दवा बनाने वालों का लाभ हो, यह सब अपनी जगह है। परंतु यह हमारे युग की त्रासदी है कि वैज्ञानिक शोध में उपचार से मुनाफा कमाने का आग्रह बढ़ता ही जा रहा है।
11. प्रकृति का नियम है कि जो जीवन मिट्टी से पेड़-पौधों के रूप में उगता है वह प्राणियों के पेट से होता हुआ वापस मिट्टी में ही जाए, मल-मूत्र के रूप में।

(सोपान जोशी कृत 'जल,थल,मल' पुस्तक से साभार)

-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

आचार्य गुणधर कृत 'कषायपाहुड' : एक मनोवैज्ञानिक कृति

(क्रोध कषाय के विशेष संदर्भ में)

प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन

प्राकृत-वाङ्मय का अध्ययन-अनुसंधान बढ़ने के साथ एक यह तथ्य बड़ी गहराई से उभरकर हम सबके सामने आ रहा है कि प्राकृत-वाङ्मय ज्ञान-विज्ञान का अद्‌भुत अक्षय स्रोत है। उसमें केवल धर्म-दर्शन-अध्यात्म ही नहीं है अथवा मात्र लोक जीवन का काव्यात्मक चित्रण ही उसका उद्देश्य नहीं हैं, अपितु उसमें ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं के बीज भी स्पष्टत: दृष्टिगोचर होते हैं जो परवर्ती साहित्य में विस्तारपूर्वक पल्लवित और पुष्पित हुए हैं। यथा-उसमें भौतिक विज्ञान भी है, तो रसायन विज्ञान भी, समाज विज्ञान भी है तो राजनीति विज्ञान भी, अर्थशास्त्र है तो संगीतशास्त्र भी, जीव विज्ञान है तो मनोविज्ञान भी, आयुर्वेद है तो ज्योतिष भी, वास्तु है तो निमित्त भी, भूगोल है तो खगोल भी, इत्यादि। इस प्रकार इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता कि भारतीय वाङ्मय के विकास में प्राकृत-वाङ्मय का असाधारण योगदान है।

'कषायपाहुड' वस्तुत: एक ऐसा ही दार्शनिक ग्रंथ हैं जिसमें मनोविज्ञान की प्रचुर सामग्री पाई जाती है। न केवल सामग्री पाई जाती है, अपितु यह भी कहा जा सकता है कि 'कषायपाहुड' मनोविज्ञान का ऐसा अद्‌भुत सन्दर्भ-ग्रंथ है कि आज का बड़े से बड़ा मनोवैज्ञानिक भी उससे प्रभावित हो जाए। मनोविकारों का ऐसा परत-दर-परत विश्लेषण अन्यत्र दुर्लभ है।

इतना ही नहीं, इसमें एक और विशिष्ट बात यह है कि आधुनिक मनोविज्ञान में तो मात्र मानव के ही मनोविकार का अध्ययन-विश्लेषण होता है, पर 'कषायपाहुड' में तो सूक्ष्मतम जीव-जन्तुओं के भी मनोविकारों का अध्ययन-विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

'कषायपाहुड' प्राकृत भाषा में निबद्ध जैन-आगम का एक ऐसा महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसकी रचना आचार्य गुणधर ने विक्रम पूर्व प्रथम शताब्दी में की थी। मूलत: 180 गाथा-सूत्रों में आबद्ध इस आगम-ग्रंथ पर दो बड़े ही महत्त्वपूर्ण कार्य भी उपलब्ध होते हैं-एक तो आचार्य यतिवृषभ के चूर्णिसूत्र और दूसरे आचार्य वीरसेन-जिनसेन की 60,000 श्लोक प्रमाण 'जयधवला' टीका। 'कषायपाहुड' मूलग्रन्थ वीर शासन संघ, कलकत्ता से सन् 1955 में पं. हीरालाल जैन, शास्त्री न्यायतीर्थ के हिन्दी-अनुवाद के साथ प्रकाशित हुआ है और इसकी 'जयधवला' टीका अनेक बार जैन संघ चौरासी, मथुरा से 16 भागों में प्रकाशित हुई है।

जैसा कि इस ग्रन्थ के 'कषायपाहुड' नाम से ही ज्ञात होता है कि इस ग्रन्थ में कषायों का विवेचन किया गया है। क्रोध, मान, माया, लोभ-ये चार कषाय हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ इन्हीं चार कषायों के सूक्ष्म विवेचन हेतु समर्पित है। क्रोधादि विकारी मनोभावों का ऐसा विस्तृत और सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत करने वाला दूसरा कोई ग्रन्थ समूचे भारतीय वाङ्मय में मिलना असंभव है। मनोवैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों को इसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए। इससे उन्हें अद्‌भुत लाभ होने की संभावना है।

'कषायपाहुड' वस्तुत: एक मनोवैज्ञानिक ग्रन्थ ही है। उसे दार्शनिक, धार्मिक या साहित्यिक ग्रन्थ कहने की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक कृति कहना अधिक उपयुक्त है, क्योंकि उसी से उसका प्रतिपाद्य विषय स्पष्टतया मुखर होता है। यद्यपि इस 'कषायपाहुड' में उपर्युक्त चार कषायों का अत्यन्त विस्तारपूर्वक सूक्ष्म विवेचन किया गया है, किन्तु हम यहाँ केवल क्रोध कषाय के ही सूक्ष्म

विवेचन को दिखाने का प्रयत्न करना चाहते हैं, ताकि इस कषायपाहुड का मनोवैज्ञानिक पक्ष अधिक गहराई से समझ में आ सके।

क्रोध कषाय का विवेचन करने वाले मूल गाथासूत्र 'कषायपाहुड' में इस प्रकार हैं-

1. ''णगपुढविबालुकोदयराईसरिसो चउव्विहो कोहो।।''
2. ''कोहो य कोव रोसो य अक्खम-संजलन-कलह-वड्ढी य। झंझा दोस विवादो दस कोहे य ट्ठिया होंति।।''

क्रोध चार प्रकार का होता है-पाषाण-रेखा के समान, पृथ्वी-रेखा के समान, बालु-रेखा के समान और जल-रेखा के समान। क्रोध, कोप, रोष, अक्षमा, संज्वलन, कलह, वृद्धि, झंझा, दोष और विवाद-ये दस क्रोध के एकार्थक शब्द हैं।

आश्चर्य की बात है कि यहाँ क्रोध के 10 एकार्थवाची शब्द कहे हैं, परन्तु टीका में इन्हें क्रोध के 10 रूपों के रूप में समझाते हुए इनमें पारस्परिक सूक्ष्म अन्तर भी बताया गया है। उसे यहाँ विस्तारभय से लिखना संभव नहीं है, 'जयधवला' टीका से देखा जा सकता है।

इतना ही नहीं, इस ग्रंथ में क्रोध के संख्यात, असंख्यात और अनन्त भेद भी समझाये गये हैं। क्रोध के भेदों को सुबोधगम्य बनाने के लिये भी अनेक अपेक्षाओं का आश्रय लिया गया है। यथा-

1. क्रोध दो प्रकार का भी है-द्रव्य क्रोध, भाव क्रोध।
2. क्रोध अन्य दो प्रकार का भी है-जीव क्रोध, अजीव क्रोध।
3. क्रोध अन्य दो प्रकार का भी है-व्यक्त क्रोध, अव्यक्त क्रोध।
4. क्रोध अन्य दो प्रकार का भी है- तीव्र क्रोध, मन्द क्रोध।
5. क्रोध अन्य दो प्रकार का भी है- प्रेय क्रोध, द्वेष्य क्रोध।
6. क्रोध तीन प्रकार का है-जीव-निमित्तक, अजीव-निमित्तक, उभय-निमित्तक।
7. क्रोध चार प्रकार का है-अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन।
8. दृष्टान्त-भेद से क्रोध अन्य चार प्रकार का भी है-पाषाणरेखा-सदृश, पृथिवीरेखा-सदृश, बालु-रेखा-सदृश, जलरेखा-सदृश।
9. क्रोध अन्य चार प्रकार का भी है-नाम क्रोध, स्थापना क्रोध, द्रव्य क्रोध, भाव क्रोध।
10. क्रोध लेश्या-भेद से छह प्रकार का भी है-कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल।
11. क्रोध सात प्रकार का भी है।

इसी प्रकार और भी अनेक भेद क्रोध के हो सकते हैं, जिन्हें ग्रन्थकार ने और भी अनेक भंग बना-बनाकर समझाया है। जैसे समुत्पत्तिक कषाय की अपेक्षा क्रोध के 8 भंग इस प्रकार बनाकर बताये गये हैं-

1. **एक जीव**-जिस मनुष्य के निमित्त से क्रोध उत्पन्न होता है वह समुत्पत्तिक कषाय की अपेक्षा क्रोध है।
2. **एक नोजीव**-जिस काष्ठ ईंट, पत्थर के निमित्त से क्रोध उत्पन्न होता है, वह समुत्पत्तिक कषाय की अपेक्षा क्रोध है।
3. **अनेक जीव**- शत्रु सेना के निमित्त से उत्पन्न क्रोध।
4. **अनेक नोजीव**- चित्र, मूर्तियाँ, भवन के निमित्त से उत्पन्न क्रोध।
5. **एक जीव, एक नोजीव**- तलवार सहित शत्रु को आता देखकर उसके निमित्त से उत्पन्न क्रोध।
6. **एक जीव, अनेक नोजीव**- शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित शत्रु को देखकर के इस निमित्त से उत्पन्न क्रोध।
7. **अनेक जीव, एक नोजीव**- एक रथ पर सवार/एक तोप को उठाकर आते हुए शत्रुदल को देखने से उत्पन्न क्रोध।

8. **अनेक जीव, अनेक नोजीव**– नाना शस्त्रों से युक्त सेना को देखने से उत्पन्न क्रोध। इतना ही नहीं, इन भेदों को स्पष्टत: सिद्ध करने के लिये इस ग्रन्थ में तरह-तरह से अनेक शंकाएं उठाकर समाधान भी प्रस्तुत करने के रोचक प्रयास किये गये हैं। यथा-

प्रश्न– जीव क्रोध रूप होता है-यह कहना संगत नहीं है, क्योंकि जीव द्रव्य है और क्रोध पर्याय है, द्रव्य पर्याय कैसे हो सकता है ?

उत्तर– द्रव्य अपनी पर्यायों से भिन्न नहीं पाया जाता है, अभिन्न ही रहता है, तन्मय ही रहता है।

प्रश्न– द्रव्य-कर्म क्रोध का निमित्त है, क्रोध रूप नहीं। उसे क्रोध कैसे कहा ?

उत्तर– कारण में कार्य का उपचार कर लेने से द्रव्य कर्म में क्रोध भाव की सिद्धि हो जाती है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में क्रोध के भेदों का जो विशाल संसार दिखाई देता है, वह समूचे भारतीय वाङ्मय में अन्यत्र कहीं भी हमें देखने को नहीं मिलता।

क्रोध के भेदों के अतिरिक्त 'कषायपाहुड' में यह भी विस्तारपूर्वक समझाया गया है कि किस-किस गति में किस-किस प्रकार का क्रोध होता है, किस-किस इन्द्रियधारी जीव में किस-किस प्रकार का क्रोध होता है, किस-किस गुणस्थानवर्ती जीव में किस-किस प्रकार का क्रोध होता है, किस-किस वेद में किस-किस प्रकार का क्रोध होता है, इत्यादि।

निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान की शास्त्रीय पद्धति को अपनाकर क्रोधभाव का सूक्ष्म विवेचन करने में वास्तव में ही 'कषायपाहुड' का कोई मुकाबला नहीं है।

इसी प्रकार सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व की शैली का अवलम्बन लेकर भी ग्रन्थकार ने क्रोध भाव का सूक्ष्म से सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। कर्म सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में भी क्रोध भाव को बन्ध, सत्त्व, उदय, उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण, उपशम, निधत्त, निकाचन-इन दस अवस्थाओं के माध्यम से स्पष्ट करने का गंभीर प्रयास किया है।

कहने का तात्पर्य है कि क्रोध क्या है, किसे उत्पन्न होता है, क्यों उत्पन्न होता है, कब उत्पन्न होता है, कहाँ उत्पन्न होता है, कैसे उत्पन्न होता है, किस बहिरंग निमित्त से उत्पन्न होता है, किस अन्तरंग निमित्त से उत्पन्न होता है, कैसे कम उत्पन्न होता है, कैसे ज्यादा उत्पन्न होता है, कैसे उत्पन्न होना बन्द होता है, इत्यादि संभाव्यमान सभी आयामों पर 'कषायपाहुड' में बड़ी ही सूक्ष्मता से विचार किया गया है और इसी में इस ग्रन्थ का मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक वैशिष्ट्य निहित है।

भारतीय प्राकृत-वाङ्मय की इस अद्भुत कृति को सविनय प्रणाम।

-दर्शनसंकाय प्रमुख, अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
नई दिल्ली-110016

दो मुक्तक

श्री पीरचन्द चोरडिया

दीपक के प्यार से पतंगा जल जाता है,
सूरज के आने पे चन्दा छिप जाता है।
तुम न भूलना अपने स्वरूप को बंधु,
संसार में जो आता है, निःसंदेह चला जाता है।।

आदमी अपने कर्त्तव्य को भूलने लगा है,
वैभव को पाकर यूँ ही वह फूलने लगा है।
जिन्दगी पाई थी 'भव' का करें उद्धार,
मगर अब संशय के झूले में झूलने लगा है।।

-नया बास, सुतरखाना की गली, माणक चौक, जोधपुर-342001 (राज.)

मान कषाय एवं अष्टविध मद : स्वरूप, दुष्परिणाम, कारण एवं निवारण

डॉ. पवनकुमार जैन

जब कभी हमारे मन के विरुद्ध, हमारी रुचि और इच्छा के विपरीत प्रवृत्ति होती है, हमारे स्वार्थ या स्वाभिमान के विपरीत कार्य होता है, तो मन के भीतर ही भीतर उसका विरोध होने लगता है, उस व्यवहार के प्रति मन विद्रोही बन जाता है, इस विरोध और विद्रोह की परिणति और अभिव्यक्ति ही 'कषाय' है। कषाय एक प्रकार से प्रकम्पन है, जो चैतन्योपयोग में विक्षोभ उत्पन्न करता रहता है।

मनुष्य चाहे धन-सम्पन्न हो, विद्या और बुद्धि में प्रगतिशील हो, सुख-सुविधाओं से सम्पन्न हो, धर्म आराधना भी करता हो, तप-जप-नियम-माला आदि कितना ही करता हो, शरीर सुन्दर और स्वस्थ हो, बच्चे आज्ञाकारी हों, व्यवसाय अच्छा चलता हो लेकिन यदि उसमें क्रोधादि कषाय की बहुलता है, तो कषाय इन सब गुणों और सुखों का ह्रास कर देता है। कषायी व्यक्ति के जीवन में जो भी थोड़ा बहुत सुख होता है, वह कपूर की तरह होता है, जो कुछ ही पलों में नष्ट हो जाता है। अत: मनुष्य तभी सुखी हो सकता है, जब उसका मन-मस्तिष्क संतुलित रहता हो। यह संतुलन कषाय नियंत्रण से ही संभव है। कषाय का जैनदर्शन में विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। कषाय जैनदर्शन का पारिभाषिक शब्द है। वैदिकदर्शन[1] तथा बौद्धदर्शन[2] में कषाय शब्द का प्रयोग अशुभ चित्तवृत्तियों के अर्थ में हुआ है, फिर भी इन दोनों परम्पराओं में कषाय शब्द का प्रयोग बहुत ही अल्प रूप में प्रयुक्त हुआ है। जबकि जैन परम्परा में इस शब्द का प्रयोग बहुलता से हुआ है।

कषाय का स्वरूप

कषाय शब्द के अनेक अर्थ हैं। जैसे- रंग, लेप, गोंद और भावावेश। क्रोध, मान, माया और लोभ रंग हैं- इनसे आत्मा रंजित होती है। ये लेप हैं- इनके द्वारा आत्मा कर्म-रज से लिप्त होती है। ये गोंद हैं- इनके चेप से कर्म-परमाणु आत्मा पर चिपकते हैं। ये भावावेश हैं- इनके द्वारा मन का सहज संतुलन नष्ट होता है इसलिए इन्हें 'कषाय' कहा गया है। जो आत्मा को संसारोन्मुख बनाता है वह 'कषाय' है। कषाय-रस से भीगे हुए वस्त्र पर मजीठ का रंग लगता है और टिकाऊ होता है वैसे ही क्रोधादि से भीगे हुए आत्मा पर कर्म-परमाणु चिपकते हैं और टिकते हैं, इसलिये ये 'कषाय' कहलाते हैं। कषाय शब्द को जैनाचार्यों ने अपने शब्दों में निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है।

जिनभद्रगणि के अनुसार - 1. जिससे प्राणी पीड़ित होते हैं, वह है कष अर्थात् कर्म या भव। जिनसे कर्म या भव की प्राप्ति होती है, वह कषाय है। 2. जो कष-संसार को प्राप्त कराते हैं, वे कषाय हैं। 3. जो कष-संसार के उपादान कारण हैं, वे कषाय हैं।[3]

मलयिगिरि कहते हैं कि 'कृष्' धातु विलेखन अर्थ में आती है, उससे भी 'कृष' को 'कष' आदेश हो कर 'आय' प्रत्यय लगने से कषाय शब्द बनता है। जिसका अर्थ होता है- **'कृषन्ति विलिखंति कर्मरूपं क्षेत्रं सुखदु:खशस्योत्पादनायेति कषाया:'**[4] अर्थात् जो कर्म रूपी खेत को सुख दु:ख रूपी धान्य की उपज के लिए विलेखन (कर्षण) करते हैं - जोतते हैं, वे कषाय कहलाते हैं। अकलंक ने राजवार्तिक, वीरसेनाचार्य ने धवला, आचार्य नेमीचन्द ने गोम्मटसार और आचार्य अमितगति ने योगसार में इसी प्रकार कषाय को परिभाषित किया है।[5]

2. दूसरी प्रकार से आचार्य कहते हैं कि 'कलुष' धातु को 'कष' आदेश हो कर भी कषाय शब्द बनता है – "कलुषयन्ति शुद्धस्वभावं सन्तं कर्ममलिनं कुर्वन्ति जीवमिति कषाया:"[6] जो शुद्ध स्वरूप वाली आत्मा को कलुषित करता है अर्थात् कर्म मल से मलिन करता है, उसे कषाय कहते हैं अथवा मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले जीव का क्रोधादि वैभाविक परिणाम कषाय कहलाता है।

3. 'कषाय' में दो शब्द है 'कष' और 'आय'। जिसमें 'कष' शब्द की व्युत्पत्ति है–"**कष्यन्ते, पीड्यन्ते प्राणिन: अस्मिन् इति कष: संसार: तस्य आय: लाभ: इति कषाय:।**" एवं आय शब्द की व्युत्पत्ति है – आङ् उपसर्ग पूर्वक 'अय गतौ' धातु से घञ् प्रत्यय जोड़कर आय शब्द बना है – "**आ समन्तात् अयन्ते गच्छन्ति असुमन्त: प्राणिन: इति आय:**" अर्थात् जिसमें प्राणी आते हैं, उसे आय कहते हैं। इस तरह दोनों शब्दों का मिलाकर अर्थ होता है – प्राणी जहाँ आकर अपने किये हुए कर्मों का सुख दुःख रूप फल भोगते हैं, उसे कषाय कहते हैं अथवा संसार का दूँसरा नाम कष है। उसकी प्राप्ति या वृद्धि जिससे हो, वह कषाय है।

आचार्य शुभचन्द्रदेव के शब्दों में– जो जीव के समीचीन गुणों को कसती है, बांध देती है, उसे कषाय कहते हैं। मोक्षसुख की प्राप्ति के लिए बुद्धिमान जीवों को कषायों का त्याग कर देना चाहिये।[7]

पूज्य श्री उमेशमुनि म. सा. के अनुसार जिस (भाव) से जीव लोक, भव, कामगुण और दुःख में संसरण करता है, संसार भाव का लाभ प्रदान करने के कारण उस भाव को कषाय कहते हैं।[8]

कषाय का मूल कारण

स्थानांग सूत्र[9] में स्पष्ट उल्लेख है कि पाप कर्म की उत्पत्ति राग और द्वेष से होती है। राग से लोभ और माया का जन्म होता है तथा द्वेष से क्रोध तथा मान की उत्पत्ति होती है। लोभ-माया में अपनी स्वार्थ साधना का लक्ष्य और क्रोध तथा मान में दूसरे की अहित भावना होती है। इस प्रकार कषायों की उत्पत्ति के मूल में राग-द्वेष की वृत्ति ही कार्य करती है। डॉ. सागरमल जैन के अनुसार चारों कषायें वासना के राग-द्वेषात्मक पक्षों की आवेगात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं। वासना का तत्त्व अपनी तीव्रता की विधेयात्मक अवस्था में राग और निषेधात्मक अवस्था में द्वेष हो जाता है। ये ही राग-द्वेष के भाव बाह्य आवेगात्मक अभिव्यक्ति में कषाय कहे जाते हैं।[10] यही मत पं. कन्हैयालाल लोढा का भी है। उनके अनुसार अनन्तानुबंधी आदि कषाय योगों की शुभता-अशुभता पर निर्भर नहीं है। मन, वचन, काया की प्रवृत्ति से संबंधित नहीं है। इनका सम्बन्ध राग-द्वेष रूप भावों की प्रधानता से है, विषय भोगों से है।[11]

कषाय के भेद

श्यामाचार्य ने प्रज्ञापना सूत्र में कषाय के चार प्रकार बताये हैं – 1. क्रोध कषाय, 2. मान कषाय 3. माया कषाय और 4. लोभ कषाय।[12] इन्हीं चार प्रकारों का उल्लेख स्थानांग, समवायांग, षट्खण्डागम, राजवार्तिक और द्रव्यसंग्रह की वृत्ति आदि आगम-ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है।[13]

'क्रुध्' धातु क्रोध करने अर्थ में आती है। 'माङ्' धातु से मान और माया ये दोनों शब्द बने हैं तथा 'लुभ्' धातु गृद्धि भाव अर्थ में आती है उससे लोभ शब्द बनता है।

प्रस्तुत शोधालेख के विषयानुसार क्रोधादि चारों कषायों में से मान के स्वरूप आदि पर चर्चा की जाएगी।

मान– जीव एकेन्द्रिय अवस्था से विकसित होते हुए ही पंचेन्द्रिय बनकर मन प्राप्त करता है। मन के माध्यम से वह इस सृष्टि को जानने और समझने के योग्य बनता है। अत: जीवन के विकास की उच्चतम प्रक्रियाओं का आधार मन ही है। मन द्वारा मनन किये जाने के कारण ही इंसान को मानव कहा जाता है। मानव मन का दुरुपयोग करके अपने मनन से स्वयं को ही

सर्वश्रेष्ठ और अन्य प्राणियों को तुच्छ मानता है। तुच्छता और सर्वश्रेष्ठता का यह अन्तर ही मान है। अत: मान का अर्थ है सफलता की प्राप्ति पर मन में उभरता हुआ ज्वर, मैं-मैं का आग्रह, दूसरे के गुणों का तिस्कार करना, अपने आपको सर्वेसर्वा मानने की अज्ञानता एवं सच्चाई से मुँह मोड़ने की प्रवृत्ति।

मान मोहनीय कर्म के उदय से जाति, कुल, रूप, बल, श्रुत, तप, लाभ और ऐश्वर्य- इन आठ गुणों में अहंकार रूप आत्मा के परिणाम को मान कहते हैं। अकलंक के राजवार्तिक में भी ऐसे ही भाव वर्णित हैं।[14] मान वश जीव में छोटे बड़े के प्रति उचित नम्र भाव नहीं रहता है। मानी जीव अपने को बड़ा समझता है और दूसरों को तुच्छ समझता हुआ उनकी अवहेलना करता है।[15] गर्व वश वह दूसरे के गुणों को सहन नहीं कर सकता। धवला में भी ऐसा ही उल्लेख है।[16]

पं. कन्हैयालाल लोढा के अनुसार अपने से भिन्न पदार्थों से तादात्म्य स्थापित कर अपने को तद्रूप मानने का आचरण मान कषाय है।[17]

मान के विभिन्न नाम

भगवती सूत्र[18] में मान के दर्प, मद आदि बारह समानार्थक नाम बताये गये हैं।

1 **मान**- मान के परिणाम उत्पन्न करने वाले कषाय को मान कहते हैं।

2 **मद**- जाति आदि का मद करना या हर्ष करना।

3 **दर्प**- घमंड से चूर बनना।

4 **स्तम्भ**- कोमल, अनुकूल और नम्र न होना, स्तम्भ जैसे कठोर रहना।

5 **गर्व**- अहंकार, अभिमान।

6 **अत्युत्क्रोश**- स्वयं को दूसरों से उत्कृष्ट, बड़ा और महान बताना। ऊंचा मानना, अन्य को स्वयं से हल्का, तुच्छ और छोटा मानना।

7 **पर परिवाद**- दूसरों की निंदा करना एवं सर्वश्रेष्ठता की डींगें हांकना।

8 **उत्कर्ष**- अभिमान से स्वयं की संपत्ति, सिद्धि और पदवी प्रगट करना अथवा क्रिया से स्वयं को उत्कृष्ट मानना।

9 **अपकर्ष**- दूसरों को स्वयं से तुच्छ गिनना।

10 **उन्नत**- अभिमान में नीति-न्याय का त्याग करना।

11 **उन्नाम**- वन्दनयोग्य पुरुष को वंदना नहीं करना या वंदन करने वाले की उपेक्षा करना।

12 **दुर्नाम**- विनयपूर्वक वंदना योग्य व्यक्ति को भी अभिमान से वंदना करना।

मान अन्य कषायों का आधार

मान एक ऐसा कषाय भाव है, जो हमारे विकास और पतन दोनों का ही आधार है। सांख्य दर्शन के अनुसार क्रोधादि चार कषायों का मूल कारण मान है। क्रोध भी तब पैदा होता है जब उसके मूल में कहीं न कहीं मान को ठेस पहुँची होती है। प्राय: माया का सेवन अपने यश के लिए ही होता है। तो इसका मूल भी मान ही है। इसी प्रकार लोभ अन्ततोगत्वा है तो मान ही, जैसे कि मैं करोड़पति बनूँ, मैं दुनियाँ पर शासन करूँ, यह मान के बीज ही तो हैं।

क्रोध और मान में अन्तर

क्रोध और मान दोनों द्वेष रूप होते हुए भी इनकी प्रकृति में भेद है। जैसे जब कोई हमें गाली देता है तो क्रोध आता है, पर जब प्रशंसा करता है, तो मान उत्पन्न होता है। इस प्रकार डॉ. हुकमचंद भारिल्ल[19] ने क्रोध और मान में निम्न प्रकार से अन्तर स्पष्ट किया है- 1. प्रतिकूलता में क्रोध और अनुकूलता में मान आता है। 2. असफलता क्रोध और सफलता मान की जननी है। 3. क्रोधी वियोग चाहता है पर मानी संयोग। 4. क्रोधी को विरोधी की सत्ता ही स्वीकृत नहीं होती है, जबकि मानी को भीड़ चाहिए नीचे बैठने वाले चाहिए, जिनसे वह कुछ ऊंचा दिखे। 5. क्रोधी क्रोध के निमित्त को हटाना चाहता है, पर मानी मान के निमित्तों को रखना चाहता है। 6. निंदा शत्रु करते हैं और प्रशंसा मित्र। अत: क्रोध के

निमित्त बनते हैं शत्रु और मान के निमित्त बनते हैं मित्र।

मान के लक्षण

पूज्य श्री उमेशमुनि म. सा. के अनुसार मान के मुख्य पांच लक्षण हैं- 1. द्वेष (दूसरे का अहित करने की वृत्ति), 2. उपहास, 3. तिरस्कार (हीलना), 4. तनना-तानना (अकड़) और 5. आत्म-अवमानना (अपना पतन नहीं देखना)।[20] जब उक्त लक्षणों में से किसी भी लक्षण में हमारी प्रवृत्ति होती है तो समझना चाहिए हमारे मान कषाय का उदय है।

मान कषाय के प्रकार

मान कषाय के चार-चार प्रकार होते हैं, वे इस प्रकार हैं - 1. अनन्तानुबन्धी मान, 2. अप्रत्याख्यान मान, 3. प्रत्याख्यानावरण मान और 4. संज्वलन मान।[21] इन भेदों का उल्लेख स्थानांग, उत्तराध्ययनसूत्र, सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक आदि आगम-ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है।[22]

स्थानांगसूत्र में कषाय के उक्त चार भेदों को उदाहरण सहित समझाया गया है, यथा- शैलस्तम्भ के समान, अस्थिस्तम्भ के समान, लकड़ी के स्तम्भ के समान, तिनिस लता के समान।[23] विशेषावश्यकभाष्य और गोम्मटसार (जीवकांड) आदि में भी इन्हीं उदाहरणों का उल्लेख प्राप्त होता है।[24]

1. अनन्तानुबन्धी- जिस कषाय के प्रभाव से जीव अनन्त काल तक संसार में परिभ्रमण करता है उस कषाय को अनन्तानुबन्धी कषाय कहते हैं। यह कषाय सम्यक्त्व का घात करता है एवं जीवन पर्यन्त बना रहता है। इस कषाय से जीव नरक गति योग्य कर्मों का बन्ध करता है।

अनन्तानुबन्धी मान- कर्म और तत्त्व की श्रद्धा को छोड़ इस प्रकार का अभिमान करे कि मैंने अपनी बुद्धि से धन-सम्पत्ति अर्जित की है। इसमें शुभ कर्म-पुण्यवानी क्या करे? यह अनंतानुबंधी मान है। जैसे पत्थर का खम्भा अनेक उपाय करने पर भी नहीं नमता। उसी प्रकार उक्त प्रकार के मानी को किसी भी उपाय से नहीं नमाया (समझाया) जा सके, प्रत्युत ऐसे मान को गुण और सुखानुभूति का स्रोत समझता है, वह अनन्तानुबन्धी मान है।

2. अप्रत्याख्यान- जिस कषाय के उदय से देश विरति रूप अल्प (थोड़ा सा भी) प्रत्याख्यान नहीं होता उसे अप्रत्याख्यान कषाय कहते हैं। इस कषाय से श्रावक धर्म की प्राप्ति नहीं होती। यह कषाय एक वर्ष तक बना रहता है और इससे तिर्यंच गति योग्य कर्मों का बन्ध होता है।

अप्रत्याख्यान मान - जिस मानी को अनेक उपायों और अति परिश्रम से नमाया (समझाया) जा सके, वह अप्रत्याख्यान मान है। जैसे हड्डी अनेक उपायों से नमती है। इसमें मान की उपादेय बुद्धि का अभाव हो जाता है और दुर्गुण रूप से प्रतीत होने लगता है। धर्म श्रद्धा में हानि पहुँचाने के स्तर तक पहुँचने पर जीव इसका परित्याग करने के लिए तत्पर हो जाता है।[25]

3. प्रत्याख्यानावरण- जिस कषाय के उदय से सर्व विरति रूप प्रत्याख्यान रुक जाता है अर्थात् साधु धर्म की प्राप्ति नहीं होती। वह प्रत्याख्यानावरण कषाय है। यह कषाय चार मास तक बना रहता है। इस के उदय से मनुष्य गति योग्य कर्मों का बन्ध होता है।

प्रत्याख्यानावरण मान- जैसे काष्ठ, तैल वगैरह की मालिश से नम जाता है उसी प्रकार जो मानी थोड़े उपायों से नमाया (समझाया) जा सके अर्थात् धर्म-प्रवृत्ति में बाधक होने पर स्वत: या उपदेश से उसके त्याग का तत्काल प्रयत्न होता है, वह प्रत्याख्यानावरण मान है।

4. संज्वलन- जो कषाय परीषह तथा उपसर्ग के आ जाने पर मुनियों को भी थोड़ा सा जलाता है अर्थात् उन पर भी थोड़ा सा असर दिखाता है, उसे संज्वलन कषाय कहते हैं। यह कषाय सर्व विरति रूप साधु धर्म में बाधा नहीं पहुँचाता। किन्तु सब से ऊँचे यथाख्यात चारित्र में बाधा पहुँचाता है। यह कषाय एक पक्ष तक

बना रहता है और इससे देवगति योग्य कर्मों का बन्ध होता है।

संज्वलन मान– दीक्षित हो कर शुद्ध संयम का पालन करते हुए भी यह अभिमान रखे कि मेरा जैसा ज्ञानी कोई नहीं है, मेरा व्याख्यान सबसे अच्छा है इत्यादि। किन्तु जैसे बेंत बिना मेहनत के सहज ही नम जाती है। वैसे ही यह मान सहज ही छूट जाता है।

गोम्मटसार में उपमान व उपमेय में सदृशता बताते हुए कहा है कि जैसे लम्बा कालादि व्यतीत हुए बिना शैल, अस्थि, काष्ठ और बेंत को नमाया जाना संभव नहीं है वैसे ही उत्कृष्टादि शक्ति युक्त मान से परिणत जीव की भी उतने उतने काल के व्यतीत हुए बिना मान को छोड़कर विनय में प्रवर्तना संभव नहीं है।

पं. कन्हैयालाल लोढा के अनुसार विषय भोग के सुख को ही जीवन मानकर निरन्तर भोग भोगते रहना तथा उन भोगों की पूर्ति के लिए प्रयास करते रहना उनका अंत न होने देने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना अनन्तानुबंधी है। विषय-भोगों में दु:ख मानते हुए भी उनका त्याग नहीं करना अप्रत्याख्यानावरण है। संयम को शान्ति, स्वाधीनता, चिन्मयता आदि के लिए आवश्यक मानकर भी संयम धारण नहीं करना प्रत्याख्यानावरण है। संज्वलन कषाय एक प्रकार से भुक्त-अभुक्त भोगों के संस्कारों की स्फुरणा है, जो व्यक्ति में आकुलता की आग जलाती है।[26]

मान कषाय के प्रतिष्ठित (स्थान)

श्यामाचार्य के अनुसार मान कषाय के प्रतिष्ठित (आश्रित) के चार स्थान हैं[27] यथा -

1. आत्म प्रतिष्ठित (स्वयं के लिए)– स्वयं के किये कार्य का अच्छा परिणाम देखकर स्वयं की बुद्धि पर अभिमान होना आत्म प्रतिष्ठित मान है।

2. पर प्रतिष्ठित (दूसरों के लिए)– अपने परिजन आदि के द्वारा कोई ऐसा कार्य आदि करने पर चारों ओर प्रशंसा होने पर स्वयं भी अभिमान करना कि हमारे परिवार के सदस्य ने यह कार्य किया है अथवा दूसरे को अभिमान करते देखकर स्वयं को भी उसके प्रति मानादि होना भी पर-प्रतिष्ठित मान है।

3. तदुभय प्रतिष्ठित– स्वयं के तथा दूसरों के संयुक्त कार्य को देखकर स्वयं तथा दूसरे के लिए अभिमान होना तदुभय प्रतिष्ठित मान है।

4. अप्रतिष्ठित– विशेष कोई निमित्त न होते हुए भी मात्र मान कषाय मोहनीय के उदय से जो अभिमान करे, वह अप्रितिष्ठित मान है। ऐसा ही उल्लेख स्थानांग में भी है।[28]

मान कषाय की उत्पत्ति के कारण

श्यामाचार्य[29] के अनुसार मान कषाय चार कारणों से उत्पन्न होती है, वे इस प्रकार हैं -

1. **क्षेत्र–**क्षेत्र का अर्थ है खेत अथवा खुली जमीन। स्वयं की खाली जमीन पर दूसरा व्यक्ति जब कब्जा करने का प्रयत्न करे तब स्वयं के अहंकार को चोट लगने से झगड़े आदि होते हैं अथवा नरक के जीवों के लिए नरक क्षेत्र, तिर्यंच के लिए तिर्यंच क्षेत्र, मनुष्य के लिए मनुष्य क्षेत्र और देव के लिए देव क्षेत्र में इसके निमित्त से मानादि होता है।
2. **वत्थु–** मलयगिरि ने प्रज्ञापनावृत्ति में इसके दो अर्थ किये हैं - वास्तु और वस्तु। वास्तु का अर्थ है मकान, महल आदि को लेकर मान करना। वस्तु का अर्थ है सजीव, निर्जीव पदार्थ। सजीव में माता-पिता, पत्नी, पुत्रादि तथा निर्जीव वस्तु सोना, चांदी, रत्न आदि को लेकर गर्व करना वत्थु मान है।
3. **शरीर–** सुरूप-कुरूप, सजीव-अजीव शरीर के आश्रय से जो अभिमान होता है, वह शरीर आश्रित मान है।
4. **उपधि–** उपकरणों-साधनसामग्री अर्थात् भण्डोपकरण, वस्त्र आदि या काम भोग के अनेकविध साधनों के निमित्त से होने वाला गर्व उपधि यानी उपकरण आश्रित मान कहलाता है।

यहाँ जमीन, मकान, शरीर के अलावा शेष सभी वस्तुओं का समावेश उपधि में कर लेना चाहिए।

स्थानांग में भी इन्ही चार कारणों का वर्णन प्राप्त होता है।[30]

मान की उत्पत्ति और अवस्था के भेद

प्रज्ञापना सूत्र में उत्पत्ति और अवस्था के भेद से मान चार प्रकार का कहा गया है, जो इस प्रकार हैं-

1. **आभोग निर्वर्तित मान (जानते हुए)-** आचार्य अभयदेवसूरि के अनुसार मान के फल को जानते हुए जो मान किया जाता है वह आभोगनिर्वर्तित मान है। आचार्य मलयगिरि के अनुसार पुष्ट कारण होने पर यह सोच कर कि ऐसा किये बिना इसे शिक्षा नहीं मिलेगी अर्थात् उपयोग पूर्वक मान करना आभोग निर्वर्तित मान है।[31]
2. **अनाभोग निर्वर्तित मान (नहीं जानते हुए)-** अभयेदवसूरि के अनुसार गुण दोष जाने बिना मोहवश होकर अभिमान करना अथवा मान के फल को न जानते हुए जो मान किया जाता है वह अनाभोगनिर्वर्तित मान है अथवा मलयगिरि के अनुसार जब कोई पुरुष यों ही गुण दोष का विचार किये बिना परवश होकर मान कर बैठता है तो यह अनाभोगनिर्वर्तित मान है।
3. **उपशांत मान-** जो मान अन्दर हो पर ऊपर से शांत दिखाई दे, उदय में नहीं आया हुआ हो अथवा जो मान सत्ता में हो, किन्तु उदयावस्था में न हो वह उपशान्त मान है।
4. **अनुपशान्त मान-** जो मान उदय अवस्था को प्राप्त हुआ हो। प्रगटरूप से उदय में हो, जो स्पष्ट दिखता हो, ऐसा मान।

उपशांत मान का भेद जीवों में उस समय पाता है कि जब वह मान कषाय में नहीं वर्तता हो किन्तु क्रोध आदि अन्य कषायों में वर्तता हो अथवा विशिष्ट उदय के अभाव में भी उपशांत मान कह सकते हैं।

मान करने के स्थान

स्थानांग सूत्र के आठवें स्थान में मान (मद) करने के तीन, आठ और दस स्थानों का उल्लेख है, जिन के निमित्त से जीव (आत्मा) मान कषाय का सेवन करता है। उनमें जाति मद आदि आठ भेद विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।[32] इन भेदों का स्वरूप निम्न प्रकार से है-

1. **जाति मद-** मातृ पक्ष को जाति कहते हैं। मेरी जाति (मातृपक्ष - नाना, मामा, माता आदि) सभी जातियों में श्रेष्ठ है, मैं श्रेष्ठ जातिवाला हूँ, मेरी जाति में मेरी बराबरी करने वाला कोई नहीं, इस प्रकार जाति का अभिमान करना जातिमद है। जो जाति का मद करता है, उसे चांडाल आदि निम्न कुलों में जन्म लेना पड़ता है। जैसे हरिकेशीमुनि।
2. **कुल मद-** पितृ पक्ष को कुल कहते हैं। स्वयं का कुल (पितृपक्ष) ऊंचा है, वैसा अभिमान करे। हम ऐसे, हमारे पूर्वजों ने ऐसे बड़े कार्य किये थे। श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के जीव ने मरीचि के भव में कुलमद करके नीच गोत्र बांधा और अनेक भवों में उसे भोगते हुए भी 82.5 अहोरात्रि जितने कर्म बाकी रह गये, जिनको तीर्थंकर के भव में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर भोगना पड़ा। कर्म की कैसी विचित्रता? अहंकार करने योग्य नहीं है।
3. **बल मद-** स्वयं के शारीरिक, वाचिक, बौद्धिक, वैचारिक या मानसिक बल का अभिमान करना। किन्तु श्रेष्ठता बल में नहीं है। श्रेष्ठता है बल का जनहित के लिए सदुपयोग करने में। भगवान ऋषभदेव के पुत्र बाहुबलिजी ने बल का मद किया और स्वयं के भाई के साथ युद्ध किया था।
4. **रूप मद-** मैं बहुत रूपवान् हूँ। लोग मेरे रूप की बातें करते हुए थकते नहीं हैं। गली में से निकलने पर लोग टकटकी निगाह से देखा करते हैं, ऐसा मानकर खुश होना। सुंदर व्यक्तियों और गोरे लोगों को यह मद होता है। रूप का अभिमानी व्यक्ति धूप से बचकर चलता है, धूल से दूर भागता है। गर्मी,

सर्दी, वर्षा सबसे परेशान रहता है। ऐसे लोग किसी भी सेवा या सत्कर्म में अपने को लगा नहीं सकते। उन्हें प्रत्येक क्षण अपने रंगरूप की चिन्ता रहती है। सनत्कुमार चक्रवर्ती को ऐसा रूप मद हुआ था। दिगम्बर परम्परा में रूप मद को शरीर मद कहा गया है।

5. **तप मद**– स्वयं के विशिष्ट तप का अभिमान हो सकता है। जैसे कि मेरे जैसा तप दूसरा कोई नहीं कर सकता है। तपस्वी को यह मद होने पर, वह तप के फल को हार जाता है। दृष्टांत– करकंडुमुनि।
6. **सूत्र मद**– ज्ञान का अभिमान करे, मुझे तो जो पूछो वह आता है। मेरे जैसा कोई समझदार नहीं, ऐसा समझाना किसी को नहीं आता। जैन तत्त्व ज्ञान, वैदिक, ज्योतिष आदि किसी भी प्रकार के शास्त्र, विद्या में निपुणता और जगत् प्रसिद्धि होने के कारण होने वाला मद सूत्र मद है। दिगम्बर परम्परा में इसे ज्ञान मद कहा गया है। स्थूलिभद्र मुनि को ऐसा सूत्र (ज्ञान) मद हुआ था।
7. **लाभ मद**– छह खंड के लाभ से मद में आ जाये। सर्व चक्रवर्तियों में सबसे बड़ा बनना, सुभूम चक्रवर्ती सातवां खंड साधने गया और प्राण गंवाये। ऊंची पदवी और ऊंची वस्तु का लाभ होने पर अभिमान करना कि मैं कैसा राजा, प्रधान, प्रमुख, ट्रस्टी आदि हूँ, मैं कोई भी व्यापार करूँ उसमें धन का ढेर लगा देता हूँ, कचरे में भी हाथ डालूँ तो वहाँ से भी सोना निकाल लेता हूँ। साधु सोचे कि मैं कहीं भी गोचरी चला जाऊं वहाँ से माल-मसाले से भरे हुए पात्र लेकर आता हूँ।
8. **ऐश्वर्य मद**– पुण्यवानी के उदय से चक्रवर्ती, वासुदेव, माण्डलिक राजा आदि की पदवी प्राप्त कर के अभिमान करना, वर्तमान में समाज में बड़ा पद, ओहदा या विपुल धन-सम्पत्ति आदि को प्राप्त करके इसका अभिमान करना जैसे कि मैं बड़ा धनवान् हूँ, पूरे बाजार मेरे नियंत्रण में है, मेरे पास 500 गांव हैं, मेरे पास करोडों के हीरे जवाहरात हैं इत्यादि विचार करना, यह ऐश्वर्य मद है। यह मद दशार्णभद्र राजा ने किया था। दिगम्बर परम्परा में इसे पूजा मद कहा है।

दिगम्बर परम्परा के ग्रन्थ रत्नकरण्ड श्रावकाचार, ज्ञानार्णव, भगवती आराधना, मोक्ष पाहुड टीका, द्रव्यसंग्रह टीका[33] आदि में मद के आठ प्रकारों का उल्लेख क्रम भेद और नाम भेद की अपेक्षा भिन्न प्रकार से प्राप्त होता है– ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप, शरीर मद।

तीन स्थान– ऋद्धिगौरव, रस गौरव और साता गौरव । गुरु अर्थात् भारीपन के भाव अथवा कार्य को गौरव कहते हैं। द्रव्य और भाव से गौरव दो प्रकार का है, वज्र आदि की गुरुता द्रव्य गौरव है। अभिमानादि से होने वाला आत्मा का अशुभ भाव, भाव गौरव है। जिसके ऋद्धि गौरव आदि तीन भेद हैं।[34]

दस स्थान– स्थानांग सूत्र के दसवें स्थान में अहंकार करने के दस स्थानों का उल्लेख है, जिनमें से प्रथम आठ स्थान तो उक्त जाति आदि ही है– **9. नागसुवर्ण मद**– मेरे पास नागकुमार, सुवर्णकुमार आदि जाति के देव भी आते हैं, मैं कैसा तेजस्वी हूँ कि देव भी मेरी सेवा में आते हैं, ऐसा मद करना। **10. अवधिदर्शन मद**– मनुष्यों को जो अवधिज्ञान और अवधिदर्शन होता है, मुझे उनसे अधिक विशेष ज्ञान उत्पन्न हुआ है। मेरे से अधिक अवधिज्ञान दूसरे किसी भी अन्य मनुष्य को हुआ हो, मुझे नहीं लगता, ऐसा मद करना।[35]

मान अर्थात् मद करने से हानि

मान हमारे सोचने समझने की शक्ति को क्षीण कर देता है। जब तक मान तुष्ट-पुष्ट होता रहे तब तक लोगों को जीवन 'जीने-योग्य' लगता है। जीवन में सुख प्रतीत होता है। किन्तु जैसे ही मान आहत होने लगे वैसे ही जीवन दुःखपूर्ण प्रतीत होना शुरु होता जाता है। वैसे

मान का कोई निश्चित मापदंड (स्केल) नहीं होता है। मान को स्थापित करने के लिए, मान को टिकाने के लिए, लोग जितने भी खंभे बनाते हैं वे सारे स्तम्भ नश्वर एवं क्षणिक होते हैं। मान-प्रतिष्ठा की दौड़ में व्यक्ति बहुत सारे दुर्गुणों को अपना लेता है लेकिन मान का त्याग करने को तैयार नहीं होता। तुलसीदासजी ने भी कहा है-

कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्ष्या, तुलसी दुर्लभ एह।।

जिस प्रकार सूर्यास्त होने पर चारों ओर अन्धेरा फैल जाता है, वैसे ही मान कषाय के वशीभूत बना हुआ जीव विवेकाविवेक से मूढ हो जाता है। आचारांग में भी कहा है कि अहंकार करता हुआ मनुष्य महामोह के कारण विवेकशून्य होता है।[36] **शुभचन्द्राचार्य** के मतानुसार मान से विवेक का नाश होता है और हेय उपादेय का ज्ञान नहीं रहता है।[37] महाभारत में भी इस कथन का समर्थन किया गया है कि अहंकार पूर्वक किया हुआ काम कभी भी अच्छा फल देने वाला नहीं हुआ करता है।[38]

आचार्य समन्तभद्र कहते हैं कि जो पुरुष गर्व करके अन्य धर्मात्मा पुरुषों का तिरस्कार करता है, वह अपने धर्म का तिरस्कार करता है। क्योंकि धर्मात्मा पुरुषों के बिना धर्म नहीं प्राप्त किया जा सकता है।[39]

आचार्य शिवार्य का कथन है कि मानी से सब द्वेष करते हैं। वह कलह, भय, वैर और दुःख का पात्र होता है तथा इस लोक और परलोक में नियम से अपमान का पात्र होता है।[40]

आचार्य शय्यंभव ने दशवैकालिक सूत्र में कहा है कि मान (अहंकार भाव) विनय का नाश कर देता है।[41] जिनदासगणि ने दशवैकालिक चूर्णि में इसके लिए उदाहरण दिया है कि जब पुत्र को धन का भाग नहीं मिलता है तब वह उद्धत हो प्रतिज्ञा करता है कि धन का भाग अवश्य लूँगा - यह विनय का नाश है। विनय के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना जीवाजीव की जानकारी संभव नहीं होती है। जीवाजीव की जानकारी के बिना दया नहीं, दया बिना धर्म नहीं, धर्म बिना कर्मों का नाश नहीं और कर्मों के नाश के बिना मोक्ष के सुखों की प्राप्ति संभव नहीं है। इस प्रकार मान मोक्ष प्राप्ति में बाधक है। हेमचन्द्राचार्य ने भी ऐसे ही भाव व्यक्त किये हैं कि मान विनय का, श्रुत का और शील-सदाचार का घातक है तथा धर्म, अर्थ और काम तीनों का घातक है। मान मनुष्यों के विवेक रूपी चक्षु को नष्ट करके अन्धा बना देता है।[42]

सूत्रकृतांग सूत्र में स्पष्ट उल्लेख है कि कोई व्यक्ति स्वयं की जाति, कुल, बल, रूप, तप, शास्त्रज्ञान, लाभ, ऐश्वर्य और प्रज्ञा के कारण दूसरों की अवहेलना, निंदा, घृणा, गर्हणा और अपमान करता है। वह ऐसा मानता है कि दूसरे व्यक्ति हीन हैं, परंतु मैं एक ही विशिष्ट पुरुष हूँ। उत्तम जाति, कुल और बल आदि गुणों से युक्त हूँ। इस प्रमाण से वह स्वयं को उत्कृष्ट मानकर गर्व करता है। वह अभिमानी मनुष्य आयु पूर्ण करके शरीर को छोड़कर मात्र स्वयं के कर्मों को साथ लेकर विवश बनकर परलोक में प्रयाण करता है। वह एक गर्भ से दूसरे गर्भ में, एक जन्म से दूसरे जन्म में, एक मरण से दूसरे मरण में, एक नरक से दूसरी नरक में परिभ्रमण करता है। वह परलोक में भी भयंकर, नम्रता रहित, चपल और अभिमानी होता है।[43]

आवश्यकनिर्युक्ति के अनुसार ऋण, व्रण, अग्नि और कषाय इनकी अल्पता पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए। ये अल्प मात्रा में होते हुए भी बहुत होते हैं।[44] कषायों का उपशमन करने वाले तथा महान् गुणों से जिन के समान चारित्र वाले व्यक्ति को भी कषाय नीचे गिरा देते हैं, फिर सरागी व्यक्तियों की तो बात ही क्या?[45]

दशवैकालिक[46] के अनुसार जिस प्रकार जल के प्रवाह में पड़ा हुआ काष्ठ इधर-उधर गोते खाता है, उसी प्रकार जो मनुष्य क्रोधी, अभिमानी, कठोर तथा

अहितकारी वचन बोलने वाला कपटी, धूर्त और अविनीत होता है, वह चतुर्गति रूप संसार के अनादि प्रवाह में गोते खाते रहता है। उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार मान के वशीभूत होकर अनेक साधकों ने अपनी आत्मा को अधोगति का मेहमान बना दिया।[47]

सूत्रकृतांग सूत्र में उल्लेख है कि जो पुरुष, कषायों से युक्त है वह चाहे नंगा और कृश होकर विचरे अथवा एक मास के पश्चात् भोजन करे परन्तु वह अनन्त काल तक गर्भवास को ही प्राप्त करता है।[48] आचार्य हरिभद्र ने भी कहा है –

नाशाम्बरत्वे न सिताम्बरत्वे, न तर्कवादे न च तत्त्ववादे।
न पक्षपाताश्रयणेन मुक्तिः,कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव ।।

आशाम्बर अर्थात् आशा-दिशा ही अम्बर (कपडा है जिसके) उसको आशाम्बर अर्थात् दिगम्बर कहते हैं। दिगम्बरपने में अर्थात् वस्त्र रहित होकर नग्न फिरने से ही मुक्ति नहीं होती है। इसी प्रकार सिताम्बर अर्थात् सफेद कपड़ा पहन लेने मात्र से मुक्ति नहीं है। इसी तरह तर्कवाद और तत्त्ववाद से तथा एक पक्ष पकड़ लेने मात्र से मुक्ति नहीं है। किन्तु कषाय से छुटकारा पाना ही वास्तव में मुक्ति है। हिन्दी कवि ने भी कहा है –

काहे को भटकत फिरे, सिद्ध होवण के काज।
राग द्वेष को छोड़ दे, भैय्या सुगम इलाज ।।

सांख्यदर्शन ने मान अर्थात् अहं (Ego) को बुद्धि से भी सूक्ष्म तत्त्व माना है अर्थात् आदमी की बुद्धि को सुबुद्धि अथवा कुबुद्धि करने वाला मान ही है। भगवद्गीता में कहा है कि अपने को बड़ा मानने वाले, अकड़ वाले, धन, मान, मद से युक्त लोग, दम्भ से अविधिपूर्वक नाममात्र के यज्ञों द्वारा यजन करते हैं।[49]

पूज्य श्री उमेशमुनि म. सा. के अनुसार मान से निम्न हानियाँ हैं – धर्म की, शुभ भावों की हानि होती है तथा इहलोक में जीव दुःखी और रोगी तथा परलोक में दुःखी होता है। मान मधुर और मंद विष है, जो मनुष्य का शनैः-शनैः सब कुछ हरण कर लेता है। मानी मान की रक्षा के लिए हिंसा, झूठ, चोरी आदि अनेक पापों का सेवन करता है।[50]

सामान्य रूप से आठ प्रकार मद करने से निम्न हानियाँ होती हैं-

1. जाति आदि का मद करने से धर्म के मूल गुण-विवेक की हानि होती है। विवेक जाने पर अनेक गुणों का नाश होता है।
2. जाति आदि का अभिमान करने से आपसी संबंध बिगडते हैं, दूसरों के साथ आत्मीयता नहीं रहती है।
3. जाति, कुलादि के अभिमान के कारण झूठे आडंबर एवं दिखावा करना पडता है, जिससे आर्थिक मुश्किलों से जूझना पड़ता है।
4. जाति, कुल, बल आदि का अभिमान करने से नीच गोत्र कर्म का बंध होता है।
5. रूपादि का अभिमान करने से अशुभ नामकर्म का बंध होता है।
6. अभिमान के कारण अन्य के भोग, लाभ आदि में अंतराय देने से अंतरायकर्म बंधता है।
7. मान के कारण असाता वेदनीय कर्म बार-बार बंधता है।
8. अहंकार से गुरु, बड़ों, माता-पिता आदि की आशातना होती है और पापकर्म का बंध होता है।
9. अहंकार से अधमगति (नरक, तिर्यच) में जाना पड़ता है और अगले जन्म में हल्की जाति, कुलादि मिलते हैं।
10. धनादि के मान के कारण शत्रु बढते हैं।
11. किसी भी वस्तु का अभिमान करने से स्वयं की ही प्रगति रुक जाती है।

संक्षेप में कहें तो जिसका अभिमान किया जाता है, आगामी काल में उसे उसी की हीनता प्राप्त होती है अर्थात् जाति का अभिमान करने वाला नीच जाति में उत्पन्न होता है, कुल का अभिमान करने वाला नीच कुल में उत्पन्न होता है। बलाभिमानी निर्बल, लाभाभिमानी दरिद्र, तप का अभिमानी तपहीन,

श्रुताभिमानी मूर्ख और ऐश्वर्य का अभिमान करने वाला अनाथ एवं निराधार होता है। अत: मान के वशीभूत बना हुआ जीव प्राप्त उत्तम वस्तु से भविष्य में अधिक उत्तमता प्राप्त कर सकता था, उसी के निमित्त से वह हीनता और नीचता प्राप्त कर लेता है।

मान-विजय के उपाय

जिस प्रकार क्रोध आत्मा के लिए खारा ज़हर है वैसे ही मान आत्मा के लिए मीठा ज़हर है। जैसे कि विषवल्लिका अपने समीपस्थ पौधों को नष्ट कर देती है। वैसे ही मान गुणग्राहक दृष्टि का विनाश कर देता है। आचार्य शय्यंभव[51] ने मान विजय का उपाय बताते हुए कहा है कि मान को मृदुता (विनय भाव) से जीत सकते हैं अर्थात् नम्रता से मान को जीत कर समूल नष्ट कर सकते हैं। आचार्य कुन्दकुन्द तथा आचार्य हेमचन्द्र ने भी ऐसा ही उल्लेख किया है।[52] बौद्धदर्शन में कहा है कि अक्रोध से क्रोध को, साधुता से असाधुता को, कृपणता को दान से और मिथ्या भाषण को सत्य से पराजित करे।[53] महाभारत में भी ऐसे ही विचार व्यक्त हुए हैं।[54] इस प्रकार वैदिक, बौद्ध और जैन दर्शन में कषाय विजय के समान ही कारणों का उल्लेख है।

चाणक्य नीति में मान को जीतने का सरलतम उपाय बताते हुए कहा है- दान, तप, वीरता, विज्ञान, विनय और नीति में अभिमान करना उचित नहीं। यह पृथिवी अनेक रत्नों अर्थात् गुणी जनों से भरी पड़ी है। अत: और भी बहुत से लोग उपर्युक्त गुण रत्नों को अपना सकते हैं। अत: अपने गुणों का अभिमान नहीं करना चाहिए।[55]

शुभचन्द्राचार्य के मतानुसार जीवमात्र की विडम्बना करने वाले इस संसार में मान नाम का पदार्थ है ही क्या? क्योंकि जिस संसार में राजा भी मरकर तत्काल विष्ठा में कृमि आदि कीट हो जाता है और प्रत्यक्ष भी देखा जाता है कि जो आज राजगद्दी पर विराजमान है वही कल राज्यरहित होकर रंक हो जाता है।[56]

साध्वी हेमप्रभाश्री[57] ने मान कषाय को जीतने के कुछ उपायों का उल्लेख किया है, जिनका चिंतन कर मान पर नियंत्रण किया जा सकता है, उनका सार निम्न प्रकार से है- 1. शरीर की स्वस्थता, सुन्दरता का गर्व होने पर अशुचि भावना का चिंतन करना चाहिए। 2. सत्ता, सम्पत्ति, सुविधा,साधन, सत्कार आदि की प्राप्ति के समय पुण्य और पाप का चिंतन करना। पुण्योदय से यह सामग्री प्राप्त हुई है, जब पाप उदय में आयेगा इनको नष्ट होते हुए एक समय भी नहीं लगेगा। 3. कमल की तरह निर्लिप्त रहना। 4. रावण, कौरव और कंस का अभिमान नहीं टिक पाया तो मेरा क्या रहेगा, ऐसा चिंतन करना। 5. विनय गुण को जीवन में उतारना।

आठ प्रकार के मद को जीतने के उपाय

1. जाति विषयक अहंकार (मान) को जीतने के लिए विचार करना चाहिए कि भूतकाल में मेरी स्थिति कैसी थी? भविष्य में कैसी रहेगी? यह जाति तो पुण्यपाप कर्म का फल है, जो अपना फल देकर नष्ट हो जायेगी। अत: उत्तम जाति को प्राप्त कर मेरा पुरुषार्थ उत्तम शील पालने में, क्षमा धारण करने में, स्वाध्याय में, परोपकार में, दान में, विनय में प्रवर्तन करके जाति का उच्चपना सफल करने में होना चाहिए, न कि झूठा अभिमान करने में। भगवान् महावीर स्वामी ने उत्तराध्ययन सूत्र में स्पष्ट कहा है कि जाति और कुल की उच्चता से व्यक्ति श्रेष्ठ नहीं होता है, वह तो अपने कर्मों से ही श्रेष्ठ होता है।[58]
2. मेरी आत्मा किसी के द्वारा उत्पन्न नहीं किया गया है। आत्मा का कोई कुल होता ही नहीं है। मैं अनादिकाल से कर्मों के पराधीन हूँ। इस मनुष्य जन्म में यदि उत्तमकुल मिला है तो इसका मद करना अनर्थ का कारण है। पूर्व भवों में मैं अनन्त बार नरक, निगोद, सर्प, गधा, भैंसा, ऊँट, गीदड़, सुअर के रूप में उत्पन्न हुआ हूँ। मनुष्य बनकर भी म्लेच्छों के, भीलों के, कसाइयों आदि हल्के कुलों

में उत्पन्न हुआ हूँ। इस बार शुभ कर्मों से उच्चकुल को प्राप्त किया है। किन्तु यह भी कितने समय तक रहने वाला है। अतः इस उत्तम कुल का उपयोग मुझे मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने के लिए करना है, जिससे मुझे बार-बार ऊँच-नीच कुल में जन्म ही नहीं लेना पड़े। आचारांग सूत्र में इसी बात को स्पष्ट रूप से कहा है कि यह जीवात्मा भूतकाल में अनेक बार उच्च गोत्र में उत्पन्न हुआ है और अनेक बार नीच गोत्र में भी उत्पन्न हुआ है। इसमें कुछ भी अधिकता या न्यूनता नहीं। ऐसा जानकर उच्च गोत्र का *अभिमान और नीच गोत्र के कारण दीनता नहीं* लाना और किसी भी मद स्थान की अभिलाषा भी नहीं करना । ऐसा जानकर कौन स्वयं के गोत्र का गर्व करेगा? कौन अभिमान करेगा? और किस वस्तु में आसक्ति रखेगा?[59]

3. बल मान को जीतने के लिए पद, पदवी, प्रतिष्ठा आदि से दूर रहना। जब यह हमारे पास हो तब विशेष रूप से स्वयं की प्रशंसा, स्वयं के गुणगान करना, कराना और सुनना भी नहीं चाहिए। साथ ही चिन्तन करे कि बलशाली होना कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात तो तब है जब उस बल का सदुपयोग जनहित के लिये किया जाए। बलशाली रावण भी था, उसने अपने बल के अभिमान में चूर होकर सीता का हरण किया था। किन्तु बल के झूठे अभिमान से उसके कुल का ही नाश हो गया। इसी प्रकार कौरव, कंस आदि ने अपने बल का अभिमान किया और उस अभिमान ने उनके कुलों तक का नामोनिशान मिटा दिया।

   मेरी आत्मा ने तिर्यंच गति में सिंह, व्याघ्र आदि बन कर अपार शारीरिक बल प्राप्त किया किन्तु मैंने उस बल का दुरुपयोग करके नरक आदि गति में अनेक बार असहनीय कष्टों को प्राप्त किया है। वर्तमान में भी मुझे शारीरिक बल प्राप्त हुआ है। यह भी कर्माधीन है अर्थात् यह बल वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त हुआ है। अतः इस बार इस बल का प्रयोग मुझे किसी भी जीव को दुःख, तकलीफ देने में नहीं करना चाहिए। इसका सदुपयोग मैं तपस्या करने, व्रत-नियम पालन करने हेतु करूँ। कर्मोदय से आये हुए उपसर्ग, परीषह आदि को समभावों से सहन करूँ। मैं निर्बल, दीन-हीन के वचन सुनकर क्षमा धारण करूँ।

4. तप मद को जीतने के लिए भगवान् महावीर स्वामी आदि महापुरुषों के जीवन चरित्र का स्मरण करना चाहिए कि उन्होंने कैसी कठिन तप साधना की, *उसकी तुलना में मेरी तपाराधना तो अल्प है।*

5. आत्मा का कोई रूप नहीं होता है अर्थात् आत्मा तो अरूपी है। मुझे जो रूप मिला वह तो शरीर अर्थात् चमड़ी का रूप है। वह पुद्गल स्वरूप है। पुद्गल का स्वभाव है - सड़न-गलन और विध्वंस। अशुचि भावना का चिन्तन करना चाहिए कि इस गोरी चमड़ी के नीचे कितनी भयंकर गन्दगी छिपी पड़ी है, शरीर में कहीं भी एक फुन्सी उभर आती है, पस पड़ जाता है, तो उस पर मक्खियाँ भिनभिनाने लगती हैं। अतः मेरा रूप चिरस्थायी नहीं है। शुभ नाम कर्म के उदय से मुझे सुन्दर रूप प्राप्त हुआ है। किन्तु अशुभ कर्मों के उदय से यह पल भर में नष्ट हो सकता है, इसमें रोग उत्पन्न हो सकते हैं, कीड़े उत्पन हो सकते हैं, अतः क्षणभंगुर रूप का अभिमान नहीं करना चाहिए और सनत्कुमार चक्रवर्ती का स्मरण करना चाहिए।

6. मैं जिस ज्ञान का अभिमान कर रहा हूँ वह ज्ञान केवलज्ञान रूपी समुद्र के सामने एक बून्द रूप भी नहीं है। ज्ञान (सूत्र) तो ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के आधीन है, विनाशक है, इसके नष्ट होने में अधिक समय नहीं लगता है। क्यों इसका गर्व करते हो? वृद्धावस्था आदि के कारण इन्द्रियों की शक्ति नष्ट होते ही ज्ञान भी नष्ट हो जाता है, वात, पित्त, कफादि के घटने-बढ़ने पर (रोगादि

होने पर), विषय-कषायों की अधिकता से इन्द्रिय जन्य ज्ञान क्षण मात्र में ही विपरीत हो जाता है, नष्ट हो जाता है। हमारी आत्मा एकेन्द्रिय आदि में अनन्त काल तक अज्ञानी रही, वहाँ हमारे मात्र अक्षर के अनन्तवें भाग जितने ज्ञान का क्षयोपशम था, वह भी इसलिए कि जीव का उपयोग गुण सुरक्षित रह सके। फिर अभिमान किसका? आत्मा का स्वभाव तो क्षायिक ज्ञान (केवलज्ञान) प्राप्त करने का है। किन्तु कोई शत्रु किसी राजा को बन्दी बनाकर विभिन्न प्रकार के कष्ट देते हुए कदाचित् मिष्ठान्नयुक्त रुचिकर भोजन आदि खाने को देता है तो क्या वह राजा उस मिष्ठान्नयुक्त भोजन को पाकर अभिमान करेगा? उसी प्रकार हमारे क्षायिक ज्ञान (केवलज्ञान) को इन कर्मों ने लूटकर शरीर रूप बंदीगृह में बंद करके रखा है और इन्द्रियों के माध्यम से कुछ क्षायोपशमिक ज्ञान दिया जिसे पाकर हम गर्व क्यों करें? हम क्षायोपशमिक ज्ञान का अभिमान कर आत्मा को क्षायिक ज्ञान से दूर कर रहे हैं। मतिज्ञानावरण आदि कर्म के क्षयोपशम से हमने जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया है, तो इसे बड़ी दुर्लभ वस्तु समझकर आत्मा को विषयों से तथा अभिमान आदि कषायों से छुड़ाकर परम समता धारण करके संसार परिभ्रमण के कारणों का अभाव हो ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।

7. लाभ की प्राप्ति दानान्तराय कर्म के क्षयोपशम से होती है। दानान्तराय कर्म का क्षयोपशम दान देने या दान देने की भावना से होता है। मैंने पूर्व भव में कुछ दिया है उसी के फलस्वरूप मुझे आज मिल रहा है। यदि मैं अनुकूल परिस्थितियों में मान करूँगा तो प्रतिकूल परिस्थिति आने पर मुझे दु:ख का अनुभव अधिक होगा। अत: हमें लाभ का अभिमान नहीं करना चाहिए।

8. ये राज्य, धन-सम्पदा आदि आत्मा का स्वभाव नहीं हैं, सब शुभ कर्मों के उदय के कारण मुझे प्राप्त हुए हैं, इनकी आसक्ति मेरी दुर्गति का कारण है। ये सब कलह का मूल, वैर का कारण, क्षणभंगुर, परमात्म स्वरूप को भुलाने वाला एवं दु:ख स्वरूप है, अनेक जीवों की घात कराने वाला है। यह सब अस्थिर, चलायमान और कर्माधीन है। जब अशुभ कर्मों का उदय आयेगा तो यह सब एक क्षण में मुझसे छिन जायेगा। पूर्व में भी ऐसे अनन्त ऐश्वर्यशाली हुए हैं, किन्तु दुनिया आज उनका नाम तक नहीं जानती है। अत: यह ऐश्वर्य मान करने योग्य नहीं है, किन्तु मुझे जो अन्तराय कर्म के क्षयोपशम से ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है इसका उपयोग दान, शील, संयम, दूसरे जीवों के उपकार करने में करना चाहिए। तभी यह प्रशंसा के योग्य है।

सामान्य रूप से मान को जीतने के कुछ उपाय निम्न प्रकार से हैं -

1. सामनेवाला व्यक्ति किस प्रकार से गुणों में श्रेष्ठ है इसका विचार करके उसके साथ व्यवहार किया जाए। इसके लिए गुण ग्राहक दृष्टि अपनानी बहुत जरूरी है।
2. हम जो विचार करें, बोलें और आचरण करें, उसमें अहंकार न हो इसका ध्यान रखना चाहिए।
3. अहंकार करने जैसा नहीं है ऐसी श्रद्धा करना। रावण जैसे का अहंकार भी नहीं रहा तो फिर अहंकार करने वाला मैं कौन? अहंकारी व्यक्ति का सभी प्रकार से पतन होता है। यह बात हमेशा सदैव स्मरण रखनी चाहिए।
4. स्वयं में रहे अवगुणों पर दृष्टि रखना कि मेरे जीवन में अनेक दुर्गुण हैं इसलिए अहंकार कैसे कर सकता हूँ?
5. हम कोई बडा कार्य या अच्छा कार्य करते हैं तो विचारना कि भूतकाल में कितने लोगों ने कैसे-कैसे महान कार्य किये हैं? अनंत जीवों ने भूतकाल और भविष्य काल की अपेक्षा ऐसे अनंत कार्य किये हैं और करनेवाले हैं। मैं किसका अभिमान

करूँ।

6. गुरुदेव, माता-पिता, बडों ऐसे किसी न किसी की आज्ञा में रहकर ही कार्य करना चाहिए।

कषाय स्थिति-बन्ध एवं अनुभागबन्ध का कारण है। अत: कषाय का अभाव किये बिना संसार का अभाव होना संभव नहीं है। साधक कषायों के दुष्फलों का बार-बार चिन्तन करके ही कषायों से बचा जा सकता है।

मान-विजय से लाभ

उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार कषाय का त्याग करने से जीव को वीतराग भाव प्राप्त होता है और वीतराग भाव को प्राप्त हुआ जीव सुख-दु:ख में समभाव रखने वाला होता है।[60]

मान को जीतने से जीव को मार्दव-मृदुता (स्वभाव की कोमलता) गुण की प्राप्ति होती है और मृदुता गुण युक्त जीव के मान वेदनीय (भोगने योग्य) कर्मों का बंध नहीं होता है और पहले बांधे हुए मानजनित कर्मों की निर्जरा कर देता है।[61]

भगवती आराधना[62] में उल्लेख है कि निरभिमानी मनुष्य सभी को सदा प्यारा लगता है। वह ज्ञान, यश और सम्पत्ति प्राप्त करता है तथा अपना प्रत्येक कार्य सिद्ध कर सकता है।

सूत्रकृतांग में कहा है कि प्रज्ञा मद, तप मद, गोत्र मद और आजीविका मद इन चार प्रकार के मदों को नहीं करने वाला निस्पृह भिक्षु सच्चा पण्डित और पवित्रात्मा होता है।[63]

आचार्य शुभचन्द्र कहते हैं कि यदि क्रोधादि कषायों का क्षय हो गया है तो तप करना व्यर्थ है और यदि क्रोधादि कषायों का क्षय नहीं हुआ है तो भी तप करना व्यर्थ है।[64] इसका समर्थन योगवासिष्ठ में भी हुआ है। वहाँ कहा है कि जिनका शरीर अहंकाररूपी विष से नष्ट नहीं हुआ, वे सब प्रकार के कार्यों को करते हुए तथा उनका फल भोगते हुए भी सभी राग-रोगादि दोषों से मुक्त तथा स्वस्थ है।[65]

इनके अलावा मान कषाय पर विजय प्राप्त करने से निम्न लाभ होते हैं -

1. मान मोहनीय कर्म का बंध नम्रता रखने से रुक जाता है और पूर्व में बांधे हुए मान मोहनीय कर्म क्षय होते हैं।
2. सरलता से आत्मा के शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति सुलभ बनती है। नम्रता और विनय गुण की आराधना करने से आत्मा में दूसरे अनेक गुण पल्लवित हो उठते हैं।
3. नम्रता से जीव को नरक एवं तिर्यच गति में नहीं जाना पड़ता । मनुष्य और देवगति में भी हल्की जाति के कुलादि में उत्पन्न नहीं होना पड़ता और भविष्य में गुरु, सेठ, प्रधान, राजा, चक्रवर्ती, इंद्र, वैमानिकदेव आदि पदवियां प्राप्त होती हैं।
4. नम्रता को धारण करने से, ज्ञानियों की भक्ति, बहुमान करने से ज्ञानावरणीय कर्म बंधता नहीं है, पूर्व में बांधे हुए कर्म क्षय होते हैं।
5. मान विजय से स्मरणशक्ति बढती है और समझ शक्ति में वृद्धि होती है और कार्यों में सफलता मिलती है।
6. निरभिमानंता से सौभाग्यवान बनते हैं, सबके प्रिय होते हैं, उनकी आज्ञा सभी मानते हैं और कोई भी उनका प्रतिकार नहीं करता है।
7. मान का त्याग करने से मैं कुछ हूँ, मेरे जैसा कोई नहीं आदि वृत्तियाँ निकल जाने से शांति समाधि प्राप्त होती है।

मान-कषाय और कर्म

मान कषाय का सम्बन्ध आठ कर्मों में मुख्य रूप से गोत्र कर्म से है। जिस कर्म के उदय से जीव ऊंचा या नीचा माना जाय, वह गोत्र कर्म है। यह कर्म कुंभकार के बनाये हुए घड़े के समान है। एक ही प्रकार की मिट्टी से बना हुआ एक घड़ा, कलश के रूप में अक्षत आदि से पूजा जाता है और दूसरा मदिरादि अपवित्र वस्तु भरने के काम में आने से निन्द्य होता है अथवा बिना अपवित्र

वस्तु भरे भी उस प्रकार का होने से निन्द्य कहलाता है। जाति-कुल आदि की अपेक्षा से ऊँच-नीच होना इसी कर्म का फल है। इसके दो भेद हैं- 1 उच्च गोत्र और 2 नीच गोत्र।

उच्च गोत्र के उदय से जीव धन, रूप आदि से हीन होता हुआ भी ऊँचा माना जाता है और नीच गोत्र के उदय से धन, रूप, बल, आदि होते हुए भी नीचा माना जाता है। नीच कुलोत्पन्न होने पर भी मनुष्य तप-संयम के व्रत के कारण समादरणीय होता है। उस स्थिति में उसके उच्चगोत्र कर्म का उदय माना है। इसी प्रकार उच्च कुलोत्पन्न हीनाचारी-दुराचारी हो तो वह निन्दनीय होता है, उसके नीच गोत्र का उदय माना है। गोत्रकर्म बन्ध के जाति, कुल आदि आठ कारण हैं। इनका मद (घमण्ड) करने वाले को नीच गोत्र की प्राप्ति के योग्य बन्ध होता है और मद नहीं करने वाले के उच्च गोत्र का बन्ध होता है।

नयों की अपेक्षा से मान कषाय

नैगम, संग्रह और व्यवहार नय की अपेक्षा से मान दोष है क्योंकि क्रोध के अनन्तर उत्पन्न होता है और जिस प्रकार क्रोध करने से शरीर में सन्ताप होता है, शरीर कांपने लगता इत्यादि अनेक अनर्थ उत्पन्न होते हैं वैसे ही मान करने से भी होते हैं। ऋजुसूत्रनय की अपेक्षा से मान दोष नहीं है क्योंकि यह अंग संतापादि का कारण नहीं है। जो अंग संताप आदि उत्पन्न होते हैं वे मान से होने वाले क्रोध से सीधे उत्पन्न होते हैं। वैसे मान पेज्ज (राग) भी नहीं है क्योंकि उससे आनन्द की उत्पत्ति नहीं होती है। शब्दनय की अपेक्षा मान दोष है, क्योंकि यह कर्म आस्रव का कारण है किन्तु पेज्ज (राग) नहीं है, इससे जीव को सन्तोष और परमानन्द की प्राप्ति नहीं होती है।[66]

मान कषाय की स्थिति

प्रत्येक संसारी आत्मा कषाय सहित होती है, एक समय में क्रोधादि चार कषाय में से एक कषाय का उदय रहता है, अन्य तीन कषायें उस समय सत्ता में स्थित रहती हैं। प्रत्येक कषाय अधिक से अधिक अन्तर्मुहूर्त्त काल तक उदय में रह सकती है, उसके बाद भाव परिवर्तन अवश्य हो जाता है।[67]

मानी की गति

स्थानांग के कथनानुसार शैलस्तम्भ के समान मान में रहा हुआ जीव यदि काल करे तो नैरयिकों में उत्पन्न होता है। अस्थिस्तम्भ के समान मान में रहा हुआ जीव यदि काल करे तो तिर्यञ्च गति में उत्पन्न होता है। लकड़ी के स्तम्भ के समान मान में रहा हुआ जीव यदि काल करे तो मनुष्यों में उत्पन्न होता है। तिनिस वृक्ष की शाखा के समान मान में रहा हुआ जीव यदि काल करे तो देवों में उत्पन्न होता है।[68]

आवश्यकनिर्युक्ति के अनुसार अनन्तानुबन्धी क्रोध, मानादि कषाय सम्यक्त्व की घात करते हैं। अप्रत्याख्यानी क्रोध, मानादि देशविरति की घात करते हैं। प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मानादि सर्वविरति की घात करते हैं। संज्वलन क्रोध, मानादि यथाख्यात चारित्र का घात करते हैं।[69] प्रज्ञापना वृत्ति में मलयगिरि ने भी ऐसा ही उल्लेख किया है।[70]

मान-कषाय और समुद्घात

बाह्य और आभ्यन्तर दोनों निमित्तों के प्रकर्ष से उत्पादित क्रोधादि कषायों द्वारा किया गया समुद्घात कषाय समुद्घात है।[71] इसके क्रोधादि चार प्रकार होते हैं। मान की प्रवृत्ति मान कषाय समुद्घात के रूप में होती है। तीव्र कषाय के उदय से मूल शरीर को न छोड़कर परस्पर एक दूसरे का घात करने के लिए आत्मप्रदेशों के बाहर निकलने को कषाय समुद्घात कहते हैं। संग्राम में योद्धा क्रोध में आकर लाल-लाल आंखें करके अपने शत्रु को ताकते हैं यह प्रत्यक्ष देखा जाता है। यही कषाय समुद्घात का रूप है।[72]

मान-कषाय की तुलना आवर्त्त से

स्थानांग में चार प्रकार के आवर्त्तों का उल्लेख है, यथा - खरावर्त्त यानी कठोर आवर्त्त, उन्नतावर्त्त,

गूढावर्त्त और आमिषावर्त्त यानी मांस के लिए शिकारी लोग जो घेरा डाल कर बैठते हैं उसके समान आवर्त्त।[73] इनमें मान कषाय की तुलना उन्नतावर्त्त से की गई है। इसमें उत्प्रेरित मनोदशा पहाड़ की चोटी को अपने बहाव में उड़ा ले जाने वाली तेज पवन के समान है। अभिमानी दूसरों को मिटाकर अपने-आपके अस्तित्व का अनुभव करता है।[74]

मान-कषाय का वमन करें

इस प्रकार मान कषाय आत्मा का विघातक है। अत: हमें इस संसार के बन्धनों से छूटना है तो हमें मान सहित चारों कषायों का त्याग नहीं वरन् वमन करना होगा जैसे कि दशवैकालिकसूत्र[75] में कहा है कि अपनी आत्मा का हित चाहने वाले साधु को पाप को बढाने वाले क्रोध तथा मान, माया और लोभ इन चार दोषों का अवश्य ही वमन कर देना चाहिए।

त्याग करना और वमन करना, इन दोनों में यह अन्तर है कि छोड़ी हुई वस्तु को तो प्रत्याख्यान के काल की मर्यादा के उपरान्त व्यक्ति फिर उस वस्तु को ग्रहण कर लेता है, जैसे कि जिस दिन जिस वनस्पति आदि का त्याग किया है उस दिन वह व्यक्ति उस वस्तु को नहीं खाता, किन्तु दूसरे दिन उस वस्तु को खा लेता है, परन्तु जिस चीज का वमन हो गया। उस चीज (वमन) को वह वापिस कभी नहीं खाता। इसी तरह ज्ञानियों का फरमाना है कि क्रोधादि कषाय को केवल छोड़े ही नहीं किन्तु सर्वथा वमन कर देना चाहिये फिर कभी ग्रहण नहीं करना चाहिये।

उपसंहार

आत्मा के परिणामों को जो कलुषित करता है, वह कषाय है। कषाय से आत्मा का स्वाभाविक स्वरूप नष्ट होता है। कषाय आत्म धन को लूटने वाले तस्कर हैं। वे आत्मा में छिपे हुए दोष हैं। क्रोधादि चार को चाण्डाल चौकड़ी कहा जाता है। स्वयं को पुण्य से प्राप्त हुई विशिष्ट जाति का मानकर, स्वयं को दूसरों से ऊंचा मानना, दूसरों के प्रति तुच्छता का, हल्केपन का जो व्यवहार करते हैं, उसे मद, अहंकार, मान अथवा अभिमान कहते हैं । मान कषाय से अभिभूत होकर जाति आदि आठ प्रकार का मद करने वाले को भविष्य में अधमता प्राप्त होती है। जिन कारणों से जीव मद करता है, उसे उस प्रकार के मद से पहचाना जाता है। मद जीव का पतन करने वाला होने से करने योग्य नहीं होता है। इसलिए विनय और नम्रता से मान को जीतना चाहिए। क्योंकि कंठ तो कोयल के पास भी होता है। रंग तो मोर के पास भी होता है। रूप तो गधे के पास भी होता है। अच्छे संयोगों के मिलने से कोई गुणवान नहीं बन जाता है। परंतु उन संयोगों का अभिमान किये बिना उनका सदुपयोग करने से जीवात्मा सिद्ध भगवान बन सकती है।

जाति, कुल, रूप, बल, और ऐश्वर्य तो पुण्योदय से और तप, लाभ और श्रुत पुण्योदय और अंतरायादि के क्षयोपशम से प्राप्त होते हैं। जो वस्तु शाश्वत रहने वाली नहीं है, साथ रहने वाली नहीं है, निकाचित कर्मोदय में काम आने वाली नहीं उसका अहंकार समझदार, सुज्ञजन करते ही नहीं है। सर्व प्रकार के मद का सर्वथा त्याग करके विनय और नम्रता के गुणों को सभी जीव प्राप्त करें, ऐसा तीर्थंकर प्रभु का उपदेश है। किसी दार्शनिक का मत है कि जो मनुष्य मानी नहीं हो तो, मोक्ष यहीं पर ही मिल जाये। अत: मान सहित अन्य कषाय से मुक्त होना ही सच्ची मुक्ति है। 'कषायमुक्ति: किल मुक्तिरेव।' कषाय कर्मजनित और साथ ही कर्मजनक वैकारिक प्रवृत्ति है। उस प्रवृत्ति का परित्याग कर आत्मस्वरूप में रमण करना, यह प्रत्येक साधक का लक्ष्य होना चाहिए।

संदर्भ-

1. छान्दोग्योपनिषद् 7.26.2
2. धम्मपद, 223
3. कम्मं कसं भवो वा कसमाओ सिं जओ कसाया तो। कसमाययंति व जओ गमयंति कसं कसाय त्ति।- विशेषावश्यकभाष्य गाथा, 3525
4. प्रज्ञापना वृत्ति, पृ. 301
5. राजवार्तिक, अ. 2 सू. 6, षट्खण्डागम, पु. 1 सूत्र

1.1.4, गोम्मटसार जीवकांड गाथा 283, योगसार 9.40

6. प्रज्ञापना वृत्ति, पृ. 301

7. कषन्ति सद् गुणान्सर्वान् जीवानां बुद्धिशालीनाम्। कषायास्ते मता तज्ज्ञैस्त्याज्या मोक्षसुखाप्तये।। -पाण्डव पुराण

8. जेण संसरए जीवो, लोए भवे गुणे दुहे। संसारभाव-लाहत्तो, सो कसाओत्ति वुच्चइ।-मोक्खपुरिसत्थो 12.1.4

9. स्थानांगसूत्र, 2.2

10. जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन, भाग 1, पृ. 500

11. बन्धतत्त्व, पृ. 119

12. चत्तारि कसाया पण्णत्ता। तंजहा - कोह कसाए, माण कसाए, माया कसाए, लोभ (लोह) कसाए।-प्रज्ञापना सूत्र, पद 14

13. स्थानांगसूत्र स्थान, 4, उ. 1, समवायांग 4, षट्खण्डागम पु. 1.1.1, राजवार्तिक 9.7.11, द्रव्यसंग्रह, गाथा 30 की वृत्ति

14. राजवार्तिक 8.9.5

15. कसायपाहुड चूर्णि, अ. 9 गा. 86

16. धवला 1.1.1.1.111

17. बन्धतत्त्व, पृ. 118

18. भगवती सूत्र, शतक 12 उद्देशक 5

19. धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ 25-38

20. सो उदिओ मणं दुट्ठं, वयणं हास हीलियं। कायं करेइ थद्धं च, अप्पस्स अवमाणणं।-मोक्ख पुरिसत्थो 12.2.21

21. चउव्विहे कोहे पण्णत्ते। तंजहा - अणंताणुबंधी कोहे, अपच्चक्खाणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे। एवं माणेणं मायाए लोभेणं।-प्रज्ञापना सूत्र, पद 14

22. चउव्विहे कोहे पण्णत्ते तंजहा-अणंताणुबंधिकोहे, अपच्चक्खाणकोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे।-स्थानांग स्थान 4 उद्देशक 1, उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 33 गाथा 11, सर्वार्थसिद्धि 8.9, राजवार्तिक 8.9.5

23. चउव्विहे माणे पण्णत्ते तंजहा-सेलथंभ समाणे, अट्ठिथंभ समाणे, दारुथंभ समाणे, तिणिसलयाथंभ समाणे। - स्थानांग सूत्र 4.2

24. विशेषावश्यकभाष्य गाथा 2990-2991, गोम्मटसार, जीवकांड, गाथा 285

25. मोक्ख पुरिसत्थो 12.2.22

26. बन्धतत्त्व, पृ. 118-119

27. चउ पइट्ठिए कोहे पण्णत्ते। तंजहा - आयपइट्ठिए, पर-पइट्ठिए, तदुभय पइट्ठिए, अप्पइट्ठिए। एवं माणेणं दंडओ। -प्रज्ञापना सूत्र, पद 14

28. स्थानांगसूत्र स्थान 4 उद्देशक

29. चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवइ, तंजहा - खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च। ... एवं माणेण वि मायाए वि लोभेण वि। एवं एते वि चत्तारि दंडगा। - प्रज्ञापना सूत्र, पद 14

30. चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पई सिया तंजहा- खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च।-स्थानांग स्थान 4 उद्दे. 1

31. स्थानांग वृत्ति, प्रज्ञापना वृत्ति, पद 14

32. स्थानांग सूत्र स्थान 8, समवायांग सूत्र, समवाय 8

33. रत्नकरण्डश्रावकाचार 1.25, ज्ञानार्णव 19.48, भगवती आराधना 1369, मोक्षपाहुड टीका में 27.322, द्रव्यसंग्रहटीका 41.168

34. स्थानांग सूत्र स्थान 3 उद्देशक 4

35. स्थानांग सूत्र, स्थान 10वां

36. उन्नयमाणे य नरे, महामोहे पमुज्झई।-आचारांग सूत्र 5.4

37. ज्ञानार्णव 19.49

38. अभिमानकृतं कर्म नैतत् फलवदुच्यते।-महाभारत पर्व 12 वां

39. रत्नकरण्ड श्रावकाचार 1.26

40. भगवती आराधना, गाथा 1371

41. कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयणासणो। माया मित्ताणि णासेइ, लोभो सव्वविणासणो। -दशवैकालिकसूत्र अ. 8 गा. 38

42. योगशास्त्र, 4.12

43. सूयगडांग सूत्र 2.2.25

44. अणथोवं वणथोवं अग्गीथोवं कसायथोवं च। ण हु भे वीससियव्वं थेवंपि हु तं बहुं होइ।-आवश्यकनिर्युक्ति गाथा 120

45. उवसामं उवणीया गुणमहया जिणचरित्तसरिसंपि। पडिवायंति कसाया किं पुण सेसे सरागत्थे? - आवश्यकनिर्युक्ति गाथा 118

46. जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई णियडी सढे। वुज्झइ से अविणीअप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा। - दशवैकालिकसूत्र अ. 9, उ.2 गा. 37

47. अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई। माया गई पडिग्घाओ, लोभाओ दुहओ भयं। - उत्तराध्ययन सूत्र 9.54

48. जइ वि य णगिणे किसे चरे, जइ वि य भुंजिय मासमंतसो। जे इह मायाइ मिज्जइ, आगंता गब्भाय णंतसो।-सूत्रकृंताग सूत्र 1.2.1.9

49. आत्मसंभाविता: स्तब्धा धनमानमदान्विता:। यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्।।-श्रीमद् भगवद् गीता 16.17

50. मोक्खपुरिसत्थो 12.2.70-78

51. उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे। मायं चज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे।।- दशवैकालिकसूत्र, अ. 8 गा. 39

52. नियमसार 115, योगशास्त्र 4.2

53. धम्मपद 223

54. महाभारत, उद्योग पर्व

55. दाने तपसि शौर्ये वा, विज्ञाने विनये नये। विस्मयो नहि कर्त्तव्यो, बहुरत्ना वसुन्धरा।-चाणक्य नीति, 14.8

56. ज्ञानार्णव 19.56

57. कषाय, साध्वी हेमप्रभाश्री, पृ. 136-148

58. कम्मुणा बंभणो होई, कम्मुणा होई खत्तिओ। बइसो कम्मुणा होई, सुद्दो हवई कम्मुणा।-उत्तराध्ययन सूत्र 25.33

59. आचारांग सूत्र 1.2.3.3

60. कसाय-पच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? कसाय-पच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ, वीयरागभावपडिवण्णेवि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ।-उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 29

61. माण-विजएणं भंते! जीवे किं जणयइ? माण-विजएणं मद्दवं जणयइ, माणवेयणिज्जं कम्मं ण बंधइ, पुव्वबद्धं च णिज्जरेइ।-उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 29 सूत्र 68

62. भगवती आराधना, गाथा 1379

63. पन्नामयं चेव तवोमयं च, निन्नामए गोयमयं च भिक्खू। आजीवगं चेव चउत्थमाहु, से पण्डिए अत्तमपोग्गले से।-सूत्रकृतांग सूत्र 1.13.15

64. यदि क्रोधादय: क्षीणास्तदा किं खिद्यते वृथा। तपोभिरथ तिष्ठन्ति तपस्तत्राप्यपार्थकम्।।

- ज्ञानार्णव 19/76

65. अहन्त्वविषचूर्णेन येषां कायो न मारित:। कुर्वन्तोऽपि हरन्तोऽपि न च ते निर्विषूचिका।।

- योगवासिष्ठ 6.2.53.10

66. कसायपाहुड 1 चूर्णसूत्र व टीका 1.21.335-343

67. कसायपाहुड चूर्णि, अ. 3 गा. 25 सू. 34-35

68. सेलथंभे समाणं माणमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ, अट्ठिथंभ समाणं माणमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्ख-जोणिएसु उववज्जइ, दारुथंभसमाणं माणमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ, तिणिसलयाथंभसमाणं माण-मणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ।

- स्थानांग सूत्र 4.2

69. आवश्यकनिर्युक्ति गाथा 108-111

70. सम्यकत्वगुणविघातकृदनन्तानुबन्धी देशविरति-गुणविघाती अप्रत्याख्यान: सर्वविरतिगुण-विघाती प्रत्याख्यानावरण: यथाख्यातचारित्रघातक: संज्वलन:। - मलयगिरि, प्रज्ञापना वृत्ति, पृ. 302

71. राजवार्तिक 1.20.12.

72. कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा टीका, गाथा 179

73. चत्तारि आवत्ता पण्णत्ता तंजहा-खरावत्ते, उण्णयावत्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते। - स्थानांगसूत्र 4.4

74. एवामेव चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा-खरावत्तसमाणे कोहे, उण्णयावत्त समाणे माणे, गूढावत्तसमाणा माया, आमिसावत्तसमाणे लोभे।

- स्थानांगसूत्र 4.4

75. कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं। वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो।।-दशवैकालिकसूत्र अ. 8 गा. 37

-केन्द्रीय सुधर्म जैन ग्रन्थालय एवं शोध संस्थान ई-40, शास्त्रीनगर, जोधपुर-342003(राज.)

अहंकार का स्वरूप एवं उस पर विजय

श्री पारसमल चण्डालिया

मार्ग संकड़ा था, जिस पर एक साथ एक ही वाहन गुजर सकता था। यदि एक कार सामने से आ गई तो दूसरी कार वाले को अपनी कार रिवर्स में लेकर ही मार्ग को खुला करना होता था। किसी समय दो कारें आमने-सामने हो गई। दोनों में बड़े अधिकारी बैठे थे। दोनों ने अपने ड्राइवरों को सूचित कर दिया कि हमें रास्ते से नहीं हटना है। क्योंकि हम बड़े आदमी (अधिकारी) हैं। 10 मिनिट दोनों कारें आमने-सामने खड़ी हो गईं तो मार्ग अवरुद्ध हो गया। दोनों ओर वाहनों की कतारे लग गईं। वाहनों से लोग नीचे उतरे और कार ड्राइवर को उपालंभ देने लगे तो साहब कार से उतरे और रौब जमाने लगे। लोगों को गुस्सा आ गया और उस कार को खींच कर खुले रास्ते तक छोड़कर आ गये। लोगों की भीड़ थी। अतः साहब ने मौन धारण करने में ही अपनी सुरक्षा समझी। प्रश्न है- अहंकार का। किसी ने ठीक ही कहा है-

कुपात्र को कभी दान मत करो।
आर्त्त व रौद्र ध्यान मत करो
उचित है आत्म सम्मान की रक्षा
लेकिन कभी अभिमान मत करो।।

सभी अपने अपने स्थान पर बड़े हैं क्योंकि सब एक दूसरे के लिए सहायक हैं, सब अपने-अपने तरीके से समाज की सेवा करते हैं। यदि सफाई कर्मचारी मार्ग का कचरा नहीं उठाएँ तो? ट्रेन या बस का ड्राइवर वाहन नहीं चलाने की जिद्द करे तो? हम जो कुछ सुख सुविधाएँ भोग रहे हैं वे अनेक श्रमजीवियों के पसीने के प्रताप से मिली हुई हैं जिन्होंने कभी अपने आपको अहंकारी नहीं बनने दिया। आकाश की तरफ दृष्टि करो। सूर्य ने अपने आपको बड़ा समझ कर कभी चन्द्र या ग्रहों से झगड़ा किया है? एक ग्रह दूसरे ग्रह के साथ या एक तारा दूसरे तारे से कभी झगड़ता है? पृथ्वी के, ब्रह्माण्ड के अनेक तत्त्वों को नियमानुसार वर्तन करने में अहंकार कभी बाधक नहीं बनता, सिवाय मानव के। बादल नहीं बरसने की हठ नहीं करता। पानी की अनेक बिन्दु इकट्ठी होती हैं और उनसे झरना बनता है। झरने से नदी और चाहे कितनी ही तूफानी नदी क्यों न हो अहंकार त्याग कर सागर में मिल जाती है।

अहंकार से क्रोध का जन्म होता है और क्रोध से अविवेक जन्मता है। इसलिए कल्याणकांक्षी व्यक्ति को ऐसे विवेक विनाशक दुर्गुण अहंकार का त्याग कर देना चाहिये। अहंकार में अंधे बने सम्राटों ने अपने सम्राज्य खो दिये, व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठान खो दिये और अनेक व्यक्ति भूखे-प्यासे तड़फ-तड़फ कर और भटक-भटक कर आर्त्तध्यान एवं रौद्रध्यान में मर गये। अतः हम अहंकार का त्याग कर विनयी बनें। क्योंकि झुकता वही है जिसमें जान है, अकड़ के रहना मुर्दे की पहचान है। अतः सच्चे आत्मिक विकास के लिए अहंकार रहित बनने की प्रतिज्ञा करें।

अहंकार से हानियाँ

अहंकार से होने वाली इहलौकिक और परलौकिक हानियाँ इस प्रकार हैं-

1. जीव के प्रायः दुःखी होने का एक कारण है-अहं। अहं अर्थात् मैं पना। मैंने ऐसा किया, मैंने वैसा किया, मैंने उनको संभाला, मैंने उनकी सेवा की, मैं नहीं होता तो उनकी फजीती हो जाती। मैं नहीं होता तो अमुक काम नहीं होता। मेरे कारण घर, परिवार, संघ समाज चल रहा है। मैंने अमुक समस्या हल की, वरना कितनी हानि हो जाती आदि। प्रायः घर, परिवार, संघ, समाज में व्यक्ति मैं-मैं करके सम्बन्धों को बिगाड़ देता है। व्यक्ति प्रेम चाहता है

पर प्रेम देता नहीं तो प्रेम मिलेगा कहाँ से? प्रेम देने में अहंकार ही बाधक बनता है। अतः मान से दूर रहिये वरना यह आपको सबसे दूर कर देगा।

2. 'माणो-विणयणासणो'- मान (अहंकार भाव) विनय का नाश कर देता है। अहंकारी किसी को अपने से अधिक समझदार नहीं मानता। मद चाहे धन का हो, चाहे पद का, चाहे उम्र का अथवा किसी का भी हो, बुरा है। स्थानांग सूत्र के आठवें स्थान में मद के आठ भेद बताये हैं- 1. जाति मद, 2. कुल मद, 3. बल मद, 4. रूप मद, 5. तप मद, 6. श्रुत मद, 7. लाभ मद, 8. ऐश्वर्य मद। इस प्रकार मद के और भी अनेक रूप हो सकते हैं। जीव के पास धन, बुद्धि, सत्ता आदि की विशेषता आई नहीं कि वह हेकड़ी चलाने लगता है पर जरा शांति से विचार करना कि रावण जैसे का भी अभिमान न रहा हो हम किस खेत की मूली हैं? जो अकड़ की पकड़ में आ जाता है, वह निश्चित रूप से रगड़ खाता है। कहा भी है-

मान करता मर गये, रहा न उनका वंश।
तीनों टीले देख लो, रावण-कौरव-कंस।।

3. ज्ञान का स्वयं का अहंकार भी बड़ा होता है। इसी अहंकार के कारण व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा आसानी से नहीं करता। आलोचना तो जब कहो कर देगा, दूसरे के कार्यों को छोटा आंकना या नकार देना आम बात है। अहंकारी व्यक्ति स्वयं के कार्यों के लिए दूसरों को प्रभावित करने में लगा रहता है। यह एक पक्षीय दृष्टिकोण उसके जीवन का विषाक्त पक्ष बन जाता है। जीवन का सारा संतुलन तार-तार हो जाता है और उसे इसकी अनुभूति ही नहीं होती।

बुद्धिमानी का गर्व भी आत्मा को अधोगति में खींच ले जाता है। कैसी भी तीव्र बुद्धि का धारक मनुष्य जब अहंकार का भोग हो जाता है तब वह चाहे किसी भी पद पर आसीन हो अथवा किसी भी वेष को धारण करने वाला हो तो भी वह एक निर्बुद्धि मनुष्य से भी अधिक अधम कोटि का हो जाता है।

4. अशांति के लिए अहंकार सबसे ज्यादा जिम्मेदार है। कोई मुझे क्यों कहे? वह किसी की सुनना नहीं चाहता। अहं के कारण सभी को सुनाना चाहता है फलस्वरूप इसी भव में अशांति के बीज की बुआई हो जाती है। अहं टकराहट पैदा करके रिश्तों को तोड़ देता है, शांति समाधि को भंग कर देता है। जिस व्यक्ति में जितनी विनम्रता है, अहंकार का जितना विलय है, वही व्यक्ति शांति से रह सकता है।

5. अहंकार का पीपल भक्ति की इमारत को गिरा देता है। आपने देखा होगा कि मकान की दीवार में कभी-कभी पौधे उग जाते हैं। जब वे उगते हैं तो बहुत छोटे होते हैं, मामूली होते हैं। कोई सोच नहीं सकता कि एक दिन यही पौधा पेड़ बनेगा और मकान को तोड़ देगा। इसी प्रकार अहंकार का पौधा अगर जीवन में उग आये तो उसे तुरन्त उखाड़ फैंको वरना कल वह तुम्हें उखाड़ फैंकेगा।

6. अहंकार, केवलज्ञान का स्पीड ब्रेकर है। इतिहास साक्षी है सत्ता और संपत्ति को ठोकर मार कर बाहुबली मुनि बने। केवलज्ञान प्रकटाने के लिए उन्होंने कठोर साधना की, किन्तु उनका ध्यान भीतर में छिपे अहंकार के दानव पर नहीं गया। भगवान् ऋषभदेव ने साध्वी ब्राह्मी और सुन्दरी को प्रतिबोध देने के लिए भेजा। साध्वियों ने कहा- 'भाई मुनि! हाथी से नीचे उतरो।' यह सुनकर उनका चिंतन जागा। मैं कौनसे हाथी पर सवार हूँ? जैसे ही उन्होंने अपने भीतर विराजित अहंकार के हाथी को खोजा और उससे नीचे उतरने का प्रयास किया तो उसी क्षण केवलज्ञान हो गया। बाहुबली मुनि जिस कैवल्य को अति कठिन तप साधना से नहीं साध सके उसे विनम्रता से चिंतन मात्र से साध लिया। इस प्रसंग से स्पष्ट है कि अहंकार से कुछ भी पाया नहीं जा सकता।

7. ''थंभा व कोहा व मयप्पमाया, गुरुस्सगासे विणयं

ण सिक्खे''। (दशवैकालिक, अध्ययन, 9) अहंकार के कारण व्यक्ति गुरुजनों से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। शिक्षा प्राप्ति में अभिमान बाधक है (उत्तराध्ययन, अध्ययन, 11)।

8. संसार के सकल ज्ञानों का सार अहंकार के विगलन (विसर्जन) में है। मनुष्य सब कुछ कर सकता है किन्तु अपने अहंकार को संयम में नहीं रख सकता। इसी कारण इस लोक में बहुत से नहीं करने योग्य कर्म करता रहता है, जिसके कारण उसका इहलोक और परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं।

9. अहंकार यश का नाश करता है। अहंकार का फल क्रोध है। अहंकार में व्यक्ति अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है। वह जिस किसी को अपने से सुखी-सम्पन्न देखता है, ईर्ष्या कर बैठता है। हम अपनी कल्पना में पूरे संसार से अलग हो जाते हैं जबकि ऋजुता, मृदुता और सहिष्णुता हमें यह विचार देती है कि हम पूर्ण स्वतंत्र एक द्वीप की भांति है। यहाँ सभी एक-दूसरे पर निर्भर रहते हुए, सह-अस्तित्व और सहभागिता में जीते हैं।

10. 'माणेणं अहमा गई' (उत्तराध्ययन, अध्ययन, 9, गाथा 54)- मान से नीच गति प्राप्त होती है। कवि ने संगीत की कड़ियों में भी बोध देते हुए कहा है- ''कांई रे गुमान केर आपणो, मान करेगो गुमान करेगो, तो नीची गति मायं जाय पड़ेगो। कांई रे गुमान.....।।'' घमण्डी सभी की दृष्टि में नीचा समझा जाता है, क्योंकि जो नम्र बन कर रहता है दुनिया उसे ही ऊँचा मानती है। इसीलिए कहा जाता है- ''अहंकार को करो नीचा, जीवन बनेगा ऊँचा।''

किस बात का अहंकार और क्यों?

मनुष्य किस बात का अहंकार करता है? मनुष्य के पास अहंकार करने जैसी चीज नहीं है। अहंकार तो वही कर सकता है जो शाश्वत है। मैं सदा परम बना रहूँगा, मैं सदा चरम बना रहूँगा, अविनाशी रहूँगा, जिसके लिये इस बात की गारंटी हो, वही व्यक्ति अहंकार कर सकता है लेकिन नश्वर मानव के लिए ऐसी कोई बात नहीं है। उसे कभी तो रोग आक्रांत कर देता है, कभी सत्ता हाथ से फिसल जाती है, कभी अधिकार और धनवैभव चला जाता है। आखिर कौन सी संपदा है उसकी, जो सदा अक्षुण्ण रहने वाली है। रूप नाशवान, धन नाशवान, बल वैभव नाशवान, शरीर भी नाशवान है फिर किस बात का अभिमान और अहंकार?

एक संन्यासी किसी राजा के पास पहुँचा। राजा ने उसका खूब आदर-सत्कार किया। जाते समय संन्यासी ने राजा से अपने लिए उपहार मांगा। राजा ने एक पल सोचा और कहा-'जो कुछ भी खजाने में है, आप ले सकते हैं।' संन्यासी ने उत्तर दिया- 'लेकिन खजाना तुम्हारी संपत्ति नहीं है, वह तो राज्य का है और तुम मात्र उसके संरक्षक हो।' राजा बोले- 'महल ले लीजिए।' इस पर संन्यासी ने कहा- 'यह भी तो प्रजा का है।'

राजा बोले- 'तो महाराज आप ही बताइए कि ऐसा क्या है जो मेरा है और आपको देने लायक हो?'

संन्यासी ने उत्तर दिया-'तुम सच में मुझे कुछ देना चाहते हो तो अपना अहं दे दो।'

राजा संन्यासी का आशय समझ गए और उसने वचन दिया कि वह अपने भीतर से अहंकार को निकाल कर रहेगा।

वास्तव में मेरा अपना है ही क्या? जिसका मैं अहंकार करूँ। किसी ने ठीक ही कहा है- **'जन्म किसी और ने दिया नाम भी किसी और ने दिया। शिक्षा भी दूसरों की दी हुई है, यहाँ तक कि हमारी अर्थी को कंधा भी दूसरे ही देंगे और श्मशान में भी कोई और ही पहुँचायेंगे, फिर हमारा अपना क्या है? जिस पर हम अभिमान कर सकें।'**

जब हमारा अपना कुछ है ही नहीं, फिर भी हम मैं-मैं और मेरा-मेरा करके व्यर्थ ही अहंकार क्यों करते हैं?

अहं से अर्हं तक की यात्रा

अहंकार का कातिल दोष प्रत्येक जीव में ठूंस-ठूंस कर भरा हुआ है, जो निमित्त मिलते ही खतरनाक रूप से कार्यरत हो जाता है। इस दोष एवं

इसके ह्रास से होती आत्म-विकास की दृष्टि से आत्मा की चार भूमिका इस प्रकार है- 1. अहं, 2. दासोऽहं, 3. सोऽहं और 4. अर्हं।

1. अहं की भूमिका जीव में अनादिकाल से है और अमुक अपेक्षा से यह मिथ्यात्व की कक्षा ही कही जा सकती है। अहंकार करने वाला यह जीव न तो देव को नमस्कार करने की तत्परता दिखाता है और न ही गुरु को नमस्कार करने की तत्परता दिखाता है, पर्वत की तरह उसकी अचल अकड़ता उसमें देव-गुरु के प्रति हार्दिक समर्पण श्रद्धा के साथ नमस्कार के भाव ही प्रकट नहीं होने देती। जो देव-गुरु को मानने को ही तैयार न हो उसकी कक्षा मिथ्यात्व की अवश्य गिनी जा सकती है।
2. दासोऽहं की भूमिका अमुक अपेक्षा से सम्यक्त्व की कही जा सकती है। इस कक्षा में जीव 'भगवान् मेरे स्वामी और मैं भगवान् का दास। गुरु मेरे तारणहार और मैं गुरु का दास (सेवक)' इन भावों से देव गुरु को हृदयपूर्वक अपने से श्रेष्ठ मानकर उनके प्रति श्रद्धापूर्वक नमस्कार के भाव धराता है।
3. सोऽहं की कक्षा वाला महसूस करता है कि जो परमात्मा की अवस्था है वही मेरी आत्मा की अवस्था है। अंतर इतना है कि उनकी यह अवस्था प्रकट हो चुकी है जबकि मेरी यह अवस्था विकसित हो रही है। आज नहीं तो कल मुझमें इस अवस्था का पूर्ण आविर्भाव होगा। अहं के सर्वथा टूटने की इस भूमिका की किसी अपेक्षा से क्षपक श्रेणी के साथ तुलना कर सकते हैं।
4. अर्हं प्रभु भक्ति, अरिहंत प्रभु के सतत ध्यान से यह आत्मा स्वयं राग-द्वेष से, अहं से सर्वथा मुक्त बन कर अर्हं-अरिहंत बनने की कक्षा तक पहुँच जाती है। जैन दृष्टि से इसे तेरहवें गुणस्थान व आगे की स्थिति कहा जा सकता है।

जहाँ अहंकार नहीं वहाँ ममकार नहीं। जहाँ मैं नहीं वहाँ मेरा नहीं और जहाँ दोनों नहीं वहाँ केवल अस्तित्व रहता है परमात्मा का, फिर आत्मा और परमात्मा में भेद नहीं रहता। इस प्रकार अहं का त्याग कर ही व्यक्ति अर्हं बन सकता है।

अहंकार विजय के उपाय

अहंकार यानी व्यक्ति द्वारा मन में छुपाया हुआ रावण। मौका मिलते ही यह रावण अपनी दुष्टता दिखा देता है। रावण या दुर्योधन को अपना ही अहंकार ले डूबा न? अहम् में से 'अ' को हटा दे तो शेष बचता 'हम', मैं नहीं। हम, हमारे की भावना सभी को जोड़ती है जबकि अहं की वृत्ति मानव को एक-दूसरे से अलग करती है। हम और हमारे की भावना की उपेक्षा करने के कारण ही आज दिन तक भयंकर युद्ध हुए हैं और एक-दूसरे के प्रति मोहब्बत के बदले नफरत फैली है। दुनिया में कई तरह के अकाल पड़ते हैं, परन्तु अहंकार का अकाल (दुकाल) कभी नहीं पड़ता। अहंकार का अकाल पड़ जाय तो मानवता सोलह कला से खिल उठे। अहं तथा मम दोनों नम्रता के दुश्मन हैं। व्यक्ति चाहे कितना ही दान क्यों नहीं कर दे, किन्तु अहंकार का बलिदान नहीं करे तो सब व्यर्थ है। अहंकार त्याग, आत्म-जागृति, आत्म-ज्ञान और अर्हं प्राप्ति का राजमार्ग है।

अहंकार कैसे छूटे? इसके उपाय इस प्रकार हैं-

1. अहंकार शून्य बनने के लिए जैनेन्द्रकुमार का कथन है- "यह दुनिया अनेक दुनिया से मिलकर बनी है और मैं इस दुनिया का एक छोटा सा बिन्दु हूँ फिर अहंकार कैसा?" हमें शुभ कर्मोदय से यह मानव जन्म मिला है ऐसा सोच कर नम्रतापूर्वक संवादी जीवन जीएं।
2. हमें अगर कोई सफलता भी मिलती है या हम किसी का कोई कार्य करने में सहयोगी बनते हैं तो हमें किसी प्रकार के कार्य का अहंकार नहीं करना चाहिये, क्योंकि हम तो केवल निमित्त मात्र हैं।
3. दाता रूप से अहंकार छोड़ दें क्योंकि हमको जो कुछ मिला है वह पुण्योदय से और इस दुनिया से मिलता है। कवि रहीम दान देते समय अपनी नज़र नीची रखते थे। जब लोग पूछते कि आप नज़र नीची करके दान क्यों देते हो? तब रहीम उत्तर देते-

'हकीकत में तो दान देने वाला कोई दूसरा ही है इसलिए मैं अपनी नज़र नीची रख कर दान देता हूँ। कवि रहीम व्यक्तिगत रूप से यानी कि निःस्वार्थ भाव से दान देते थे और दान देने का श्रेय लेने के जाल में कभी नहीं फंसते थे।

4. प्रत्येक कार्य करते हुए 'मैं' को दूर करें। वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने निःस्वार्थ भाव से कर्त्तव्य अदा करने के विषय में उचित कहा था-'प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वह दुनिया को कम से कम इतना तो वापस लौटाए जितना वह दुनिया से लेता है।'

5. अहं के कारण ही मनुष्य समझता है कि I am Something (मैं भी कुछ हूँ) वातस्व में तो I am Nothing (मैं तो कुछ भी नहीं हूँ) समझने से ही अहं पर काबू पाया जा सकता है।

6. अहं से मुक्ति पाने के लिए सदैव याद रखें कि जिस चीज का मैं घमण्ड करूँगा, उसी की हीनता मुझे भविष्य में मिलने वाली है, तो ऐसी मूर्खता करने से भला क्या लाभ?

7. तन और रूप का अहंकार आये तो जरा सोचें कि मैं ज़िस नीरोग शरीर का घमण्ड कर रहा हूँ, वह मेरा कितना साथ निभायेगा? अरे, सनतकुमार जैसे चक्रवर्ती भी इस तन का अभिमान करके कुछ पलों में रोग के भागी बन गये तो मेरी क्या औकात? इसलिए इस तन और रूप पर इतराना छोड़ दें। तन पर अभिमान कैसा? आखिर तो इसे राख होना ही है। 'अंत में राख-बस इतना रख याद' क्या हम इतना भी याद नहीं रख सकते?

8. धन आने पर मनुष्य मैं-मैं किया करता है। मेरे पास इतनी सम्पत्ति है, मैंने इतना दान दिया, मैंने उसको इतने रुपयों की सहायता दी आदि। धन का इस तरह घमण्ड करने से पहले सोचें- धन को दौलत भी कहते हैं। दौलत यानी दौलत, जब यह आती है तो पीठ में लात-मारती है तो मनुष्य अकड़ जाता है। सीना तान कर चलता है, हम चौड़े बाजार संकड़ा। जब दौलत जाती है तो पेट में लात मारती है. आदमी झुक जाता है 'हेकड़ी' निकल जाती है। अतः दौलत का घमण्ड क्यों करना? प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से अधिक सामग्री सम्पन्न का विचार करके अहंकार से दूर रहना चाहिये। आगमकार तो फरमाते हैं- "वित्तेण ताणं ण लभे पभत्ते इमम्मि लोए अदुवा परत्थ" (उत्तरा.अ. 4) अर्थात् इस लोक और परलोक दोनों में ही कर्मजन्य दुःख की निवृत्ति में धन से किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल सकती। अतः धन रक्षक नहीं है, ऐसा सोच कर संतोष भाव को अपनाते हुए अहंकार पर विजय करें।

9. थोड़ी-सी बुद्धि की विशेषता पाकर भी जीव स्वयं को ऊँचा और महान् समझने लगता है यहाँ तक कि माता-पिता आदि उपकारी जनों को भी तुच्छ समझने लगता है, बुद्धि के मद में आकर वह अपने उपकारियों का उपकार मानने के बजाय उन्हें अंटशंट बोलने लगता है। अहंकारी भाषा बोल कर उन्हें चुप कर देता है। ऐसे समय याद करें बुद्धि निधान अभयकुमार को, जो कि राज्य के प्रधानमंत्री थे, सत्ता उनके पास में थी, कई समस्याओं का समाधान वे चुटकी में निकाल देते थे। फिर भी वे अभिमानी नहीं बने, विनम्र बने रहे। उनकी निर्मल, तीक्ष्ण और प्रत्युत्पन्न मति के सामने अपनी बुद्धि कहाँ ठहर पायेगी?

हमें तो अपनी बुद्धि को अनंतज्ञानियों के नाप से नापना सीखना चाहिये और जो इस प्रकार अपनी बुद्धि को नापना जानता हो, वह अनन्त ज्ञानियों की शरण में ही अपनी बुद्धि को समर्पित कर देगा और कितनी ही तीव्र बुद्धि क्यों नहीं हो उसका तनिक भी गर्व नहीं करेगा।

10. सत्ता बल, धन बल, बुद्धि बल, तन बल आदि सभी संयोगों को पाकर भी अहं का वियोग होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। संसार क्या है? सुख-दुःख का मिश्रण है, सुख-दुःख को देने वाला कोई और नहीं अपितु जीव के स्वयं के ही वर्तमान काल या भूतकाल के कर्म हैं। राजा भर्तृहरि ने संसार का

त्याग कर वैराग्य शतक की रचना की। उन्होंने भी कहा कि-

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
स्वयं करोति वृथाभिमानं,
स्वकर्मसूत्रात् ग्रथितो हि लोकः।।

सुख और दुःख का कोई अन्य दाता नहीं है। दूसरा कोई सुख-दुःख देता है, यह कुबुद्धि है। मैंने किसी का कुछ भला किया है, यह भी वृथा अभिमान है। वास्तव में स्वकर्म के सूत्र से ही यह लोक चलता है। अतः जब पुण्योदय हो तो सुख को पाकर फूले नहीं, सुख का अहंकार नहीं करें क्योंकि सुख के बाद दुःख आने वाला है। पर हर कोई बड़ा दिखना चाहता है। इस कारण अभिमान के नशे में फूलने लगता है। अहंकारी व्यक्ति की स्थिति है-

अंकुरित होने के पहले बीज 'फूल' जाता है,
धन ज्यादा होने पर आदमी फूल जाता है।
बीज फूल कर तो 'फल' देता है मगर,
आदमी फूल कर सब कुछ भूल जाता है।।

11. अहंकार का त्याग करने के लिए अपनी जीवन शैली को फव्वारे की तरह बनाओ। फव्वारा बहुत ऊँचा जाकर भी तुरन्त उतर्ना हा तेजी से गर्दन को नीचे की तरफ झुका देता है तभी वह देखने वालों को भी खुशी देने में सक्षम बनता है। ऐसे ही मनुष्य हायर लेवल पर पहुँच कर भी विनम्रता को जीवन का अंग बना ले तो सभी के लिए आदर्श रूप बन सकता है।

उपसंहार

मानव अहंकार प्रधान प्राणी है। उसे 'अहं' सबसे अधिक प्रिय है। जिस वस्तु के साथ वह अहं को जोड़ लेता है वह वस्तु भी उसे प्रिय लगती है। इस प्रकार वह अपने अहंकार के जाल में ऐसा गिरफ्त हो जाता है कि दुःखी होने पर भी अहं के पर्वत से नीचे नहीं उतर पाता। इससे विपरीत जो अहंकार को जीत लेता है वह विनम्रता के शिखर पर पहुँच जाता है।

अहंकार को जीतने का सर्वश्रेष्ठ उपाय आगमकार फरमाते हैं- ''माणं मद्दवया जिणे'' (दशवैकालिक, अध्ययन 8, गाथा 39) मृदुता (विनय भाव, नम्रता) से मान को जीते। अहंकार का त्याग कर विनय को अपनाने वाला इसलोक और परलोक में सुखी होता है। कहा जाता है-

जो प्रभु के सामने झुकता है,
वह सबको अच्छा लगता है।
लेकिन जो सबके सामने झुकता है,
वह प्रभु को अच्छा लगता है।।

रावण के पास किस चीज की कमी थी? सोने की लंका, सत्ता का सर्वत्र डंका, अद्भुत पराक्रम, प्रकाण्ड विद्वत्ता, अनूठी भक्ति इत्यादि भौतिक तथा अलौकिक अनेक विशेषताएँ थीं, फिर भी उसे बर्बाद क्यों होना पड़ा? क्यों उसके खानदान का विनाश हुआ? कारण था उसकी अहंकारी जीवन शैली। रावण ने **EGO** को **GO** करने की कला नहीं सीखी तो उसकी सारी विशेषताओं का गमन हो गया। उसका गरुर और मगरुर उसके सरुर को स्वाहा कर गया। अहंकार की आड़ में न आकांक्षापूर्ति हुई, न किसी के आशीर्वाद काम आए एवं न ही शक्ति काम आई बल्कि आर्त्तनाद करते हुए मरना पड़ा।

आज भी घर, परिवार, समाज में सर्वत्र ऐसी ही परिस्थितियाँ नजर आ रही हैं। अहंकार के बल पर क्या नहीं हो रहा है घर, परिवार, समाज बिखर रहे हैं, दिल टूट रहे हैं आपसी मनमुटाव बढ़ रहा है। इतना ही नहीं वैर की स्थिति इतनी भयानक परिणाम ला रही है कि व्यक्ति मानो आतंकवादी और आत्मद्रोही बनता जा रहा है। बढ़ती हुई आपराधिक मानसिकता का कारण है- विनम्रता का अभाव। यदि हम अहंकार का त्याग कर विनम्रता को जीवन शैली का अंग बना लें तो आनन्द का झरना फूट पड़ेगा। अहंकार के कारण 'टेंशन होम' बना कर घर विनय (नम्रता) से 'हेप्पी होम' बन जायेगा।

-7/14, उत्तरी नेहरु नगर, बिट्ठल बस्ती,
ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.)

दिगम्बर आगम षट्खण्डागम एवं कसायपाहुड में वर्णित मान कषाय का स्वरूप

डॉ. योगेशकुमार जैन

कषाय का सामान्य स्वरूप- आत्मा के अंतरंग कलुष परिणाम को कषाय कहते हैं। यद्यपि क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार ही कषाय लोक में प्रसिद्ध हैं, परन्तु इनके अतिरिक्त कषाय के अनेकानेक नाम आगम एवं दर्शन ग्रन्थों में मिलते हैं। मूल कषायों के अतिरिक्त नौ नो-कषायों का विवेचन आगमों में प्राप्त होता है- हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद ये नो-कषाय कही जाती हैं, क्योंकि ये कषायवत् व्यक्त नहीं होती। इन सबको राग व द्वेष में गर्भित किया जा सकता है। आत्मा के स्वरूप का घात करने के कारण कषाय ही हिंसा है। मिथ्यात्व सबसे बड़ी कषाय है।

कषाय के चार प्रकार कहे गए हैं- अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन। कषाय के ये भेद जीव की विषयों के प्रति आसक्ति की अपेक्षा से किये गये हैं। यह आसक्ति भी क्रोधादि कषायों द्वारा ही व्यक्त होती है इसीलिए इन चारों के क्रोधादि के भेद में चार-चार भेद करके कुल 16 भेद किये गये हैं। संभव है कि किसी व्यक्ति में क्रोधादि की मंदता स्पष्ट दिखती हो, परन्तु अंतरंग में विषयों के प्रति आसक्ति की तीव्रता हो। यह भी संभव है कि क्रोधादि की तीव्रता दिखाई दे, परन्तु आसक्तिभाव मंदतम हो। यही कारण है कि क्रोधादि की तीव्रता-मंदता को लेश्या द्वारा निर्दिष्ट किया गया है और आसक्ति की तीव्रता-मंदता को अनन्तानुबन्धी आदि द्वारा।

कषायों की शक्ति अचिन्त्य हैं। कभी-कभी तीव्र कषाय के वशीभूत आत्मा के प्रदेश शरीर से निकलकर अपने शत्रु का घात तक कर आते हैं, इसे ही कषाय समुद्घात कहते हैं।

कषाय का लक्षण-

सुहदुक्खं बहुससस्सं कम्मक्खित्तं कसेइ जीवस्स।
संसारगदी मेरं तेण कसाओ त्ति णं विंति।।[1]

अर्थात् जो क्रोधादिक जीव के सुख-दुःख रूप बहुत प्रकार के धान्य को उत्पन्न करने वाले कर्मरूप खेत का कर्षण करते हैं अर्थात् जोतते हैं और जिनके लिए संसार की चारों गतियाँ मर्यादा या मेढ़ रूप हैं? इसलिए उन्हें कषाय कहते हैं।

सर्वार्थसिद्धिकार लिखते हैं कि-

कषाय इव कषाया:। क उपमार्थ:। यथा कषायो नैयग्रोधादि: श्लेषहेतुस्तथा क्रोधादिरप्यात्मन: कर्मश्लेषहेतुत्वात् कषाय इव कषाय इत्युच्यते।[2]

तात्पर्य यह है कि कषाय अर्थात् क्रोधादि कषाय के समान होने से कषाय कहलाते हैं। उपमा रूप अर्थ को स्पष्ट करते हुये लिखा है कि जिस प्रकार नैग्रोधादि कषाय श्लेष का कारण है उसी प्रकार आत्मा का क्रोधादि रूप कषाय भी कर्मों के श्लेष का कारण है। अत: कषाय के समान यह कषाय है। राजवार्तिककार के अनुसार कषाय आत्मा के स्वाभाविक रूप को कष देती है, उसे प्रगट नहीं होने देती है, उसकी हिंसा करती है अत: क्रोधादि स्वभाव वाली यह कषाय है।[3]

मार्गणा स्थान के अंतर्गत कषाय मार्गणा का स्वरूप एवं भेद-

षट्खंडागम के अनुसार कषाय मार्गणा का स्वरूप इस प्रकार है-

कसायाणुवादेण अत्थि कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई अकसाई चेदि।[4]

अर्थात् कषाय मार्गणा के अनुवाद से जीव क्रोध, मान, माया और लोभ कषायी होते हैं तथा अकषायी भी होते हैं। अकषाय को स्पष्ट करते हुए सर्वार्थसिद्धिकार लिखते हैं- **ईषदर्थे नञः प्रयोगा-दीषत्कषायोऽकषाय इति।**[5] अर्थात् यहाँ ईषत् अर्थात् किंचित् अर्थ में 'नञ्' का प्रयोग होने से किंचित् कषाय को अकषाय या नोकषाय भी कहते हैं। जिनके अपने आप को, पर को और उभय को बाधा देने, बन्ध करने और असंयम के आचरण में निमित्तभूत क्रोधादि कषाय नहीं हैं तथा जो बाह्य और आभ्यंतर मल से रहित हैं, ऐसे जीवों के अकषाय जानना चाहिए।[6]

कषाय जीव का गुण नहीं विकार है

धवला में कषाय के संदर्भ में एक प्रश्न उपस्थापित करके कषाय को जीव का विकार सिद्ध किया गया है। धवलाकार लिखते हैं कि ज्ञान और दर्शन का विनाश होने पर जीव का विनाश भले ही हो जाये, क्योंकि वे जीव के लक्षण हैं। किन्तु कषाय तो जीव का लक्षण नहीं है, क्योंकि कर्म जनित कषाय को जीव का लक्षण मानने में विरोध आता है। कषायों का कर्म से उत्पन्न होना असिद्ध भी नहीं है, क्योंकि कषायों की वृद्धि होने पर जीव के लक्षणभूत ज्ञान की हानि होती देखी जाती है। यह हानि अन्य किसी कारण से संभव नहीं है, अत: कषायों का कर्म जनित होना सिद्ध है।

चारों गतियों की अपेक्षा से कषायों का वर्गीकरण-

गोम्मटसार जीवकाण्ड में नेमीचन्द्र सिद्धान्ताचार्य लिखते हैं-

णारयतिरिक्खणरसुरगईसु उप्पण्णपढमकालम्हि।
कोहो माया माणो लोहुदओ अणियमो वापि।।[7]

अर्थात् नरक, तिर्यंच, मनुष्य एवं देव गति में उत्पन्न जीव के प्रथम समय में क्रमश: क्रोधादि चारों कषायों का ही उदय रहता है। यह अभिमत यतिवृषभाचार्य का है परन्तु षट्खण्डागम के अनुसार किसी भी कषाय का उदय कभी भी रह सकता है। क्रोधादि कषाय का कोई नियम नहीं है।

कषायों का राग-द्वेषादि में अन्तर्भाव-

नैगमादि पाँच नयों की अपेक्षा क्रोधादि कषाय में राग-द्वेष का भेद[8]-

कषाय	नैगम	संग्रह	व्यवहार	ऋजुसूत्र	शब्द
क्रोध	द्वेष	द्वेष	द्वेष	द्वेष	द्वेष
मान	द्वेष	द्वेष	द्वेष	द्वेष	द्वेष
माया	राग	राग	द्वेष	द्वेष	द्वेष
लोभ	राग	राग	राग	राग	द्वेष एवं कथंचित् राग
हास्य-रति	राग	राग	द्वेष		
अरति-शोक	द्वेष	द्वेष	द्वेष		
भय-जुगुप्सा	द्वेष	द्वेष	द्वेष		
स्त्री-पुरुष वेद	राग	राग	राग		
नपुंसक वेद	राग	राग	द्वेष		

षट्खंडागम के अनुसार मान कषाय का स्वरूप–

जो सुख–दु:ख को उत्पन्न करने वाले कर्मरूपी क्षेत्र का कर्षण करे, आत्मा के सम्यग्दर्शन, संयमासंयम, सकलसंयम और यथाख्यातचारित्र को न होने दे, उसे कषाय कहते हैं। कषाय के चार भेद हैं- क्रोध, मान, माया और लोभ। संसार के क्षुद्र से क्षुद्र एकेन्द्रिय प्राणी से लेकर चारों गतियों के पंचेन्द्रिय प्राणियों तक सभी में ये चारों कषायें पाई जाती हैं। नववें गुणस्थान में क्रोध, मान, माया कषाय का क्षय होता है। लोभ कषाय का उदय दशवें गुणस्थान तक पाया जाता है। दशवें के अन्त में ही लोभ कषाय का क्षय होता है। ग्यारहवें से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक के जीव अकषाय होते हैं।[9]

धवला के अनुसार– 'रोषेण विद्यातपोजात्यादिमदेन वान्यस्यावनति।'[10] अर्थात् रोष से अथवा विद्या तप और जाति आदि के मद से दूसरे के तिरस्कार रूप भाव को मान कहते हैं। मान, गर्व और स्तब्धत्व ये एकार्थवाची ही हैं।[11]

विज्ञानैश्वर्यजातिकुलतपोविद्याजनितो जीव-परिणाम: ओद्धत्यात्मको मान:।[12]

अर्थात् विज्ञान, ऐश्वर्य, जाति, कुल, तप और विद्या के निमित्त से उत्पन्न उद्धत रूप जीव का परिणाम मान कहलाता है।

नियमसार टीकाकार लिखते हैं–

कवित्व कौशल के कारण, समस्त जनों से पूजनीय पने से, कुल–जाति की विशुद्धि से, निरूपम बल से, सम्पत्ति की वृद्धि से, विलास से, सात ऋद्धियों से अथवा शरीर लावण्यरस के विस्तार से होने वाला जो आत्म अहंकार है वह मान है।[13] मान कषाय को विशेष रूप से जानने के लिए मान के भेद स्वरूप आठ मदों का स्वरूप जानना अति आवश्यक है। इनके अभाव से ही मान रहित आत्म स्वभाव की प्राप्ति संभव है।

मूलाचार के अनुसार– 'विज्ञानमैश्वर्यं आज्ञा कुलबल–तपोरूपजाति: मदा:।'[14] अर्थात् विज्ञान, ऐश्वर्य, आज्ञा, कुल, बल, तप, रूप और जाति ये आठ मद हैं। इन मदों से आतप्त जीव कभी भी निष्कषायी नहीं हो सकता तथा आत्म स्वभाव को प्राप्त नहीं कर सकता।

छहढालाकार पण्डित दौलतरामजी मान कषाय का स्वरूप एवं उसके त्याग की भावना भाते हुए लिखते हैं–

'जे ख्याति-लाभ पूजादि चाह,
धरि करत विविध-विध देह दाह।
आतम-अनात्म के ज्ञान हीन,
जे जे करनी तन करन छीन।।
ते सब मिथ्याचारित्र त्याग,
अब आतम के हित पंथ लाग।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग,
अब 'दौलत' निज आतम सुपाग।।'

यहीं पर तीसरी ढाल में सम्यग्दर्शन के आठ गुणों के स्वरूप एवं दोष का विवेचन करते हुए वे कहते हैं कि जिस जीव में सम्यग्दर्शन की श्रद्धा नहीं होती उसमें सम्यक्श्रद्धा के विपरीत आठ मदों का समावेश सहज मानना चाहिए। वे लिखते हैं–

धर्मी सों गौ-बच्छ प्रीति-सम, कर जिन-धर्म दिपावै।
इन गुन तैं विपरीत दोष वसु, तिनको सतत खिपावै।।
पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय न तो मद ठानै।
मद न रूप कौ, मद न ज्ञान कौ, धन-बल कौ मद भानै।।
तप कौ मद न मद जु प्रभुता कौ, करै न सो निज जानै।
मद धारै तो येहि दोश वसु, समकित को मल ठानै।।

कषाय पाहुड में मान कषाय का स्वरूप–

मान कषाय के स्वरूप के उपरांत कषाय के भेद–प्रभेद की विशद व्याख्या कसाय पाहुड में इस प्रकार की गई है।

कोहो चउव्विहो वुत्तो माणो वि चउविवहो भवे।
माया चउव्विहा वुत्ता लोहो वि य चउव्विहो।।
णग-पुढवि-वालुगोदयराईसरिसो चउव्विहो कोहो।
सेलघण-अट्ठि-दारूअ लदासमाणो हवदि माणो।।[15]

अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ के चार–

चार प्रकार होते हैं। गुणधराचार्य ने मान के निम्न चार प्रकार बताये हैं- शैलघन समान, अस्थि समान, काष्ठ समान और लतासमान।

शैलघन समान मान कषाय- जिस प्रकार शैलघन/शिलास्तम्भ अथवा पत्थर का खम्भा कभी भी किसी उपाय से कोमल नहीं हो सकता, उसी प्रकार जो मान कषाय अथवा ऐसी मान कषाय से युक्त जीव गुरु आदि के उपदेश मिलने पर भी जो मान दूर न हो सके, उसे शैलघन सदृश मानकषाय जानना चाहिए।

अस्थि समान मान कषाय- जैसे पाषाण से अस्थि कुछ कोमल होती है, वैसे ही जो मान कषाय शैलसमान मान से मन्द अनुरागवाली हो, उसे अस्थि के समान जानना चाहिए।

काष्ठ/दारू के समान मान कषाय- जिस प्रकार अस्थि से काष्ठ और भी मृदु होता है, उसी प्रकार जो मान कषाय अस्थि से भी मन्द अनुभाग वाली हो और प्रयत्न से कोमल हो सके, उसे काष्ठ के समान मान कषाय जानना चाहिए।

लता समान मान कषाय- जो मान कषाय लता के समान मृदु हो अर्थात् शीघ्र दूर हो जाये, उसे लता समान मान कषाय कहा जाता है।

इस प्रकार परिणामों की तीव्रता एवं मंदता की अपेक्षा मान कषाय के चार भेदों का वर्णन किया गया है।

क्रोधादि कषायों में स्थिति-अनुभाग और प्रदेश की अपेक्षा हीनाधिकता का विवचेन-

माणे लदासमाणे उककस्सा वग्गणा जहण्णादो।
हीणा च पदेसग्गे गुणेण णियमा अणंतेण।।[16]

अर्थात् लता मान कषाय में उत्कृष्ट वर्गणा अर्थात् अन्तिम स्पर्धक की अन्तिम वर्गणा, जघन्य वर्गणा से अर्थात् प्रथम स्पर्धक की पहली वर्गणा से प्रदेशों की अपेक्षा नियम से अनन्तगुणी हीन है। किन्तु अनुभाग की अपेक्षा जघन्य वर्गणा से उत्कृष्ट वर्गणा निश्चय से अनन्तगुणी अधिक जानना चाहिए। इसी प्रकार शेष पन्द्रह स्थानों में भी जानना चाहिए।

मान कषाय में परस्थान सम्बन्धी अल्प बहुत्व का विवेचन-

णियमा लदासमादो दारूसमाणो अणंतगुणहीणो।
सेसा कमेण हीणा गुणेण णियमा अणंतेण।।[17]

अर्थात् लता समान मान से काष्ठ समान मान के प्रदेशों की संख्या नियम से अनन्तगुणी हीन है। इसी क्रम से शेष अर्थात् दारू समान मान से अस्थि समान मान और अस्थि समान मान से शैल समान मान नियम से अनन्तगुणा हीन है।

णियमा लदासमादो अणुभागग्गेण वग्गणग्गेण।
सेसा कमेण अहिया गुणेण णियमा अणंतेण।।
संधीदा संधी पुण अहिया णियमा च होइ अणुभागे।
हीणा च पदेसग्गे दो वि य णियमा विसेसेण।।[18]

अर्थात् लता समान मान से शेष स्थानीय मान अनुभाग की अपेक्षा और वर्गणाग्र की अपेक्षा क्रमशः नियम से अनन्तगुणित अधिक होते हैं। विवक्षित सन्धि से अग्रिम सन्धि अनुभाग की अपेक्षा नियम से अनन्तभागरूप विशेष से अधिक होती है और प्रदेशों की अपेक्षा नियम से अनन्तभाग से हीन होती है।

विवक्षित कषाय की विवक्षित स्थानीय अन्तिम वर्गणा और तदग्रिम स्थानीय आदि वर्गणा को सन्धि कहते हैं। अर्थात् जहां पर विवक्षित लतादि स्थानीय अनुभाग की समाप्ति हो और दारू (काष्ठ) आदि स्थान वाले अनुभाग प्रारम्भ हो, उस स्थल को सन्धि कहते हैं।

क्रोधादि कषायों के भेदों में सर्वघाती और देशघाती का स्वरूप-

सव्वावरणीयं पुण उक्कस्सं होइ दारूअसमाणे।
हेट्ठा देसावरणं सव्वावरणं च उवरिल्लं।।
एसो कमो च माणे मायाए णियमसा दु लोभे वि।
सव्वं च काहकम्मं चदुसु ट्ठाणेसु बोद्धव्वं।।[19]

अर्थात् दारूसमान स्थान में जो उत्कृष्ट अनुभाग अंश है, वह सर्वघाती है तथा उससे अधस्तन भाग देशघाती है और उपरितन भाग सर्वघाती है। यही

क्रम नियम से क्रोध, मान, माया और लोभ कषाय सम्बन्धी चारों स्थानों में निरवशेष जानना चाहिए।

क्रोधादि कषायों के सोलह स्थानों की विशेषता–

क्रोधादि के सोलह स्थान यथासंभव संज्ञियों में, असंज्ञियों में, पर्याप्त में, अपर्याप्त में, सम्यक्त्व में, मिथ्यात्व में और सम्यग्मिथ्यात्व में जानना चाहिए। ये सोलह स्थान यथा संभव गति आदि चौदह मार्गणाओं में पाये जाते हैं। ये ही सोलह स्थान अविरति में, विरति में, विरताविरत में, अनाकार उपयोग में, साकार उपयोग में, योग में और लेश्या में भी जानना चाहिए।

मान महाविष रूप, करहि नीच-गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा।।
उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन को कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद माहिं ते आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया।।
रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल बुदबुदा।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा।।[20]

इस प्रकार जैन आगमों में विशेषत: कषाय पाहुँण एवं षट्खण्डागम में मान कषाय का विवेचन किया गया है। मान कषाय की प्रवृत्ति विशेषत: मनुष्यगति में पायी जाती है अत: हमें मान कषाय के अभाव रूप मार्दवधर्म के स्वरूप को आत्मा में प्रगट करने का परम पुरुषार्थ करना चाहिए।

संदर्भः–

1. पंच संग्रह, 1.109 तथा धवला, 1/1.1.4/141.5
2. सर्वार्थसिद्धि, 6.4.320.9
3. कषायवेदनीयस्योदयादात्मनः कालुष्यं क्रोधादिरूप-मुत्पद्यमानं 'कषत्यात्मानं हिनस्ति' इति कषाय इत्युच्यते। 2.6.2.108.28
4. षट्खण्डागम, 1/1.1, सूत्र 111/348
5. सर्वार्थसिद्धि, 8.9.385.11
6. अप्पपरोभयबाहणबंधा संजमणिनिमित्तको होई।
   जेसिं णत्थि कसाया अमला अकसाइणो जीवा।।
   -पंचसंग्रह, गाथा 1.116
7. गोम्मटसार जीवकाण्ड, 288
8. धवला, 12.4, 2,8,8/283.8
9. षट्खण्डागम, 1.1.111-114
10. धवला, 1/1.1.1./111/349/7
11. धवला, 3/1.9-1.23/41/4
12. धवला, 13/4.2.8.8/283/6
13. नियमसार, टीका, 112
14. मूलाचार, 53
15. कषाय पाहुड सुत्त, 8.70-71
16. कषाय पाहुड सुत्त, 8.75
17. कषाय पाहुड सुत्त, 8.76
18. कषाय पाहुड सुत्त, 8.77-78
19. कषाय पाहुड सुत्त, 8.79-80
20. दसलक्षण महापर्व पूजन, द्यानतरायजी कृत।

-सहायक आचार्य,
जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ, जिला-नागौर (राज.)

जीने का अन्दाज़

श्रीमती सुमन डागा

फूल कभी भी पौधे से इस बात की शिकायत नहीं करता कि उसकी पंखुड़ियाँ दूसरे फूल से कम क्यों हैं? या उसका रंग रूप दूसरे फूल की अपेक्षा कम खूबसूरत क्यों है? वह अपनी छोटी-सी उम्र को पूरी शान और मस्ती से जीता है, और साथ ही पूरी बगिया को भी महकाता है तो फिर हम जीवन की इन मुश्किलों से घबराकर अपने जीने का अंदाज क्यों खो देते हैं, क्यों दुःखी होते हैं। ये संसार है यहाँ सब तरह के लोग होते हैं, हम हमारी मस्ती में रहें। ये ही होता है जीने का अन्दाज़।

-'लक्ष्य' 76, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

लोभ कषाय : परिभाषा, दुष्परिणाम तथा परिहार

डॉ. सुषमा सिंघवी

किसी भी प्रकार का सुख या आनन्द देने वाली वस्तु के सम्बन्ध में मन की ऐसी स्थिति को, जिसमें उस वस्तु के अभाव की भावना होते ही उसकी प्राप्ति, सान्निध्य या रक्षा की प्रबल इच्छा जग पड़े, लोभ कहते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लोभ का यह स्वरूप परिभाषित करते हुए वस्तु के ग्रहण की अपेक्षा मन की परिग्रही स्थिति को लोभ-कषाय की उत्पत्ति में कारण माना है।

लोभ मन की ऐसी दशा है जिसमें व्यक्ति दूसरे की वस्तु को लेना चाहता है किन्तु अपनी वस्तु को देना नहीं चाहता या नष्ट नहीं होने देना चाहता है। यद्यपि सुख देने वाली वस्तु पास में होने पर भी मन में इस इच्छा का बीज रहता है कि उसका अभाव या कमी न हो, किन्तु अभाव या कमी का जब तक ध्यान नहीं होता तब तक लोभ कषाय का पता नहीं रहता। जब तक मन में प्राप्त होने योग्य सुख या प्राप्त सुख के अभाव या कमी होने का खयाल नहीं आता या अभाव या कमी की कोई आशंका या कल्पना नहीं आती तब तक लोभ की अभिव्यक्ति नहीं होती। अतः लोभ का सम्बन्ध आन्तरिक परिग्रह या आसक्ति से है।

लोभ के दो अवयव हैं- 1. संवेदनात्मक, 2. इच्छात्मक।

किसी वस्तु का बहुत अच्छा लगना, किसी वस्तु से बहुत सुख का अनुभव होना, इस प्रकार अच्छी वस्तु को देखकर लुभा जाना यह लोभ का संवेदनात्मक अवयव है, किन्तु किसी वस्तु के बहुत अच्छा लगने मात्र से इसे लोभ, कषाय नहीं कहा जाता, क्योंकि इस अवस्था में लोभ की पूरी अभिव्यक्ति नहीं होती। जब संवेदनात्मक अवयव के साथ इच्छात्मक अवयव का संयोग होता है अर्थात् उस वस्तु को प्राप्त करने की, दूर न करने की, नष्ट न होने देने की तीव्र इच्छा होगी तभी लोभ कषाय प्रकट होगा। इच्छा-आसक्ति-राग की तीव्रता लोभ कषाय का अनिवार्य अंग है; यही इच्छात्मक अवयव का संयोग है। केवल अच्छा लगने को 'चाहना' या 'लुभाना' कहते हैं, लोभ नहीं। वस्तु के सम्बन्ध में इच्छा दो प्रकार की होती हैं- 1. प्राप्ति या सान्निध्य की इच्छा। 2. रक्षा की इच्छा अर्थात् दूर न करने या नष्ट न होने देना की इच्छा। प्राप्ति या सान्निध्य की इच्छा भी दो प्रकार की होती है। प्रथम जैसे जब प्राप्ति या सान्निध्य की इच्छा से मन में वस्तु के इतने सम्पर्क और सान्निध्य (ममत्व भाव) की इच्छा हो जितना सम्पर्क सान्निध्य और किसी का नहीं हो, तब यह इच्छा प्रतिषेधात्मक होने से विरोध उत्पन्न करती है और लोभ की श्रेणी में आ जाती है; जैसे- संचित सम्पत्ति या साधनों का अन्य द्वारा उपयोग तथा उपभोग नहीं होने देने की इच्छा। और दूसरा प्रकार यह है कि जब प्राप्ति या सान्निध्य की इच्छा इतने सम्पर्क (अपनेपन मात्र) की होती है कि उस वस्तु से सभी लोग या बहुत से लोग सम्पर्क की इच्छा रखते हों तो भी मन में बुरा नहीं लगता, तो उस प्राप्ति या सान्निध्य की इच्छा को लोभ नहीं कहा जाता क्योंकि ऐसी इच्छा, एक ही वस्तु के सम्बन्ध में बहुत से लोग, बिना किसी विरोध के रख सकते हैं; जैसे- बगीचे में बहुत से लोगों के टहलने में विरोध नहीं होने से बगीचे में टहलने की इच्छा को लोभ नहीं कहा जाता।

प्राप्ति की रक्षा की इच्छा भी दो प्रकार की होती है- 1. अपने अधिकार में रखने की इच्छा (स्वायत्त रक्षा की इच्छा), 2. केवल बने रहने देने की इच्छा (स्व निरपेक्ष रक्षा की इच्छा)

वस्तुओं को केवल अपने अधिकार में रखने की इच्छा से व्यक्ति की उपभोग-परिभोग की आसक्ति बढ़ती है, अधिकार भाव बढ़ता है, वह दूसरों की दखल बर्दाश्त नहीं करता, ममत्व और आसक्ति सीमातीत होने से विरोध की स्थिति उत्पन्न हो जाती है ऐसी स्वायत्त रक्षा की इच्छा लोभ का रूप है।

जब वस्तु की रक्षा की इच्छा में स्वार्थ नहीं होता, 'वस्तु बनी रहे' केवल यह भाव होता है, वस्तु के सार्वजनिक उपयोग होने में बाधा नहीं होती तो वह प्राप्त की रक्षा की इच्छा लोभ नहीं कहलाती।

संरक्ष्य वस्तु का उपभोग कोई दूसरा नहीं करे यह दृष्टि उपभोक्ता का परिग्रह है, किन्तु संरक्ष्य वस्तु का उपभोक्ता कोई जरूरतमन्द हो, या उसके अपने उपभोग से किसी अन्य को कतई बाधा न पहुँचे तो वह अपरिग्रह की दिशा में प्रयाण है।

लोभ शब्द कहने से आजकल प्रायः केन्द्र में धन के लोभ की भावना होती है। प्राप्ति या रक्षा की उस इच्छा की ओर ध्यान नहीं जाता है जो सुखों की प्राप्ति, कष्टों का निवारण या जीवन निर्वाह की सामग्रियों के प्रति होती है। लोग संसार में कई कारणों से धन का परिग्रह-संग्रह करते हैं- 1. घोर कष्ट निवारण के लिये। 2. अधिक सुख की प्राप्ति के लिये। 3. भविष्य में सुख के अभाव या कष्ट की आशंका से। 4. बिना किसी उद्देश्य-भावना के। इनमें प्रथम श्रेणी के लोग धन की इच्छा करें, धन के लिए आतुर हों तो भी वे लोभी नहीं कहलाते। पेट भर अन्न के लिये, शीत-ग्रीष्म से शरीर के बचाव के लिये, जीवन-निर्वाह के लिये धन की इच्छा और प्राप्ति का प्रयास लोभ नहीं है। दूसरी श्रेणी के लोगों पर लोभ-कषाय के आरोप की सम्भावना बढ़ते-बढ़ते चतुर्थ श्रेणी के लोगों पर जाकर यह लोभ कषाय की सम्भावना अनन्तानुबन्धी कषाय की कोटि तक पहुँच जाती है। आवश्यकता पूर्ति से बढ़कर जब साधन-संग्रह इच्छापूर्ति की इच्छा से होता है तो लोभ की श्रेणी प्रारम्भ हो जाती है।

धन की कितनी इच्छा लोभ का लक्षण हो, इसका निर्णय सापेक्ष होने से कठिन है तथापि किसी मनोविकार या कषाय भाव की सीमा का अतिक्रमण प्रायः वहाँ समझा जाता है जहाँ और मनोवृत्तियाँ दब सी जाती हैं। लोग कहते हैं कि व्यक्ति लोभ में अन्धा हो जाता है उसे और कुछ नहीं सूझता।

क्रोध आदि अन्य कषायों से लोभ भिन्न है। जैसे क्रोध जिन बातों पर आता है, उन्हें ढूँढने में क्रोधी प्रवृत्त नहीं होता या कभी-कभी क्रोध में आग बबूला इन्सान भी तुरन्त करुणा से आर्द्र एवं लज्जा से पानी-पानी भी हो जाता है इस प्रकार क्रोध आदि में अन्य मनोविकारों का स्तम्भन क्षणिक होता है किन्तु धन का लोभ धन पाकर लोभ से निवृत्त नहीं हो जाता, या तो वह भले-बुरे का विचार छोड़कर धन की रक्षा में तत्पर दिखाई देता है या और अधिक धन प्राप्ति में रत हो जाता है। लोभ से अन्य मानसिक वृत्तियों का जो स्तम्भन होता है, वह उसका स्वभाव बन जाता है। इस प्रकार लोभ के दो प्रमुख दुष्परिणाम सामने आते हैं- 1. असन्तोष, 2. अन्य विधेयात्मक वृत्तियों का दमन।

लोभ चाहे जिस वस्तु का हो, जब बहुत बढ़ जाता है तब उस वस्तु की प्राप्ति, सान्निध्य या उपयोग से जी नहीं भरता। मनुष्य चाहता है कि वह बार-बार मिले या बराबर मिलता रहे। धन का लोभ जब रोग होकर चित्त में घर कर लेता है तब प्राप्ति होने पर भी और प्राप्ति की इच्छा बराबर जगी रहती है जिससे मनुष्य सदा आतुर और प्राप्त के आनन्द से विमुख रहता है। जितना नहीं है उतने के पीछे जितना है उतने से प्रसन्न होने का उसे कभी अवसर ही नहीं मिलता। उसका सारा अन्तःकरण सदा अभावमय रहता है। उसके लिए जो है वह भी नहीं है। असंतोष अभाव-कल्पना से उत्पन्न दुःख है, अतः जिस किसी में यह अभाव-कल्पना स्वाभाविक हो जाती है, सुख से उसका नाता सब दिनों के लिये टूट जाता है। न किसी को देखकर वह प्रसन्न होता है और न उसे देखकर कोई प्रसन्न होता है।

धन का जो लोभ मानसिक व्याधि या व्यसन के रूप में होता है उसका प्रभाव अन्तःकरण की शेष वृत्तियों पर यह होता है कि वे अनभ्यास से कुण्ठित हो जाती हैं। जो लोभ, मान-अपमान के भावों को, करुणा और दया के भाव को, न्याय-अन्याय के भाव को, यहाँ तक कि अपने कष्ट-निवारण या सुखभोग की इच्छा तक को दबा दे, वह मनुष्यता कहाँ तक रहने देगा? जो अनाथ विधवा का सर्वस्व हरण करने के लिए कुर्क जमीन लेकर चढ़ाई करते हैं, जो अभिमानी धनिकों की दुतकार सुनकर त्योरी पर बल नहीं आने देते, जो मिट्टी में रुपया गाड़कर न आप खाते और न दूसरों को खाने देते हैं, परिजनों का कष्ट-क्रन्दन सुनकर भी रुपये गिनने में लगे रहते हैं, वे अधमरे होकर जीते हैं। उनका आधा अन्तःकरण मारा गया समझिये। जो किसी के लिए नहीं जीते उनका जीना न जीना बराबर है।

लोभ का परिहार अथवा लोभकषाय पर विजय पाने का उपाय यह है कि व्यक्ति यह सोचे कि-

1. अपनी जरूरत के लिये पर्याप्त हो तो अतिरिक्त संपत्ति जरूरतमंद में वितरित कर लौटाने में दूसरों का भला हो सकता है।
2. कुछ हद से परे पैसे की अहमियत नहीं रह जाती। पैसे से खुशी नहीं लाई जा सकती, लेकिन इससे कई जीवन बचाये जा सकते हैं।
3. भौतिक चीजों की इच्छा पर काबू पाने से व्यक्ति कम से कम बदतर परिणामों से बच सकता है।
4. प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवश्य ही किसी को कुछ दे सकता है, उसके प्रयास चाहे छोटे हों या बड़े, लेकिन उनका जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है।
5. इस दुनियाँ में करने के लिये बहुत कुछ है; न तो कभी देर होती है, न ही जल्दी।
6. प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ दे सकता है और उसे देना चाहिये।
7. प्रत्येक व्यक्ति महान् हो सकता है क्योंकि वह दूसरों की सेवा कर सकता है।
8. मानवता स्वार्थों और भेदभावों से ऊपर है।
9. आनन्द की कुंजी यह है कि स्वार्थ केन्द्रित 'मैं और मेरा' की मनोवृत्ति तथा प्रवृत्ति को रोका जाय तथा 'हम सब' पर केन्द्रित होने की प्रवृत्ति को जगाया जाये।
10. एक दूसरे का सहारा बनें।
11. हम लेने की बजाय देने के मूल्य को समझें, देने के सुख का अनुभव करें।
12. दान प्राप्त करने वालों की बजाय दान देने वालों को ज्यादा लाभ मिलता है, मैत्री की स्थापना में मदद मिलती है।

-2 डी, जैन कुँज, द्वितीय माला, 1, गोपालवाड़ी, अजमेर पुलिया के पास, जयपुर (राज.)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री सुनितकुमार जैन

धार्मिक मासिक पत्रिका 'जिनवाणी' (जुलाई-2017) का 'कषाय अंक' आत्म-विश्लेषण की ओर प्रेरित करने वाला रहा। प्रस्तुत अंक में साहित्यकार डॉ. दिलीपजी धींग लिखित आलेख 'शब्दों का विवेचन' पढ़कर लगा कि क्रोध, मान, माया और लोभ- ये चारों कषाय हमारी जिन्दगी में दुःख लाने वाले होते हैं। अगर हम अपना व संसार का हित चाहते हैं तो हमें इन कषायों को स्वयं से दूर कर देना चाहिए। डॉ. चंचलमलजी चोरडिया के आलेख 'कर्मों से प्रभावित हमारा स्वास्थ्य' हमें प्रेरित करता है कि हम अपने हृदय में सबके प्रति शुद्ध भाव रखते हुए सात्त्विक जीवन शैली अपनाएं। उक्त आलेख वर्तमान युवा पीढ़ी को नई दिशा प्रदान करने में सहायक है। 'जिनवाणी' में प्रकाशित होने वाले आलेख जैन धर्म से संबंधित सारगर्भित जानकारी प्रदान करने वाले व हमारी आध्यात्मिकता में बेहतरीन अभिवृद्धि करने वाले साबित हो रहे हैं। जिनवाणी की पूरी टीम का हृदय से आभार।

-जैन विहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक (राज.)

कषाय विजय का सोपान : सेवा

श्रीमती सुशीला बोहरा

कषाय का एक शाब्दिक अर्थ है जिससे आत्मा के सद्गुणों का नाश हो, वह कषाय है। जो सम्यक्त्व प्राप्ति के मार्ग को अवरुद्ध कर जन्म जन्मातरों की शृंखला को बढ़ावे तथा इहलोक एवं परलोक को बिगाड़े, यह ऐसा आत्मिक शत्रु है। यह मनुष्य जन्म 84 लाख योनियों को पार करने के बाद अव्याबाध अनन्त सुख की प्राप्ति के लिये मिला है। सम्यक्त्व इसका प्रथम चरण है जिसकी प्राप्ति के बिना मोक्ष का द्वार नहीं खुल सकता। यह सम्यक्त्व अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया एवं लोभ के क्षय, उपशम या क्षयोपशम के बिना सम्भव ही नहीं है। अतएव कषाय सम्यक्त्व प्राप्ति के मध्य मोटी चट्टान है, जिसे तोड़ कर ही हम अक्षय सुख को प्राप्त कर मोक्षगामी बन सकते हैं।

कषाय चार हैं, यथा- क्रोध, मान, माया और लोभ। क्रोध मन अथवा इन्द्रियों की प्रतिकूल परिस्थिति के प्रार्दुभाव से उत्पन्न एक विस्फोट है, जिससे प्रभावित हो व्यक्ति गाली गलोच, मारपीट, पैर पटकने एवं बड़बड़ाने लगता है। अग्नि तो मुर्दे को जलाती है लेकिन क्रोधाग्नि तो जीवित को जलाने लगती है। यह तो वास्तविक अग्नि से अधिक दाहक, शस्त्र से ज्यादा मारक तथा ज़हर से अधिक घातक होती है।

अहंकार एवं ममकार पर चोट पड़ने से भी क्रोध आता है। कई बार अपने विरुद्ध व्यवहार या अपशब्द सुनकर भी क्रोधाग्नि भड़क उठती है। फिर क्रोध अकेला नहीं आता अपने साथ बदले की भावना, द्वेष भाव, गालियों तथा मार-पीट आदि के पूरे परिवार को साथ लेकर आता है। उस समय उसकी आँखे बंद हो जाती हैं और मुँह खुल जाता है। इस अंहकार ममकार के वशीभूत होने पर परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर लड़ाई झगड़े प्रारम्भ हो जाते हैं। यदि क्रोधी व्यक्ति कमजोर होता है तो सामने वाले को नीचा दिखाने के लिये छद्मवेश धारण कर माया-जाल फैला देता है और अगर इसमें वह कुछ हासिल कर लेता है तो फिर अधिक प्राप्त करने की भावना का विस्तार हो जाता है। इसी क्रोध एवं मान की वैतरणी में माया और लोभ सम्मिलित हो जाते है। फिर मन में कुछ, वचन में कुछ और काया में अलग ही व्यवहार करने लग जाता है। इस तरह क्रोधाग्नि से चारों कषाय पुष्ट होने लगती है।

इस अनन्तानुबंधी कषाय से विरत होने के लिये देव गुरु, धर्म एवं जिनवाणी का सहारा तो लेना ही पड़ेगा, लेकिन सेवा, वैयावृत्य या करुणा से भी इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि सम्यक्त्व के मुख्य पाँच लक्षण हैं, यथा-शम, संवेग, निर्वेद अनुकम्पा और आस्था। अनुकम्पा का तात्पर्य है- दु:खी, रोगी, पीड़ित को देखकर मन प्रकम्पित होना। जिसका मन इन स्थितियों को देख कम्पित हो जाता है, वही सेवा कर सकता है। अतएव करुणा दूसरे के दु:खों से द्रवित होकर निजी सुख, सामग्री यानी तन, मन एवं धन समर्पित करने की भावना है। इसमें पद प्रतिष्ठा, जाति, कुल, धर्म, समाज, तेरे मेरे का भाव नहीं होता है। शास्त्रों में ऐसे कई उदाहरण हैं। वासुदेव श्री कृष्ण हाथी की सवारी पर विराज कर भगवान नेमीनाथ के दर्शनार्थ जा रहे थे। मार्ग में एक वृद्ध पुरुष को ईंटों के बहुत बड़े ढ़ेर में से एक-एक ईंट लेकर लड़खड़ाते घर में रखते हुए देखा। उनसे उसका दु:ख सहा नहीं गया और एक ईंट उठाकर वृद्ध के घर में रख दी। जुलूस में चलने वाले लोगों ने श्री कृष्ण का अनुसरण किया जिससे देखते ही देखते सारी ईंटों का ढेर वृद्ध के घर में पहुंच गया। श्री कृष्ण वासुदेव थे, तीन खण्ड के नाथ थे; चाहते तो आदेश से भी यह काम करवा सकते थे; लेकिन वे उस

वृद्ध की दशा से ऐसे द्रवी भूत हो गये कि अपने मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा सबको भूल गये। अनुकम्पा से अहंभाव तिरोहित हो गया और ईंट उठाकर वृद्ध की सेवा कर उसकी वेदना दूर कर दी। किसी ने ठीक ही कहा है-

वही है जिन्दगी जो नाम पाती भलाई में,
खुदी को छोड़कर जो पहुंच जाती खुदाई में,
मिसाले बुलबुला है, जिन्दगी दुनियाँ ये फानी है,
जो तुझसे हो सके कर ले भलाई जिन्दगानी में।।

सेवा वही कर सकता है जो अपनी सुख-सुविधा भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब आदि की विभेद रेखा को तोड़कर विनम्र बन जाय। उत्तराध्ययन सूत्र का शुभारम्भ इसी विनय गुण के वर्णन से हुआ है। अविनीत शिष्य को सड़े कान वाली कुतिया की संज्ञा दी गई जिसे सब जगह फटकार ही मिलती है। दुःखी-दरिद्र, असहाय, वृद्ध जनों की सेवा राग-द्वेष अथवा क्रोध मान से वशीभूत व्यक्ति नहीं कर सकता। अहसान जताकर, क्रोधित वचनों को बरसाकर पटकते झटकते सेवा नहीं हो सकती, इससे तो दुःखी व्यक्ति की तड़फ और बढ़ जायेगी। कोई गाली निकाले और सामने वाला हंसते-हंसते सहन कर सके वही सेवा कर सकता है। संत नंदीषेणजी का उदाहरण यही संदेश दे रहा है।

उनकी सेवा भावना की प्रंशसा देवलोक में इन्द्र द्वारा सुनकर एक देव के मन में परीक्षा लेने की सूझी। वे एक ग्लान रोगी संत बनकर किसी जीर्ण शीर्ण स्थानक में बैठ गये तथा नंदीषेण मुनि को समाचार पहुँचा दिया कि कोई रोगी संत स्थानक में आये हुए हैं, जिनके पास सेवा करने वाला कोई नहीं है। नंदीषेण मुनि शीघ्र उनके पास पहुंचे और निवेदन किया कि आपसे पैदल चला नहीं जाता तो मेरे कंधों पर बैठ जाइये। उस देवता को तो उनकी परीक्षा लेनी ही थी, वे शीघ्र उनके कंधों पर बैठ गये तथा अपना शरीर भारी भरकम बना दिया। मार्ग उबड़-खाबड़ था अतएव वे संत उन्हें धीरे-धीरे ले जा रहे थे और मायावी संत नंदीषेणजी को टोकते हुए जल्दी चलने को उकसा रहे थे। थोड़ी देर में उन्होंने लघुशंका कर दी, फिर भी वे मुनि शांत भाव से चल रहे थे। अब तो उन्होंने बदबू देती हुई पतली बड़ी नीत कर दी, जो नंदीषेण मुनि के शरीर पर टपक रही थी, लेकिन संत चिन्तन करते हुए चल रहे थे कि इन्हें बड़ी तकलीफ हो रही है जल्दी स्थानक ले जाकर साफ कर दूँ। बीच में उतारूंगा तो दिन का अवसान होने वाला है, बीच में कहीं ठहरने की जगह नहीं है वे बहुत संभल कर बड़े आदर के साथ ले जा रहे थे फिर भी मायावी संत डाँटते हुए अपशब्द बोलने लगे, एक दो थप्पड़ और मुक्के भी मार दिये। वे जितना क्रोधित होकर डाँटते जा रहे थे उतना ही वे विनीत भाव से उनकी मंगल कामना करते हुए ले जा रहे थे। भावों की इतनी शुद्धि हो गई कि रास्ते में ही उनको केवल ज्ञान हो गया। यह वैयावृत्त्य या सेवा का उच्च शिखर है, जहाँ अहंकार तिरोहित होकर नम्रता में परिवर्तित हो जाता है। अतएव नम्रता की चाबी से मोक्ष का ताला भी खुल जाता है। अध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन में प्रभु ने फरमाया है- ''वेयावच्चेण तित्थयरणामगोयकम्मं बंधइ।''

अर्थात् सेवा/वैयावृत्य करने से तीर्थंकर नामकर्म का बंध भी हो सकता है। आचार्य हरिभद्र आवश्यक सूत्र की टीका में फरमाते हैं- ''भगवन्! एक साधक अपना सर्वस्व आपको समर्पित कर आपके चरणों की सेवा करता है और दूसरा साधक ग्लान रोगी और पीड़ित की सेवा में व्यस्त होने के कारण आपके दर्शन वन्दन को नहीं पहुंच पाता। इन दोनों में से कौन धन्य है?'' भगवान ने फरमाया- ''जो व्यक्ति ग्लान, रोगी, पीड़ित, संतप्त एवं दुःखी की सेवा करता है वह धन्य है।''

''जं गिलाणं पडिचरई, से धन्ने।''

पद्मभूषण से सम्मानित श्री डी. आर मेहता भारतीय प्रशासनिक अधिकारी सेबी के चेयरमेन तथा रिजर्व बैंक के डिप्टी गर्वनर जैसे उच्च पदों पर रहे हुए हैं, वे जिस विनीत भाव से विकलांगों की सेवा करते हैं, जैसे कोई भाई अपनी प्रिय बहिन या भाई की करता है। राष्ट्रपिता गांधी धनिकों की कोठियों में नहीं हरिजनों एवं कोढ़ियों की बस्तियों में जाकर रह जाते थे। उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी महाराज, साध्वीप्रमुखा महासती मैनासुन्दरी जी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. की संत

सतियों द्वारा जिस अहोभाव से सेवा की जा रही है, वह हमारे सामने वैयावृत्त्य का जीता जागता उदाहरण है।

दिखाने के लिए की गई सेवा कषाय में अभिवृद्धि भी कर सकती है। कुछ लोग प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, नाम के लिये सेवा करते हैं, इससे उनका अंहकार ममकार कम नहीं अधिक होता है, वे हर जगह इसका बखान कर सम्मान पाने के लिये सेवाकार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में कर्म टूटने के बजाय उल्टे गाढ कर्म बंध जाते हैं, कई बार इस नामवारी के चक्कर में इतने उलझ जाते हैं कि कार्य पीछे छूट जाते हैं तथा अहम् की लडाई प्रारम्भ हो जाती है।

इसी प्रकार बहू भी सासू की सेवा समाज में दिखाने के लिये करे तथा घर में अहसान जताते हुए, बड़बड़ाते हुए करे तो कर्म बंधन ही होंगे। मधुर वचनों से तो हम दूसरों के दिल में उतरते हैं लेकिन कड़वे वचनों से दिल से ही उतर जाते हैं। ऐसी दिखावे की सेवा से क्रोधादि कषायों की अभिवृद्धि में तथा जन्म जन्मान्तरों के वैर के बंधन भी बंध जाते हैं। कमठ का भगवान पार्श्वनाथ के साथ सात जन्मों तक वैर चला, पूर्व भव में गजसुकुमाल मुनि ने अपनी देवरानी के साथ छलकपट कर बच्चे के प्राण हर लिये। उसे 99 लाख भवों के बाद ससुर के रूप में उदय हुए और धधकते अंगारों से भोगना पड़ा हालांकि इस भव में उन्होंने समता से सहन कर किये तो केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष भी चले गये।

अतएव सेवा मन को साधे बिना नहीं होती है। यदि सच्चे हृदय से आत्मीयता के भाव से, रोगियों, वृद्धों की सेवा की जाय तो शरीर की क्षणभंगुरता और उससे होने वाले कष्टों का बार-बार ध्यान आने से शरीर के प्रति मोह घटता जाता है, जिससे कामवासना भी शिथिल हो जाती है। ऐसी सेवा राग-द्वेष एवं शरीर के प्रति आसक्ति को भी कम कर देती है। भगवान ने दान को पुण्य का, अतिथि संविभाग व्रत को संवर का, अनुकम्पा को सम्यक्त्व का लक्षण, वात्सल्य को सम्यक्त्व का अंग एवं वैयावृत्त्य को निर्जरा रूप बताकर आत्म-उद्धार का मार्ग प्रशस्त किया है।

अभिप्राय यह है कि सेवा आध्यात्मिक दृष्टि से राग-द्वेष निवृत्ति का, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से रोग निवारण तथा भौतिक दृष्टि से सुन्दर, परिवार एवं समाज के निर्माण में सहायक है। अतएव

तन से सेवा कीजिये, मन से भले विचार।
यदि पैसा पास में हो तो कीजिये पर-उपकार।।

-कार्याध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
-जी-21, शास्त्रीनगर, जोधपुर-342003 (राज.)

क्रोध

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

मैं ऐसा कषाय हूँ
नारक के द्वार खोलता हूँ
उत्तेजित करता हूँ
मन, वचन, काय से
बार-बार हिंसा करता हूँ
कटु बोल-बोल वैर करता हूँ
लाल-लाल आँखें करता हूँ
पीट-पीट सिर धुनता हूँ
पटक-पटक पैर, जिद्द करता हूँ
कंपकंपी को न्यौता देता हूँ।
सिर की नसें बाहर ले आता हूँ
मानसिक तनाव बढ़ा देता हूँ
आकृति बिगाड़ देता हूँ
ज्ञान मिट्टी में मिला देता हूँ
भीतर से आत्मा बोली
खूब किया मन माना तूने
जीवन को विकृत किया
पिशाच बना दिया मुझको
स्वभाव से दूर किया तूने
अब न चलेगी एक भी तेरी
मैं समझ गया नादानी तेरी
मैंने विभाव में आना छोड़ दिया
शुद्ध भावों में रमण सीख लिया।।

-ई-123, नेहरूपार्क, सरदारपुरा,
जोधपुर-342003 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

बौद्ध मनोविज्ञान और आधुनिक मनोविज्ञान- प्रो. भागचन्द्र जैन 'भास्कर', ***प्रकाशक***- सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर (महा.), ***प्राप्ति स्थान***- (1) कला प्रकाशन, बी 33/33, ए-1, न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू., वाराणसी-5, (2) वेस्टर्न बुक डिपो, सदर, नागपुर-440001 (महा.) ***पृष्ठ***- 208+16, ***मूल्य***- 300 रुपये मात्र, सन् 2016

भारतीय मनोविज्ञान प्रारम्भ से ही वर्णनात्मक न होकर अनुभवात्मक रहा है। इसमें मन की शक्ति को कैसे बढ़ाया जाये, शारीरिक कार्यों, भावों और आवेगों को कैसे संयमित किया जाये आदि विषयों को लेकर विशेष अध्ययन हुआ है। भारतीय मनोविज्ञान दर्शन परक है, अतः यहाँ दर्शन और मनोविज्ञान को पृथक् नहीं माना जाता है। जबकि आधुनिक मनोविज्ञान में दर्शन और मनोविज्ञान का क्षेत्र अलग-अलग हो गया है। दर्शन का सम्बन्ध अध्यात्म से है और मनोविज्ञान प्रायोगिकता के क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। अध्यात्म से इसका विशेष सम्बन्ध नहीं रहा है।

प्राचीन मनोविज्ञान चित्त-चैतसिक की विविध अवस्थाओं का विश्लेषण अनुभव के आधार पर करता है। जबकि आधुनिक मनोविज्ञान विज्ञान के धरातल पर खड़े होकर वैयक्तिक भेदों को स्पष्ट करता हुआ प्रयोगवाद की ओर अधिक विकसित हो रहा है तथा चिकित्सा, शिक्षा, अपराध, समाज, उद्योग, राजनीति, भाषा आदि सभी क्षेत्रों में अपनी सीमाओं का विस्तार कर रहा है।

यथार्थ में बौद्ध धर्म आधुनिक मनोविज्ञान से अधिक गहरा है। उसने व्यक्ति के मानसिक विकारों का अध्ययन जिस गहराई से किया है, वहाँ तक आधुनिक मनोविज्ञान अभी भी नहीं पहुँच पाया। बौद्ध मनोविज्ञान ने अध्यात्मवाद का आधार लेकर व्यक्ति को भवचक्र से मुक्त कराने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस सन्दर्भ में उसने आत्मतत्त्व, कर्मवाद, सृष्टिवाद, लोकधातु, ध्यान, मन, निर्वाण आदि तत्त्वों पर सयुक्तिक विवेचन किया है।

प्रो. जैन ने बौद्ध मनोविज्ञान और आधुनिक मनोविज्ञान के तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन को प्रस्तुत कर मनोविज्ञान के विषय में तथ्यपूर्ण जानकारी पाठकों को उपलब्ध करवाई है। प्रस्तुत पुस्तक में सात परिवर्त हैं, वे निम्नानुसार हैं-1. चित्त के विविध आयाम, 2. चित्तप्रवृत्ति क्रम, 3. चैतसिक और उनका संयुक्त विभाजन, 4. कर्म, पुनर्जन्म, प्रतीत्यसमुत्पाद और प्रतिफल, 5. रूपः सृष्टि के निष्पादक तत्त्व, 6. निर्वाण : कर्मों की उपशमन-प्रक्रिया, 7. आधुनिक मनोविज्ञान और बौद्ध मनोविज्ञान।

लेखक लिखते हैं कि चित्त एक अदृश्य एवं सूक्ष्म तत्त्व है, जिसमें कुशल-अकुशल भावों का संचार होता रहता है। इन भावों की अभिव्यक्ति व्यक्ति की प्रकृति अथवा निमित्त कारणों पर अवलम्बित होती है। मोह, लोभ, द्वेषादि विकार भावों से व्यक्ति बंध जाता है और इसी कर्म-बन्ध से मुक्त होने के लिए वह आध्यात्मिक साधना करता है। इसीलिए मन को कर्म-बन्ध का मूल कारण माना गया है। महात्मा बुद्ध ने इसी को 'मनोदण्ड' कहा है। तथागत ने चित्त और मन की सयुक्तिक व्याख्या की है। उत्तरकाल में इसे अभिधर्म की संज्ञा दे दी गई। बौद्ध साहित्य में अभिधर्म दर्शन की एक लम्बी परम्परा रही है। यह लम्बी परम्परा त्रिपिटिक से प्रारम्भ होकर पालि और संस्कृत साहित्य तक अभिव्यक्त हुई है। यह पुस्तक मनोवैज्ञानिकों, दार्शनिकों, शोधार्थियों और जिज्ञासुओं के लिए पठनीय एवं मननीय है।

अन्तकृत प्रश्नोत्तर- संकलन एवं सम्पादन- डॉ. पवनकुमार जैन, ***प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान***- श्री जैन शिक्षा-दीक्षा उपकरण भण्डार, चाँदी हॉल की पोल, जोधपुर-342002(राज.),मोबाइल : 099502 -23967, ***पृष्ठ***-306+6, ***मूल्य***- उल्लिखित नहीं, सन् 2017

अन्तकृतदशा सूत्र पर्युषण पर्व में वाचन किया जाने वाला महत्त्वपूर्ण सूत्र है। अष्ट वर्गीय इस सूत्र में 90 चारित्र आत्माओं का वर्णन है, जिन्होंने उसी भव में समस्त कर्मों का क्षय करके मोक्ष प्राप्त किया। सम्पादक ने आठ वर्गानुसार 500 से अधिक प्रश्नों को विभाजित कर उनके उत्तर प्रस्तुत किए हैं। ये प्रश्न-उत्तर आत्मारामजी म.सा., मधुकरमुनिजी म.सा., आचार्य हस्तीमलजी म., आचार्य श्री नानेश, उमेशमुनिजी 'अणु' आदि की पुस्तकों से तथा बहुश्रुत श्री समर्थमलजी म. एवं श्रुतधर श्री प्रकाशचन्दजी म. द्वारा फरमाए गए प्रश्नोत्तरों से संकलित हैं। यह पुस्तक जिज्ञासुओं, धर्म में रुचि रखने वाले श्रावकों, स्वाध्यायियों एवं पाठकों के लिए उपयोगी है।

हस्ती-हीरा-मान चालीसा- लेखकद्वय मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. एवं श्री नवल डूंगरवाल 'नवीन' , ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन नं. 0141-2575997, फैक्स- 4068798, ***पृष्ठ***-48, ***मूल्य***- नित्य पठन।

'गुरु हस्ती चालीसा' मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा तथा 'गुरु हीरा-मान चालीसा' श्री नवल डूँगरवालजी द्वारा लिखित है। चालीसा का नियमित पाठ अनेक श्रावक-श्राविका करते हैं। अतः मण्डल ने पुनर्मुद्रण कर सुविधा प्रदान की है।

स्वाध्याय और कषाय

श्रीमती शान्ता मोदी

अपनी आत्मा को अत्यन्त निकट से जानना 'स्वाध्याय' कहलाता है। इसमें वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा सभी कुछ समाहित है। अपने आत्म-परिणामों को पढ़ना, अपने से पूछना यानी खुद ब खुद मुखातिब होना, आत्म-चिन्तन और आत्म-स्मरण करते रहना तथा समय-समय पर स्वयं को सही सलाह और समझाइश देते रहना, यह स्वाध्याय की सही उपलब्धि है। इसके बाद ध्यान की आराधना आरम्भ होती है और व्यक्ति धीरे-धीरे स्वयं से परिचित होने लगता है तथा दोषों से अभिज्ञ होने पर उसे सत्य की राह भी उपलब्ध हो जाती है। जो मानव जीवन का परम लक्ष्य है और उसे परम शान्ति, आनन्द एवं सुख का अनुभव होने लगता है; जो कि जन्म-मरण के दुःखों से छुटकारा दिला सकता है। यही होगा तभी स्वाध्याय की सच्ची उपलब्धि हो सकेगी।

स्वाध्याय को परिपक्व करने हेतु कषाय मुक्ति की ओर हमारा ध्यान जाना चाहिये। क्योंकि पगपग पर कषाय हमें विचलित करता रहता है। वह भी तो हमारी चेतना से जुड़ा हुआ रहता है। उसके लिये हमें सतत जागरूक रहना पड़ेगा। क्योंकि कषाय कभी भी आ जाता है, उसके लिये जागरूक रहकर निरीक्षण करना होगा और प्रतिक्षण सावधानी बरतनी होगी। क्रोध को छोड़कर तीनों कषाय (मान, माया, लोभ) पीछे से अन्दर प्रवेश कर जाते हैं, पता भी नहीं चलता। इसलिये बारीकी से अपनी जाँच करनी होगी। तभी इस भयंकर शत्रु से बच सकते हैं। यह रोक या अंकुश ही बार-बार भटकने से छुटकारा दिला सकता है। यदि कषाय से मुक्त हो जायेंगे तो हमारी अगली मंजिल दूर नहीं है। जिसको हम पाना चाहते हैं, उसकी स्वाध्याय एक पगडंडी है। इस पर चलकर अनन्त सुख का साम्राज्य पा जायेंगे।

-जयपुर (राज.)

समाचार विविधा

साधना-आराधना में भोपालगढ़ हुआ मगन तप-त्याग में हर एक का हो रहा विशेष जतन

जन-जन के कल्याणकारी, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुणरत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग- व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 9 तथा व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.**, महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 8 की सन्निधि में क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ (बड़लू) का वातावरण धर्ममय हो गया है। आचार्यप्रवर, सन्तप्रवरों एवं महासती मण्डल के प्रेरणाप्रद प्रवचनों से जन-मन आह्लादित है तथा तप-त्याग की ओर अग्रसर है। अनेक गुरुभक्त भोपालगढ़ में चातुर्मास का लाभ लेने हेतु आए हुए हैं। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी 8 से 31 जुलाई तक 24 तीर्थंकर एवं 20 बोलों की आराधना व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के मार्गदर्शन में गुरु चरण सन्निधि में सम्पन्न हुई। (विवरण अलग से प्रकाशित)। 31 जुलाई 2017 को सम्पूर्ति के अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल जी सुराणा ने कहा कि बैंगलोर में 24 तीर्थंकरों की आराधना एवं महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के बारे में सुनकर स्वयं श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री विजयराजजी म.सा. स्थानक पधारे और देखकर हर्षित हुए।

31 जुलाई को श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. के पचोले की तपस्या पोरसी सहित एवं 03 अगस्त को साध्वी श्री मधुश्रीजी म.सा. के 11 की तपस्या पोरसी सहित सम्पन्न हुई। 06 अगस्त को संघमंत्री श्री तरुणजी बोहरा ने व्यसन त्याग की प्रेरणा की, जिसके फलस्वरूप 20-25 जनों ने पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से व्यसन त्याग का नियम लिया। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. एवं महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. के सांसारिक वीर पिता समर्पित गुरुभक्त श्री इन्दरचन्दजी गाँधी-जोधपुर ने चातुर्मास शुभारम्भ से ही सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, पौषध आदि के साथ 31 की तपस्या 07 अगस्त को पूर्ण की। भोपालगढ़ के श्री प्रेमचन्दजी कांकरिया ने 21 अगस्त को 31 की तपस्या सम्पन्न की। धनारी श्री संघ सहित पधार कर 13 अगस्त को सुश्रावक श्री धर्मचन्दजी सेठिया ने 28+3 यानी 31 के प्रत्याख्यान गुरुदेव से ग्रहण किए।

चातुर्मास के डेढ़ माह में शिरपुर श्रीसंघ, फत्तेपुर श्रीसंघ, इन्दौर श्रीसंघ, सूरत, विजयनगर श्रीसंघ, युवक परिषद् जोधपुर, चेन्नई श्री संघ द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के चातुर्मास हेतु विनतियाँ प्रस्तुत हुई। 30 जुलाई को नागौर संघ का सुराणा परिवार, 14 एवं 8 की तपस्या के प्रत्याख्यान हेतु पीपाड़ श्री संघ, 11 अगस्त को कोटा श्री संघ के 160 सदस्य, हैदराबाद श्री संघ की बस, 13 अगस्त को नागौर श्री संघ के 70 सदस्य एवं अधिष्ठाता सिद्धान्तशाला जयपुर सहित सभी छात्र, ब्यावर श्री संघ के 18 सदस्यों ने पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में दर्शन, वन्दन, प्रवचन का लाभ लिया। शीर्षस्थ पदाधिकारी, क्षेत्रिय पदाधिकारी एवं स्थानीय पदाधिकारीगणों ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं गुरु चरण सन्निधि का लाभ लिया।

चातुर्मास प्रारम्भ से पर्वाधिराज पर्व तक 175 तेले, 3 चोले, 2 पचोले, 2 छह, 3 सात, 31 अठाई, 18 नौ, 7 ग्यारह, 1 तेरह, 1 चौदह, 2 पन्द्रह, 3 इकतीस की तपस्याओं के साथ लगभग 800 उपवास सम्पन्न हुए।

आयंबिल, नींवी, तेले की लड़ी निरन्तर चल रही है। श्रावकों एवं श्राविकाओं की दो नवरंगी 18 से 26 अगस्त तक सम्पन्न हुई। पर्युषण पर्व में प्रतिदिन सैंकड़ों संवर-पौषध हुए। संवत्सरी को अनगिनत उपवास हुए। निम्नांकित श्रावक-श्राविकाओं ने आजीवन शीलव्रत स्वीकार किए:- 1. श्री लक्ष्मणराम देवड़ा सदार, 2. श्री नत्थुरामजी माली-सदार, 3. श्री सुखारामजी माली-सदार, 4. श्री किशनारामजी सुथार-सदार, 5. श्री उत्तमचन्दजी धारीवाल-सदार, 6. श्री सुरेशचन्दजी बाफणा-सदार, 7. श्री उम्मेदराजजी हुण्डीवाल-सदार, 8. श्री नेमीचन्दजी खींवसरा-सदार, 9. श्री किशनरूपजी चौधरी-सदार, 10. श्री पारसमलजी कांकरिया-सदार, 11. श्री किशनचन्दजी चौधरी-सदार, 12. श्री ज्ञानचन्दजी मेहता-सदार, 13. श्री भौमराजजी कोठारी-सदार, 14. श्री चंचलमलजी कांकरिया-सदार।

भोपालगढ़ के निकटवर्ती मारवाड़ अंचल के सभी ग्राम-कस्बों, नगरों यथा- बारणी खुर्द, नाडसर, गोटन, कुड़ी, पीपाड़, अरटिया, बोरुन्दा, मेड़ता, असावरी, आसोप, गारासनी, हरसोलाव, हरियाढ़ाणा के गुरुभक्त श्रावक-श्राविका भोपालगढ़ चातुर्मास में नियमित दर्शन-वन्दन-प्रवचन एवं साधना-आराधना का लाभ ले रहे हैं।

पर्युषण पर्वाधिराज के अवसर पर प्रतिदिन प्रातःकाल श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने अन्तगडसूत्र का वाचन किया। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. तथा व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी, महासती श्री निष्ठाप्रभाजी, महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा. आदि ने आठों दिन जिनवाणी का अमृत वर्षण किया। दोपहर 2 से 3 बजे तक नवदीक्षित श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. ने कल्पसूत्र का वाचन एवं श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ने विवेचन किया।

बजरिया-सवाईमाधोपुर, विजयनगर, सुमेरगंजमण्डी, जयपुर, सवाईमाधोपुर, जोधपुर, बलरामपुर, कुचेरा, बून्दी, चित्तौड़गढ़, बैंगलोर, शिरपुर, चेन्नई, फत्तेपुर, कुम्भकोणम, शोरापुर-कर्नाटक, भरतपुर, हैदराबाद, हिण्डौन, किशनगढ़, अलीगढ़-रामपुरा, यवतमाल, श्री माधोपुर, बालोतरा, कोयम्बटूर, मुम्बई, फगवाड़ा, याद्गिरी, दूदू, अलवर, बल्लारी, लासूर स्टेशन, लासूर, पीपाड़सिटी, नंदुरबार, जामनेर (महा.), किशनगढ़, बीजापुर, उमरगांव, रतलाम, सूरत, नीमच आदि क्षेत्रों एवं महानगरों के उपनगरों सहित पर्वाधिराज पर्युषण में लगभग 91 ग्राम-नगर-महानगरों के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही- दोनों स्थानकों की सभी मंजिलों सहित अहिंसा भवन का दुमंजिली भवन संवर-पौषध करने वाले श्रावक-श्राविकाओं से पूरित रहा।

-गिर्राज जैन

आचार्यप्रवर की सन्निधि में 24 तीर्थंकरों की आराधना का अद्भुत आयोजन सम्पन्न

जिनशासन गौरव, ज्ञानक्रिया के बेजोड़ संगम, आगमज्ञ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि संत-मण्डल एवं व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि महासती मण्डल के पुनीत सान्निध्य में महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के निर्देशन में तथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ के तत्त्वावधान में 08 से 31 जुलाई 2017 तक 24 तीर्थंकरों की आराधना की गई, जिसमें जोधपुर, जयपुर, पीपाड़, पाली, चेन्नई, बैंगलोर, मैसूर, कोटा, सवाईमाधोपुर, गोटन, ब्यावर, अरटिया खुर्द एवं भोपालगढ़ आदि स्थानों से 11 साधकों तथा 40 साधिकाओं ने भाग लिया। दो साधक एवं पाँच साधिकाएँ अपरिहार्य कारणों से पूर्ण दिनों तक उपस्थित नहीं रह सके। सर्वाधिक संख्या सवाईमाधोपुर क्षेत्र से रही, जिसमें 18 सदस्य उपस्थित हुए।

प्रातःकालीन वज्रपंजर स्तोत्र आदि स्तवन का तल्लीनतापूर्वक गान करने के पश्चात् श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनि

जी म.सा. द्वारा प्रार्थना में प्रतिदिन एक-एक पाप की आलोचना कराई जाती, प्रतिदिन प्रवचन सभा में एक-एक तीर्थंकर के जीवन-चरित्र की विशेषताओं को समझाते हुए स्तुति कराई जाती, साथ ही श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि सन्तों व महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के प्रभावोत्पादक व प्रेरणास्पद प्रवचन को सुनकर सभी साधक-साधिकाएँ व श्रोतागण दत्तचित्त हो जाते। प्रवचन पश्चात् 24 लोगस्स व 24 नमोत्थुणं का ध्यान और 24 वंदनाओं की क्रिया सभी प्रतिभागी गण द्वारा की जाती। मध्याह्न 1.00 से 2.00 बजे तक रत्नसंघ की समाचारी का महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. द्वारा विवेचन किया जाता और एकेन्द्रिय जीवों की विराधना से बचने के बिन्दुओं का प्रतिपादन किया जाता। दिन भर में हुई त्रुटियों, भूलों, अतिचारों के लिए प्रायश्चित्त पर्चा भरा जाता और प्रायश्चित्त लिया जाता।

सायंकाल में साधक और साधिकाएँ चारित्रात्माओं के सान्निध्य में प्रतिक्रमण करने के पश्चात् रात्रि में कल्याण मंदिर महावीराष्टक गान बाद प्रश्नोत्तर के माध्यम से ज्ञानचर्चा करते। तत्पश्चात् रात्रिकालीन संवर किया जाता। आराधना के दिनों में नये थोकड़ों का ज्ञान कराया गया। चारों ध्यान का स्वरूप समझाया गया।

इस आराधना में 16802 सामायिक, 169 एकाशन, 800 बियासन, 2 आयम्बिल, 133 उपवास, 13 तेले, 85 दया, 129 पौषध, 978 संवर हुए हैं।

24 दिनों की आराधना का समापन 31 जुलाई 2017 को किया गया। इस दिन की प्रवचन सभा में निम्न साधकों के अनुभूति भरे विचारों को सुनकर भावविभोर हो गये- 1. सुश्री हर्षिता लूंकड़-भोपालगढ़, 2. श्रीमती शिल्पाजी पारख-अरटिया खुर्द, 3. श्री अशोकजी कोठारी-चेन्नई, 4. श्री महावीरचन्दजी ओस्तवाल-चेन्नई। दिन में 3.30 बजे समापन दिवस कार्यक्रम संघ की मान-मर्यादा को ध्यान में रखते हुए सादगी पूर्ण ढंग से (समारोह का रूप नहीं देते हुए) श्री जैन रत्न सी.सै.स्कूल-भोपालगढ़ के मुख्य हॉल में आयोजित किया गया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता ने रिपोर्ट प्रस्तुत की। माननीय श्री निर्मलकुमारजी बम्ब-बैंगलोर तथा मनमोहनचन्दजी बाफणा-कानपुर ने अपने उद्गार रखे। साधक माननीय श्री अशोकजी कोठारी ने साधकों की ओर से भाव भरे शब्दों में भोपालगढ़ संघ का आभार व्यक्त किया। स्थानीय संघ के सदस्यों द्वारा साधक-साधिकाओं का माल्यार्पण से स्वागत किया गया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.शिखरमलजी सुराणा द्वारा रजत पदक व धार्मिक पुस्तकों का सेट सहित बेग समर्पित कर अभिनन्दन किया गया। प्रमुख अतिथि के पद से पी.एस. सुराणाजी ने सम्बोधन प्रदान कर साधक-साधिकाओं का भावभीना बहुमान व्यक्त किया। तत्पश्चात् संघ के मंत्री श्री पुनवानचन्दजी ओस्तवाल ने आराधना संचालन समिति के सभी सदस्यों सहित संघ के प्रत्येक कार्यकर्ता को धन्यवाद देते हुए साधक-साधिकाओं और उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। अंत में जैन विश्व गान हुआ। मंच संचालन सहमंत्री श्री नेमीचन्दजी जैन द्वारा किया गया। सभी ने यथाशक्य व्रत नियम धारण किये। *-पुनवानचन्द ओस्तवाल, मंत्री*

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के चातुर्मास की सौरभ से महक उठी है जोधपुर नगरी

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 के चातुर्मास में निरन्तर धर्म का झरना बह रहा है। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. द्वारा अध्यात्म एवं धर्म का मर्म समझाया जा रहा है। जीवन को दिशा प्रदान की जा रही है। तप-संयम के प्रति पुरुषार्थ जगाया जा रहा है। यहाँ दो मासक्षपण सम्पन्न हो चुके हैं

तथा 80 से अधिक अठाई एवं उससे ऊपर की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। तेलों की गिनती नहीं है। अन्य छोटी-बड़ी तपस्याएँ गुप्त रूप से निरन्तर चल रही हैं। पर्युषण पर्व के अवसर पर प्रवचन महामंदिर के जैन स्कूल के प्रांगण में रखे गए। आठों दिन 2000 से अधिक की उपस्थिति रही। अन्तगड सूत्र एवं प्रवचन के पश्चात् दिन में कल्पसूत्र का भी वाचन हुआ। जयपुर, जलगांव, अलवर, नागौर, चेन्नई आदि अनेक स्थानों से कतिपय श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में रहकर पर्युषण आराधना की। नवरंगी, पंचरंगी आदि की साधनाएँ भी सम्पन्न हुई। आठ दिन नवकार मंत्र का जाप सम्पन्न हुआ। *-कनकराज कुम्भट, संयोजक-97848-03000, 98292-92939*

(पावटा, नेहरूपार्क एवं घोड़ों का चौक के धर्मस्थानक भी धर्म-साधना के केन्द्र बने रहे, उनका विवरण पृथक् से प्रकाशित है। **-सम्पादक**)

भीलवाड़ा में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. का चातुर्मास निरन्तर आकर्षण का केन्द्र

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का भीलवाड़ा में चातुर्मास प्रारम्भ से ही पर्युषण जैसा माहौल बना हुआ है। लोगों का उत्साह यहाँ चर्चा का विषय बना हुआ है। श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. का 25 वर्ष पूर्व का चातुर्मास भीलवाड़ा नगरवासियों के मन में पुनः जीवन्त हो उठा है। कई नये श्रावक-श्राविकाएँ धर्म से जुड़ रहे हैं तथा पूर्व श्रावक-श्राविकाओं की दृढ़ता बढ़ रही है। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की प्रवचन शैली एवं तार्किक उत्तर समाधान की शैली, श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. की आत्मज्ञान दृष्टि एवं श्रद्धेय श्री अविनाश मुनिजी म.सा. की तत्त्व दृष्टि तथा सेवा भावना प्रेरणास्पद है। दो मासक्षपण की तपस्या के साथ अनेक अठाई एवं उससे अधिक की तपस्याएँ तथा बेले, तेले का तप लोग बढ़ चढ़कर कर रहे हैं। कई श्रावक-श्राविका गुप्त तप का अनुष्ठान कर रहे हैं। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्त्वावधान में धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। शिविर में प्रशिक्षक के रूप में श्री धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर, श्री नरपतराजजी चौपड़ा-जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-जयपुर, श्री विनोदजी जैन-चेन्नई ने अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई शिविर समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

शांति भवन श्री संघ के तत्त्वावधान में तीन दिन की एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें गुरुभक्त श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया-बैंगलुरु ने 'मेरी माँ जिद्दी है', 'जीवन की महक' और 'जीतना मेरी आदत है' विषयों पर सम्बोधित किया। 12 एवं 13 अगस्त को शान्ति भवन श्री संघ एवं महावीर युवक मण्डल सेवा संस्थान के तत्त्वावधान में आज की बालिकाएँ सुसंस्कारित कैसे बनें, इस लक्ष्य से 'स्मार्ट गर्ल' नामक दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ श्री मोफतराजजी मुणोत एवं भीलवाड़ा के गणमान्य श्रावकों द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष एवं भारतीय जैन संघटना के महामंत्री श्री राजेन्द्रजी लूंकड़ ने बालिकाओं को प्रेरक उद्‌बोधन दिया। इसमें 150 बालिकाओं ने उपस्थित होकर आत्मविश्वास एवं उत्साह का अनुभव किया।

पर्युषण पर्व में धर्मध्यान, तप-त्याग का अनूठा माहौल रहा। श्रावक-श्राविकाओं में गुरुवर्यों से जिनवाणी सुनने का अपार उत्साह नज़र आया। प्रवचन, कल्पसूत्रवाचन, प्रतिक्रमण, सायंकालीन ज्ञानचर्चा में सभी श्रावक-श्राविकाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। संतप्रवरों की प्रेरणा से आठ दिनों में कई संवर-पौषध हुए एवं आठ व उससे अधिक की गुप्त तपस्याएँ समपन्न हुईं। इन आठ दिनों में जयपुर, चेन्नई, अजमेर, अहमदाबाद से गुरुभक्तों ने यहाँ

आकर धर्मासाधना एवं तप-त्याग का भरपूर लाभ लिया। भीलवाड़ा श्री संघ अतिथि सत्कार में तत्पर हैं।

-दीपक बोथरा-94614-34024

पाली चातुर्मास में धर्माराधन का लगा ठाट

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पाली चातुर्मास प्रगति पर है। श्रावक-श्राविकाएँ चातुर्मास का उत्साह से लाभ ले रहे हैं। नियमित धर्म-साधना के साथ विविध प्रकार के तप सम्पन्न हो रहे हैं। संवत्सरी महापर्व तक 90 तेले, 32 अठाई, एक सिद्धि तप तथा 19,13,10,7 एवं चोले की तपस्याएँ चल रही हैं। दो पंचरंगी, एक नवरंगी सम्पन्न हुई है। दो जनें तेले-तेले पारणा कर रहे हैं। 18 साधक एकान्तर उपवास की तपस्या कर रहे हैं। 10 जने प्रतिदिन एकाशन कर रहे हैं। प्रतिदिन 12 से 1 बजे तक नवकार मंत्र का जाप चल रहा है। 30 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है। संवत्सरी के दिन 125 पौषध हुए हैं। *-चैनराज मेहता-मंत्री-94130-79693*

महासती-मण्डलों के चातुर्मासों में धर्माराधन एवं तपाराधन की निरन्तर बढ़ती छटा

जयपुर- साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 का चातुर्मास तप-त्याग एवं धर्माराधना की दृष्टि से अच्छा चल रहा है। श्री नवरतनमलजी लूंकड़ ने यहाँ 27 वां मासक्षपण तप पूर्ण किया है। श्रीमती निर्मलाजी जूनीवाल ने मौन पूर्वक 41 दिवसीय तप एवं श्रीमती राजबाईजी मोदी (श्री ज्ञानचन्दजी सेठ की बहिन) ने मासक्षपण तथा श्री देवीसहायजी ने लाल भवन में रहकर 12 दिवसीय तप पूर्ण किया। पर्वाधिराज पर्युषण में लाल भवन खचाखच भरा रहा। तपस्याओं की झड़ी लगी रही। 15,11,10,9 दिवसीय तप के साथ लगभग 55 अठाई तप, अनगिनत तेले,बेले एवं उपवास की तपस्या सम्पन्न हुई। संवत्सरी पर्व पर लाल भवन में कई श्रावक-श्राविकाओं को बैठने का स्थान भी नहीं मिला। संवत्सरी को लगभग 250 पौषध हुए। श्री जैन रत्न युवक परिषद् के शाखा प्रमुख श्री शैलेन्द्रजी कोठारी ने 15 उपवास किए। लाल भवन एवं महावीर भवन में पर्युषण के आठों दिन नवकार मंत्र का अखण्ड जाप चला। द्वितीया के दिन सामूहिक दया एवं आठों दिन संवर-पौषध आदि में अच्छी उपस्थित रहीं। श्राविकाओं की एक दिवसीय भिक्षु दया भी रखी गई। महासती मण्डल द्वारा सारगर्भित प्रवचन दिए गए। चारित्र दिवस पर प्रवचन के समय सबने प्रतिज्ञा की कि जहाँ पर भी भोज में मदिरा होगी, वहाँ हम भोजन नहीं करेंगे। कई लोगों ने गुटखे, तम्बाकू आदि का त्याग किया। *-सुरेशचन्द कोठारी, सहमंत्री*

पावटा- व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 10 के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा में पर्युषण के आठ दिन पृथक् से प्रवचन हुए एवं धर्मसाधना हुई। प्रतिदिन पुरुषों एवं महिलाओं के संवर-पौषध की साधना के साथ अठाई एवं इससे ऊपर की लगभग 15 तपस्याएँ हुईं। लगभग 15-20 तेले हुए। पर्युषण पर्व में व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा., महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा., महासती श्री कान्ताजी म.सा. के व्याख्यानों का लाभ पावटा क्षेत्रवासियों को प्राप्त हुआ। प्रतिदिन रात्रि-संवर-पौषध के अतिरिक्त संवत्सरी को लगभग 150 पौषध हुए। *-नरपतराज चौपड़ा*

कोटा- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास रामपुरा स्थानक में उत्साहपूर्वक चल रहा है। धर्माराधना का ठाट लगा हुआ है। श्रावण मास में 20 विहरमान की आराधना में 20 तेले, पंच परमेष्ठी की आराधना में 5 जनों द्वारा 9 की तपस्या एवं आठ कर्मक्षय हेतु आठ बहनों ने एकाशन के मासक्षपण किए। कई भाई-बहिन प्रतिक्रमण, वीरत्थुई, दशवैकालिक सूत्र, थोकड़े आदि कण्ठस्थ कर रहे हैं। प्रतिदिन 36 एवं 12 वंदना का क्रम

जारी है। नित्य संवर, पौषध एवं 5-5 सामायिक की आराधना चल रही है। प्रतिदिन एक-एक घर में 12 घण्टे के जाप हो रहे हैं। 23 जुलाई को सम्पन्न भिक्षु दया में 21 भाइयों एवं 10 बालिकाओं ने लाभ लिया। तपाराधन की दृष्टि से नित्य पोरसी, एकाशन, उपवास एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। श्री नरेशजी गोखरू देवली वाले, श्री तेजमलजी कंचारा कुम्हारियाँ गाँव वाले, श्री उम्मेदमल जी जैन रोशनपुरा वाले, श्री रमेशचन्दजी जैन चौरू वाले एवं श्री धर्मचन्दजी जैन चौरूवाले कोटा ने महासती जी के मुखारविन्द से शीलव्रत ग्रहण किए हैं। प्रतिदिन प्रवचन में जिनवाणी श्रवण का लाभ उमंग, उल्लास के साथ लिया जा रहा है। *-जगदीशप्रसाद जैन, मंत्री*

घोड़ों का चौक, जोधपुर - विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व बड़े उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आठों दिन महासती मण्डल का प्रवचन सभी श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा देने वाला एवं धर्म मार्ग पर आगे बढ़ाने वाला रहा। तपस्या की लड़ी में लगभग 25 तेले सम्पन्न हुए। संवत्सरी पर्व तक श्रीमती कंचनजी मेहता ने 29 उपवास, श्री नरेन्द्रजी बुबकिया ने 11 उपवास, श्री रोहितजी बुबकिया एवं श्री रोहितजी मेहता ने 9 उपवास पूर्ण किये। श्री चंचलजी बोथरा, श्री महेन्द्र जी सिंघवी, श्रीमती संतोषजी डोसी, श्रीमती संजूजी भंसाली, सुश्री सोनलजी बांठिया, श्रीमती प्रियाजी चौपड़ा, श्री पदमचन्दजी गुन्देचा, दीप्तिजी चौपड़ा, श्री सोहनराजजी चौपड़ा ने अठाई तप किया। 7 एवं 6 दिवसीय तप एवं गुप्त तपस्याएँ भी हुईं। संवत्सरी महापर्व पर प्रवचन हॉल पूरा भरा हुआ था। लगभग 200 श्रावक एवं 150 श्राविकाओं ने सायंकालीन प्रतिक्रमण किया। पुरुष वर्ग में 70 पौषध एवं संवर तथा महिला वर्ग में 70 पौषध एवं संवर हुए। आठों दिन प्रवचन के पश्चात् प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। *-राजीव मेहता, संयोजक, चातुर्मास समिति*

अजमेर- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास नियमित रूप से एकाशन एवं उपवास की लड़ी के साथ चल रहा है। यहाँ 9 जुलाई से 14 जुलाई तक महिलाओं का शिविर स्वाध्याय भवन में सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल शास्त्र चर्चा एवं युवकों की जिज्ञासा का समाधान किया जाता है। तत्पश्चात् प्रवचन एवं मध्याह्न में आगम वाचनी का कार्यक्रम रहता है। पर्युषण के दिनों में अंतगड सूत्र का वाचन एवं प्रवचन के अतिरिक्त ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ, प्रश्नमंच, संगीत आदि का आयोजन किया गया। मध्याह्न में कल्पसूत्र प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम चला। श्रीमती सुरेखा जी कर्णावट के 12 की तपस्या तथा राशिजी कोठारी के 10 की तपस्या सम्पन्न हुई। सुश्री निधिजी गाँधी, सुश्री निधिजी पोखरणा एवं श्री अक्षयकुमारजी नाहर के अठाई की तपस्या मौनपूर्वक हुईं। वृद्धावस्था में पुरुषार्थ करने वाले भाई-बहिनों में भागचन्दजी बंगानी, प्रेमबाईजी लोढ़ा, शिमलाबाई पोखरणा के तथा मुकेशजी कोठारी एवं पूजाजी गोलेच्छा के अठाई तप सम्पन्न हुआ है। आठों दिन पौषध संवर का भी ठाट रहा। एकाशन के मासक्षपण एवं द्विमासक्षपण चल रहे हैं। सावण के महीने में कई तेले हुए। पर्युषण पर्व में 51 तेले, आठों दिन नवकार मंत्र का जाप तथा अठाई तप सम्पन्न हुए हैं। *-चन्द्रप्रकाशजी कोठारी-अध्यक्ष*

जबलपुर - व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 6 के चातुर्मास में जिनवाणी की अविरल गंगा बह रही है। यहाँ जैन स्थानकवासी सेवा समिति एवं जैन स्थानकवासी चातुर्मास समिति के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय बालिका शिविर 13 से 15 अगस्त को अति उत्साह एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में जलगांव, जामनेर, भुसावल, करेली, नरसिंहपुर एवं जबलपुर से 110 बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर में महासती श्री मुदितप्रभाजी ने बालिकाओं को How to Control Your Anger एवं 'जीवन जीना एवं जीवन जीतना' तथा 'एक माँ की आप बीती' पर अपने विचार रखते हुए बालिकाओं को संस्कारित किया। महासती सिन्धु जी ने How to Express Yourself तथा Non doing Technology Break पर अपना वक्तव्य देकर बालिकाओं को संस्कारित किया। साथ ही महासती श्री अंजनाजी एवं महासती तितिक्षाजी

तीनों ही दिनों में साधना-आराधना करवाते रहे। 'भजन' गायन की प्रतियोगिताएँ सुश्री छायाजी भण्डारी जलगांव वालों ने तीनों दिन बालिकाओं को कराई। "Concentration Puzzles" आदि प्रतियोगिताएँ जलगांव निवासी अमृता भण्डारी एवं जबलपुर निवासी लीसा कोठारी ने करवाई। यहाँ मासक्षपण, 15,12,11,10,9 दिवसीय तपस्याओं के साथ अठाई, 7, 6, पचोला, चोला की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं तथा तेले की लड़ी चल रही है। एक सिद्धि तप, दो शीलव्रती, दो आजीवन रात्रिभोजन त्यागी बने हैं। जैन स्थानकवासी चातुर्मास सेवा समिति जिनेन्द्र ग्रुप की ओर से शिविरार्थी बालिकाओं को पारितोषिक वितरित किए गए। बालिकाओं ने शिविर के सम्बन्ध में अपने विचार लिखित में दिए। बालिकाओं को यह शिविर बहुत पसन्द आया। पर्युषण पर्वाराधन पर प्रतिदिन रुचिशील विषयों पर व्याख्यान हुए, यथा- जैन पर्वों की गहराई, तिथि का महत्त्व, प्रभु की भक्ति कैसे करें, बार-बार बीमार होने से बचें, आत्मा का एक्सरे, Keep आत्मा Clean, बेटा अपना फर्ज निभाना, भूलों को भूल जाओ, स्वयं को ऐसा बनाओ। *-मदनलाल बागमार, अध्यक्ष*

नेहरूपार्क,जोधपुर- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास में धर्मध्यान की विशेष प्रभावना हो रही है। महासती मण्डल का पुरुषार्थ श्रावक-श्राविकाओं में विशेष जागृति ला रहा है। प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् लगभग 1 घण्टा श्रावकों को थोकड़े सिखाने का कार्यक्रम निरन्तर चल रहा है। प्रातः 8.30 बजे से महासती श्री प्रीतिजी म.सा. सामयिक विषयों पर कुशलतापूर्वक विषय का निरूपण करते हैं। महासती श्री भावनाजी म.सा. विभिन्न आगमों में से मंथन करके नित नया नवनीत परोसते हैं। तदनन्तर व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. श्रावक के 21 गुणों का विवेचन-विश्लेषण करते हुए अपने प्रभावी प्रवचनों से जनमानस को भावविभोर कर देते हैं। व्याख्यान के तुरन्त पश्चात् श्राविकाओं को लगभग 1 घण्टा थोकड़ों का अध्ययन कराया जा रहा है, जिसमें बहूमण्डल की लगभग 60-70 सदस्याएँ विशेष रुचि के साथ अध्ययन कर रही हैं। दोपहर पश्चात् व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. दशवैकालिक सूत्र की वाचनी करते हुए गहन विवेचना करते हैं, जिसे सुनकर श्रावक-श्राविका हर्षानुभव करते हैं। रक्षा बंधन पर महासती-मण्डल ने विभिन्न प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान की अनूठी राखियाँ प्रस्तुत कर प्रत्येक आबालवृद्ध को प्रत्याख्यान हेतु प्रेरित किया। पर्युषण पर्व पर क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं में उत्साह, उमंग की उत्कृष्टता देखी गई। इस अवसर पर 35 अठाई तप एवं उससे ऊपर की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। वृयोवद्ध सुश्रावक श्री छतरचन्दसा मेहता ने 91 वर्ष की वय में दृढ़ मनोबल से अठाई तप करके सभी छोटे-बड़ों को तपस्या करने हेतु आदर्श प्रस्तुत किया कि तप में कोई शारीरिक परिस्थिति बाधक नहीं होती है। शताधिक तेले एवं अन्यविध छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ हुईं। वीर माता श्रीमती रेखाजी जैन-हिण्डौन ने संवत्सरी के दिन 20 उपवास के प्रत्याख्यान किए हैं। पर्युषण पर्व में संयम दिवस पर महासतीजी ने टी.वी. के दुष्परिणाम समझाते हुए टेलीविजन न देखने की पुरजोर प्रेरणा की, जिसके फलस्वरूप 15-20 जनों ने आजीवन टी.वी. न देखने का नियम ग्रहण किया। दान दिवस पर महासतीजी ने दान का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए प्रेरणा की कि आज जितना भी पैसा साथ में है, उसे दान की झोली में डाल देना। धर्मस्थान में अगर कुछ भी पैसा साथ में लेकर नहीं आए हैं तो अपने पहने हुए आभूषण झोली में डाल सकते हैं। हजारों नकद रुपयों के साथ सोने की पाँच अंगूठियाँ, दो गले की चेन, वह 3 जोड़ी पायजेब भी लोगों ने जीव दया हेतु झोली में डाल दी। संवत्सरी के दिन लगभग 121 पौषध की आराधना सम्पन्न हुई। यहाँ पर भोजनशाला में सुन्दर व्यवस्था है तथा बर्तन बुरादे से साफ किए जाते हैं। *-अरुण मेहता, संयोजक*

शिवमोग्गा- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश 03 जुलाई 2017 को गाँधी बाजार स्थित स्थानक भवन में जयकारों के साथ हुआ। मंगल प्रवेश के दिन से ही धर्मध्यान का ठाट लगा हुआ है। 8 एवं 9 जुलाई को 2 धर्म चक्र हुए और निरन्तर जप तथा तप की लड़ी चल रही है। आयंबिल तप और

तेले की लड़ी तथा 4 महिनों के लिए जाप की लड़ी के नाम अंकित हो गये हैं। एकाशन से लेकर उपवास, बेले, कई तेले, पचोले, अठाई, नौ की तपस्या एवं ग्यारह की तपस्या सम्पन्न हुई है। आगे भी तपस्याएँ जारी हैं। प्रत्येक शुक्रवार को महिलाओं का शिविर और प्रत्येक रविवार को बालक-बालिकाओं का शिविर तथा सामूहिक एकाशन, दया, 11 सामायिक की साधना बराबर चल रही है। 32 जने प्रतिक्रमण, 25 बोल, चिंतामणि स्तोत्र, भक्तामर, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नंदीसूत्र, 98 बोल, आत्मशुद्धि और छोटे-छोटे थोकड़े महासती मण्डल से सीखने आ रहे हैं। संघ में अच्छा उत्साह है। प्रवचन में संख्या की निरन्तर वृद्धि हो रही है। रविवार को उपस्थिति बहुत अधिक रहती है तथा श्रावकगण 5-5 सामायिक, एकाशन एवं बहिनें एकाशन तथा 7 से 11 सामायिकें करती हैं। श्रावक-श्राविकाओं में प्रतिक्रमण निरन्तर चल रहे हैं। दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। श्रीसंघ अतिथि सेवा का लाभ लेकर हर्षित है। 21 से 25 जुलाई को तीन पंचरंगियाँ, उपवास एवं सामायिक तथा सामूहिक तेले हुए। कई श्रावक प्रवचन और प्रतिक्रमण में प्रथम बार आ रहे हैं। रात्रि संवर, पौषध एवं प्रतिक्रमण का श्राविकाओं द्वारा लाभ लिया जा रहा है। आठ बहनों के एकान्तर उपवास तथा नौ बहनों के निरन्तर उपवास चल रहे हैं। सात बहनें लब्धि तप कर रही है। 21 से 23 जुलाई तक महिला शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 60 बहिनों ने भाग लिया। यहाँ विभिन्न 13 प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। *-मोहनकरण मेहता, अध्यक्ष-08182-224257, शांतिलाल मेहता, मंत्री-94484-37971*

काचीगुड़ा (हैदराबाद) - सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 का वर्षावास मोतियों की नगरी हैदराबाद में ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तपाराधन के साथ निरन्तर चल रहा है। 08 से 31 जुलाई तक श्रावक के 21 गुणों पर 21 दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें 35 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। 08 से 12 जुलाई तक 'एक कदम मोक्ष की ओर' शिविर प्रातःकाल 7 से 8 बजे तक रखा गया। महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. के निम्नांकित विषयों पर प्रभावशाली प्रवचन हुए- अब तुम्हारे हवाले शासन साधकों, वीर तेरे शासन के लिए, इतिहास बना देना, धरती के भगवान जैन संत, आने वाला ऐसा पल हो। लगभग 250 से 300 की संख्या में युवक-युवतियों ने सामायिक वेश में लाभ लिया। महासती श्री ज्योतिप्रभाजी के वर्तमान परिस्थिति से सम्बद्ध विषयों पर मार्मिक प्रवचन चल रहे हैं। वीर पिता श्री सुगनचन्दजी गुगलिया परिवार ने चार माह भोजन वात्सल्य का लाभ लिया। प्रत्येक रविवार को 1 से 3 बजे तक जैन धर्म का मौलिक इतिहास पर प्रश्न मंच चल रहा है। रत्नसंघ शासनसेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना, श्री कस्तूरचन्दजी बाफना, श्रीमती नयनताराजी बाफना, श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्री राजकुमारजी गोलेच्छा, श्री मनीषजी लोढ़ा, वीरपिता श्री विजयराजजी खिंवसरा, श्रीमती खिंवसरा, श्रीमती मंजुजी भण्डारी, श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया, श्री नमनजी मेहता आदि अतिथियों ने चातुर्मास में दर्शन-वंदन एवं प्रवचन का लाभ लिया है। *-श्रीपाल देशलहरा-093911-00974*

भायंदर (मुम्बई)- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 का महावीर अपार्टमेन्ट, भाजी गली, स्टेशन रोड़, भायंदर में चातुर्मास उत्साहपूर्वक चल रहा है। गुजराती समाज एवं मारवाड़ी समाज अच्छा लाभ ले रहे हैं। नवदीक्षिता महासती श्री आराधनाश्रीजी के 31 उपवास की तपस्या समाधिपूर्वक सम्पन्न हुई। महासतीजी के मासक्षपण पूर के दिन 300 एकाशन और 51 उपवास सम्पन्न हुए। चातुर्मास में भिन्न-भिन्न विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। तपस्या में सभी निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। तेले, अठाई की गिनती नहीं है। श्री राजेन्द्रजी नवलखा एवं श्रीमती सुरेन्द्रजी चपलोत ने 14 की तपस्या पूर्ण की है। श्रीमती चपलोत आगे बढ़ रही हैं। 13 से 15 अगस्त को श्री तरुणजी बोहरा के द्वारा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 200-250 बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों ने भाग लिया। पर्युषण के आठों दिन नवकार मंत्र का अखण्ड जाप, 3 से 4 धार्मिक प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई। सायंकालीन प्रतिक्रमण में सातों दिन बहिनों की संख्या 300 से 350 तथा संवत्सरी के

दिन 750 से 800 के करीब रही। संवत्सरी को पोद्दारा स्कूल के ग्राउण्ड में प्रवचन रखा गया, जो 1 बजे तक चला। 2000 से 2500 की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने बिना माईक के भी प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। वातावरण में पूर्ण शान्ति होने से आवाज दूर तक जा रही थी। हर्ष का विषय रहा की विगत 36 वर्षों में इतनी संख्या एवं समन्वय पहली बार दिखाई दिया। गुजराती भाई-बहिनों का उत्साह देखकर रत्नसंघ के पदाधिकारियों को सुखानुभूति हुई। अनगिनत उपवास, 15 बेले, 200 तेले, आठ चोले, चार पचोले, 6 एवं 7 दिवसीय तप के साथ 65 अठाई, 5 नौ, 8 ग्यारह, 3 सोलह एवं 18 की तपस्या सम्पन्न हुई। रेखाजी जैन के 54 की तपस्या चल रही है, अभी आगे बढ़ने की भावना है। श्री अशोकजी-आशाजी कोठारी एवं संतोषकुमारजी-कान्ताजी मेहता ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है। *-रतनराज भण्डारी-98226-41172, विक्की मेहता, 093212-85582*

भोपालगढ़ में संघ व संघीय संस्थाओं की वार्षिक आमसभा, गुणी अभिनन्दन, वार्षिक अधिवेशन तथा कार्यकारिणी सभाओं का आयोजन 15-16-17 सितम्बर 2017 को

1. श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन तथा कार्यकारिणी बैठक 15 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन, शुक्रवार, 15 सितम्बर 2017 को भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर) में दोपहर 12.30 बजे आयोजित किया जायेगा। कार्यकारिणी बैठक इसी दिन सायं 7.30 बजे रखी गई है।

2. युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन 16 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन शनिवार, **16 सितम्बर, 2017** को भोपालगढ़ में दोपहर 12.30 बजे आयोजित किया जा रहा है। कार्यकारिणी बैठक इसी दिन सायं 8 बजे रखी गई है।

3. श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी बैठक 16 सितम्बर को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी बैठक शनिवार, 16 सितम्बर 2017 को सायं 8 बजे रखी गई है। इसी दिन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी बैठक प्रवचन पश्चात् आयोजित है। सभी कार्यकारिणी सदस्य सादर आमंत्रित हैं।

4. संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त वार्षिक आमसभा 17 सितम्बर को

संघ एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा रविवार, 17 सितम्बर 2017 को अपराह्न 3.00 बजे क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़, जिला-जोधपुर में रखी गई है, जिसमें सभी संघ-सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। वार्षिक साधारण सभा में विचारणीय बिन्दु इस प्रकार हैं-

1. गत बैठक की कार्यवाही का पठन
2. संचालन समिति/कार्यकारिणी की बैठक में लिए गये निर्णयों की जानकारी/अनुमोदन।
3. संघ व संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक प्रतिवेदन एवं सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार।
4. संघ व संघ की कार्यकारिणियों द्वारा स्वीकृत वर्ष 2016-2017 के वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष 2017-2018 के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
5. अंकेक्षक की नियुक्ति।
6. संघ की सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्ष/संयोजक द्वारा अभिव्यक्ति।

7. राष्ट्रीय संघाध्यक्ष महोदय द्वारा अभिव्यक्ति।
8. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री

गुणी-अभिनन्दन समारोह में संघ द्वारा प्रदेय सम्मान

कार्यक्रम स्थल : श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.)

17 सितम्बर 2017 , दोपहर 12.30 बजे से

मुख्य अतिथि : माननीय न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्रमलजी लोढ़ा
(पूर्व मुख्य न्यायाधिपति, सर्वोच्च न्यायालय, दिल्ली)

अध्यक्षता : माननीय श्री पी.एस. सुराणा
(अध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री भूपेन्द्रजी दक
(अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, आयोजना, आधुनिकीकरण और कल्याण, राजस्थान)

भोपालगढ़ में आयोज्य गुणी-अभिनन्दन समारोह के अन्तर्गत निम्नांकित महानुभावों का अभिनन्दन किया जायेगा। यह निर्णय न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया की अध्यक्षता में चयन समिति द्वारा लिया गया।

संघ रत्न सम्मान- संघ-संरक्षक श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर

आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान- डॉ. सुषमाजी सिंघवी-जयपुर

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान- श्री धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर

विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान- श्रीमती लीलाजी सालेचा-जलगांव

विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान- श्री निर्मलजी मुथा-पीपाड़सिटी

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान- श्री अंचितजी भण्डारी-जोधपुर

गुणी अभिनन्दन के अन्तर्गत-

1. सामूहिक रात्रिभोजन त्याग हेतु विशेष प्रयास हेतु- श्री विमलचन्दजी सुराणा-चेन्नई
2. संघ-सेवा हेतु- श्री नरपतराजजी चौपड़ा-जोधपुर
3. तपस्या हेतु- श्री मोहनलालजी जैन-सवाईमाधोपुर

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान- 1. डॉ. धीरेन्द्र कुमार जलवानी-जोधपुर, 2. डॉ. सुधाजी भण्डारी-उदयपुर, 3. डॉ. ममताजी जैन-उदयपुर, 4. डॉ. संगीताजी खारीवाल-बैंगलुरु।

आवश्यकसूत्र प्रतियोगिता का परिणाम घोषित एवं उत्तराध्ययनसूत्र के पुरस्कारों का वितरण

श्रावक-श्राविकाएँ सुज्ञ और तत्त्वज्ञ बनें इस हेतु, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल का उपदेशों के माध्यम से पुरजोर प्रयास रहता है। गुरुद्वय के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ प्रसंग पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु **'बनें आगम अध्येता'** योजना का अनुष्ठान प्रारम्भ किया गया है जिसके अन्तर्गत दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अन्तगडदसासूत्र, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र (1 से 3 भाग) व आवश्यकसूत्र

की परीक्षाएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। उत्तराध्ययनसूत्र परीक्षा के पारितोषिक सभी प्रतिभागियों को भिजवाए जा चुके हैं तथा शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को पारितोषिक भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर) में आयोजित 15 सितम्बर, 2017 को श्राविका मण्डल के वार्षिक अधिवेशन में प्रदान किया जायेगा। आवश्यकसूत्र परीक्षा का पारितोषिक शीघ्र ही प्रतिभागियों को प्रेषित किया जायेगा, यहाँ वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। अन्य प्रतियोगियों को परिणाम मोबाइल पर सूचित किया जाएगा। आवश्यक सूत्र खुली पुस्तक परीक्षा में 3897 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें से प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के नाम इस प्रकार हैं:-

प्रथम स्थान- रुचि कमलचन्दजी जैन-जयपुर (राज.) (99.5 प्राप्तांक)

द्वितीय स्थान- ममता दिलीपकुमारजी राखेचा-बुलढ़ाणा (महा.) (99 प्राप्तांक)

तृतीय स्थान- बबीता विमलकुमारजी गादिया-चेन्नई (तमिलनाडु) (97.5 प्राप्तांक)

टॉप टेन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के नाम:- 1. सेजल सचिनजी रांका-राहुरी (महा.) (97), 2. माधुरी जितेन्द्रजी जैन-आगरा(उत्तरप्रदेश) (97), 3. चन्द्रकला विजयजी चौधरी-विल्लीपुरम् (तमिलनाडु) (97), 4. नम्रता प्रीतमजी पीपाड़ा-सुपा (महा.) (97), 5. नथमल सम्पतलालजी कोठारी-बालोद (मध्यप्रदेश) (97), 6. अरुणा बी.एल.बोरा-भोपाल (मध्यप्रदेश) (97), 7. निशा निर्मलजी जैन-चौथ का बरवाड़ा (राज.) (97), 8. सुवर्णा राजेन्द्रजी लुणावत-अहमदनगर (महा.) (97), 9. स्वाति शांतिलालजी कोठारी-बुलढ़ाणा (महा.) (97), 10. उषा पदमचन्दजी जैन-अजमेर (राज.) (97)।

पुरस्कार प्राप्ति हेतु प्रत्येक प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी भिजवाने का श्रम करावें:- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No. आगामी परीक्षा हेतु नये आगम की सूचना शीघ्र देने का प्रयास रहेगा।

-बीना मेहता-महासचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 400 स्वाध्यायियों द्वारा 142 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा वर्ष 2017 में 142 क्षेत्रों में लगभग 400 स्वाध्यायियों द्वारा पर्युषण सेवा प्रदान की गई, जिसमें महाराष्ट्र क्षेत्र में 45, तमिलनाडु क्षेत्र में 36, मारवाड़ क्षेत्र में 3, मेवाड़ क्षेत्र में 3, पोरवाल क्षेत्र में 14, पल्लीवाल क्षेत्र में 21, मध्यप्रदेश क्षेत्र में 10 तथा अन्य 10 क्षेत्रों में स्वाध्यायियों की पूर्ति की गई। सभी स्थानों पर अच्छी धर्माराधना हुई। सम्पूर्ण जानकारी आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी। *-ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक*

सबसे विनम्र अनुरोध

स्वाध्याय संघ जोधपुर की प्रवृत्तियों में आर्थिक सहयोग एवं पर्युषण सहयोग देकर पुण्य के भागीदार बनें। कोई भी संस्था श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को पर्युषण सहयोग राशि अथवा अन्य कोई राशि सहयोग करना चाहें तो वह राशि चैक/डी.डी. द्वारा श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के नाम से भिजवा सकते हैं अथवा ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स जोधपुर के ऑनलाइन बैंक खाता संख्या 00592010003010 IFSC Code-ORBC0100059 में इस नाम से नकद अथवा ड्राफ्ट द्वारा जमा करवा सकते हैं। आर्थिक एवं पर्युषण सहयोग आयकर अधिनियम 80जी के अन्तर्गत कर से मुक्त है। सहयोग राशि जमा कराने वाले संघ एवं संस्थान से विनम्र अनुरोध है कि सहयोग राशि जमा कराने के साथ कार्यालय में सूचना अवश्य करावें ताकि सहयोग राशि की रसीद सम्बन्धित व्यक्ति को समय पर भिजवाई जा सके, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। **सम्पर्क सूत्र:**- 0291-2624891

(कार्यालय), मो. 9414126279 (कार्यालय समय प्रात: 10:00 से सायं 05:00) -*ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक*

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की उपलब्धियाँ

बालक-बालिकाओं को बचपन से आध्यात्मिक, नैतिक संस्कारों का बीजारोपण हो, इस लक्ष्य से वर्ष 2006 से प्रारम्भ हुए आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र को अभियान के रूप में उच्च स्तर पर व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने हेतु 2011 के आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के जोधपुर चातुर्मास में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र जोधपुर की स्थापना हुई। मुख्यालय जोधपुर में इस समय साप्ताहिक रविवारीय शिविरों की संख्या 41 है, जबकि 33 दैनिक संस्कार केन्द्र कार्यरत हैं, जिनमें क्रमशः 850 और 450 बालक-बालिकाएँ लाभान्वित हो रहे हैं। मारवाड़, मेवाड़, पल्लीवाल, पोरवाल क्षेत्र सहित सम्पूर्ण राजस्थान में 36 संस्कार केन्द्रों पर 900 बालक-बालिकाओं को संस्कारित किया जा रहा है। सूरत एवं जलगांव में 6 संस्कार केन्द्रों में 170 बालक-बालिकाओं को लाभ मिल रहा है। संस्कार केन्द्रों की व्यवस्था में 90 अध्यापक-अध्यापिकाएँ सेवाएँ दे रहे हैं, जिनका मासिक खर्च लगभग एक लाख रुपये है। छात्र-छात्राओं को आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन करवाया जा रहा है। निरन्तर प्रगति हेतु निरीक्षण एवं डॉयरी लेखन का प्रावधान किया गया है। बालकों को पुरस्कार भी प्रदान किये जाते हैं। संस्कार केन्द्र की Domain ID बना ली गई है। 'बहिना! तुमसे है कुछ कहना' कार्यक्रम, मिड-ब्रेन एक्टिवेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम, मौखिक प्रतिक्रमण परीक्षा आदि का व्यवस्थित एवं प्रभावी आयोजन किया गया।

30 जुलाई 2017 को जयनारायण व्यास टाउनहॉल जोधपुर में प्रतिभा-प्रदर्शन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें चन्दनबाला नाटिका, सुबह हो गई नाटिका, सांस्कृतिक नृत्य, गुरु वंदना, योग-प्राणायाम-ध्यान, मिड-ब्रेन एक्टिवेशन, गायन, कविता, पाठ उच्चारण, मुक्ति का राही पुस्तक से संवाद, प्रतिक्रमण प्रश्नोत्तर, जैन विश्व गान, स्वागत गीत, प्रतिज्ञा पाठ आदि का भव्य प्रदर्शन बालक-बालिकाओं द्वारा किया गया। मंगलाचरण से शुभारम्भ हुए इस कार्यक्रम में संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धन जी ललवाणी ने स्वागत भाषण और प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा ने की तथा अनेक गणमान्य पदाधिकारी एवं महानुभाव इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। श्री पी. शिखरमलजी सुराणा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीला जी सुराणा को माला, शॉल आदि द्वारा सम्मानित किया गया। -*राजेश भण्डारी, सचिव*

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना रत्न संघ के अष्टम पट्टधर आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से 11 वर्षों से निराबाध रूप से गतिशील है। वर्ष 2017-18 के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र योजना समिति से प्राप्तकर पूर्ण कर सकते हैं।

1. योजना समिति द्वारा छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करने की तिथि को 31 अगस्त से बढ़ाकर 30 सितम्बर 2017 कर दिया गया है। अपने आवेदन-पत्र 30 सितम्बर के पूर्व भेजने का लक्ष्य रखें।
2. छात्रवृत्ति योजना से संबंधित नियमावली जानने के लिये जुलाई-2017 माह की जिनवाणी के पृष्ठ संख्या 59 का अवलोकन करें।

3. आवेदन-पत्र निम्नलिखित पते पर प्रेषित करावें-M. Harish Kavad, "Guru Hasti Thanga Maaligai", No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai (TN), Mob. 95430-68382
4. छात्रवृत्ति योजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन-095430-68382

-हरीश कवाड़, संयोजक-छात्रवृत्ति योजना

चेन्नई में दिन में ही विवाह भोज के आयोजन की निरन्तरता

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के अन्तर्गत गठित सामूहिक रात्रिभोज-त्याग समिति के संयोजक श्री विमलचन्दजी सुराणा एवं समस्त सहयोगी सदस्यों के सद्प्रयास से वर्तमान में चेन्नई में निम्नलिखित गुरु भ्रातागण के यहाँ शुभ विवाह के मंगल प्रसंगों पर सामूहिक भोज के कार्यक्रम दिन में आयोजित किये गये हैं-

1. श्री महेन्द्रकुमारजी कांकरिया सुपुत्र श्री अनराजजी कांकरिया, अध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु ने अपनी सुपुत्री प्रिया के शुभविवाह के समस्त कार्यक्रम व प्रीतिभोज दिन में आयोजित किये एवं महासंघ के नियमानुसार सीमित व्यंजन रखे गये।
2. श्री सुगनचन्दजी बोथरा सुपुत्र श्री भंवरलालजी बोथरा, उपाध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु ने अपनी सुपुत्री नेहा के शुभविवाह के कार्यक्रम व प्रीतिभोज दिन में आयोजित किये।
3. श्री नेमीचन्दजी खिंवसरा सुपुत्र श्री सायरचंदजी खिंवसरा ने अपने सुपुत्र दिनेश के शुभविवाह के समस्त कार्यक्रम व प्रीतिभोज दिन में आयोजित किये एवं महासंघ के नियमानुसार सीमित व्यंजन रखे गये। विशेष रूप से वर-वधू पक्ष का प्रीतिभोज संयुक्त रखा गया।
4. श्री अशोकजी बाफणा सुपुत्र श्री मोहनलालजी बाफणा, सहसंयोजक, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, तमिलनाडु शाखा द्वारा अपने सुपुत्र श्री अभिषेक के शुभविवाह के समस्त कार्यक्रम व विशेष रूप से वर-वधू पक्ष का प्रीतिभोज कार्यक्रम संयुक्त रखा गया।
5. श्री श्रेणिककुमारजी चोरडिया सुपुत्र श्री बस्तीमलजी चोरडिया कार्यकारिणी सदस्य श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु द्वारा अपने सुपुत्र कुणाल के शुभविवाह के समस्त कार्यक्रम में सचित फूलों का उपयोग नहीं किया गया।
6. श्री सुभाषचन्दजी कोठारी सुपुत्र श्री चैनराजजी कोठारी ने अपनी सुपुत्री ममता के शुभविवाह के समस्त कार्यक्रम एवं प्रीतिभोज का आयोजन दिन में रखा। विशेष रूप से आपने नजदीक विवाह स्थल उपलब्ध होते हुए भी दूरस्थ स्थल पर कार्यक्रम रखा, क्योंकि नजदीक विवाह स्थल नॉनवेज उपयोग में करने वाले को भी उपलब्ध करवाया जाता था।

उपर्युक्त समस्त कार्यक्रमों में जमीकन्द का उपयोग नहीं किया गया। समस्त संघ-भ्राताओं का संघ की ओर से साफा, शाल्यार्पण, माल्यार्पण एवं अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

पूर्व में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं युवक परिषद् तमिलनाडु के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने, सामूहिक रात्रिभोजन त्याग समिति के संयोजक ने तथा श्री सुधीरकुमारजी सुराणा, श्री अशोककुमारजी कवाड़, श्री बुधमलजी बोहरा, श्री भूरमलजी कर्णावट, श्री विमलचन्दजी सुराणा, श्री पदमचन्दजी कवाड़, श्री पदमचन्दजी सेठिया, श्री राजेन्द्रकुमारजी सेठिया, श्री किशोरकुमारजी डाकलिया, श्री सुरेशचन्दजी सुराणा, श्री प्रेमचन्दजी लोढ़ा, श्री प्रेमचन्दजी हुण्डीवाल, श्री पारसमलजी सुरेशकुमारजी कोठारी, श्री नरेन्द्रजी कोठारी, श्री पदमचन्दजी सुराणा, श्री नवरतनजी कवाड़, श्री प्रेमचन्दजी कवाड़, श्री गौतमचन्दजी कवाड़, श्री दुलीचन्दजी अरुणजी बाघमार, श्री गणपतराजजी बाघमार, श्री अशोकजी कोठारी एवं श्री बी. नवरतनमलजी बाघमार आदि गुरुभ्रातागणों ने

कार्यक्रम व प्रीतिभोज दिन में आयोजित कर आदर्शमय अनुपम उदाहरण संघ एवं समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि तमिलनाडु के गुरु भ्रातागण से प्रेरणा लेकर अखिल भारतीय संघ के पदाधिकारीगण एवं रत्नसंघ के सभी शाखाओं के पदाधिकारीगण व सदस्य 'गुरु को ही नहीं, गुरु की भी मानते हुए' सामूहिक रात्रिभोजन का आयोजन रात्रि में नहीं करेंगे। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव-098411-48948*

करुणा क्लबों का निरन्तर विस्तार

विद्यार्थियों के बाल मन में प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, अहिंसा, दया, सौहार्द, पशुकल्याण, पर्यावरण चेतना, नैतिकता, व्यसन-मुक्ति, देशभक्ति आदि मानवीय मूल्यों की स्थापना करने की दृष्टि से करुणा अन्तरराष्ट्रीय द्वारा राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु आदि विभिन्न प्रान्तों के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में करुणा क्लब संचालित किए जा रहे हैं। वर्तमान में 2600 करुणा क्लब, 39 करुणा केन्द्र 800 कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित हैं। करुणा क्लब से लाभ हैं- 1. नैतिक गुणों की अभिवृद्धि, 2. सामाजिक दायित्व की भावना का विकास, 3. विश्व स्तरीय भाईचारे की भावना का विकास, 4. संकीर्ण धार्मिक विचारधाराओं से ऊपर उठकर मानवीय धर्म निभाने की तत्परता। करुणा क्लबों के कारण लगभग 1,70000 विद्यार्थी शाकाहारी बने हैं। लगभग 5,00,000 विद्यार्थियों ने जीव-जन्तुओं से बनी वस्तुओं का परित्याग किया है। *-कैलाशमल दुगड़, अध्यक्ष-98410-08585, पदमकुमार टाटिया-महामंत्री-98408-42148,* Website : www.karunainternational.org

विश्वविद्यालयों में जैनदर्शन तथा प्राकृत भाषा विभाग को मिले विशेष संरक्षण

पूना- श्रमण संघीय डॉ. पुष्पेन्द्र मुनिजी ने केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री को पत्र लिखकर कहा है कि वर्तमान में अल्पसंख्यक जैन धर्म के विचारों, शिक्षाओं, दर्शन, संस्कृति तथा साहित्य के संवर्धन, अध्ययन, अध्यापन, शोध व संरक्षण के लिए कुछ भारतीय विश्वविद्यालयों में जैनविद्या या जैनदर्शन विभाग तथा जैन धर्म के आगमों की भाषा 'प्राकृत' के संरक्षण, संवर्धन, अध्ययन, अध्यापन तथा शोध के लिए प्राकृत भाषा विभाग स्वतंत्र रूप से संचालित हैं, लेकिन वर्तमान में कुछ विसंगतियों तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण इन विभागों के अस्तित्व पर संकट गहरा रहा है। इसको देखते हुए विश्वविद्यालयों में जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा विभाग को विशेष संरक्षण दिया जाना चाहिये।

जैनदर्शन और प्राकृत भाषा उत्थान और विकास में जो संकट आ रहे हैं, उनके निवारण के लिए सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से आपसे निम्नलिखित तथ्यों पर गंभीरतापूर्वक विचार के लिए आग्रह किया जाता है:-

1. चूंकि जैनविद्या और प्राकृत विभाग देश में बहुत ही कम संख्या में हैं, अत: इस दर्शन और भाषा के संरक्षण के लिए देश के सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों में इनकी स्थापना की जाय।
2. जिन थोड़े स्थानों पर ये विभाग हैं, वहाँ अध्यापकों के पदों की संख्या नगण्य है, अत: नए पद सर्जित किये जाएँ।
3. इन विभागों में जो पद हैं, उन्हें विशेष अल्पसंख्यक संरक्षण के तहत किसी भी जाति के लिए आरक्षित न किया जाय तथा उन्हें नियमपूर्वक सदैव सामान्य श्रेणी के अंतर्गत ही विज्ञापित किया जाय और भरा जाय।
4. विशेष अल्पसंख्यक संरक्षण के तहत इन विभागों की संरचना तथा सञ्चालन में विभाग में अध्यापक और विद्यार्थी यदि कम भी हों तो भी इन विभागों को बंद न किया जाय अथवा अन्य विभागों में विलीन न किया जाय।

5. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सभी विश्वविद्यालयों में जिस प्रकार भगवान् बुद्ध, गुरु गोविन्दसिंहजी तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विशेष अध्ययन के लिए चेयर (देखें, पत्र संख्या D-O-No-F-91 & 25/2015 (SUI&I) Dated 27/09/2016) स्थापित कर रहा है, उसी प्रकार तीर्थंकर भगवान् महावीर की चेयर्स भी अवश्य स्थापित की जाए।
6. प्राकृत भाषा के संरक्षण, अध्ययन तथा अनुसन्धान के लिए केंद्र सरकार द्वारा देश में एक 'प्राकृत अकादमी' की स्थापना अवश्य की जाय।

जैन छात्रों के लिए श्री उत्तम स्वाध्याय भवन, जयपुर (छात्रावास) में प्रवेश प्रारम्भ

जयपुर के मालवीय नगर- हरिमार्ग पर स्थित श्री उत्तम स्वाध्याय भवन में उच्च स्तरीय अध्ययन RAS, IAS, SSC, RPSC, RJS, RPET, MBA, CA, CS आदि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु जैन छात्रों के लिए सुविधायुक्त ठहरने व भोजन की उत्तम व्यवस्था शुरू की जा रही है। यहाँ पर प्रवेश लेने वाले छात्र को यहाँ की नियमावली एवं अनुशासन का पालन करना अनिवार्य होगा। प्रवेश फार्म भरने के पश्चात् साक्षात्कार द्वारा छात्रों का चयन किया जावेगा। प्रवेश फार्म व अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें। **छात्रावास का पता**–श्री उत्तम स्वाध्याय भवन, सी–314, जैन स्थानक के पीछे,हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर–302017 (राज.)-*प्रमोद महनोत, अध्यक्ष-स्थानकवासी जैन सोसायटी, सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान), टेलिफोन-0141-2525125, मो. 9829052094*

संक्षिप्त समाचार

बैंगलोर (कर्नाटक)- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, बैंगलोर द्वारा मानव सेवा हेतु Limb donation कार्यक्रम के अन्तर्गत 133 कृत्रिम पांव एवं 62 डायलिसिस दिए गए। भगवान महावीर अस्पताल में कर्नाटक मारवाड़ी यूथ फेडरेशन कृत्रिम पांव केन्द्र संस्था को एक बड़ी राशि का योगदान दिया गया। -*वैजन्ती मेहता, अध्यक्ष*

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न युवक परिषद् भोपालगढ़ के तत्त्वावधान में 'लक्ष्य अब दूर नहीं' विषय पर 06 अगस्त 2017 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री तरुणजी बोहरा ने 13 से 35 वर्ष के युवक–युवतियों को अपने ओजस्वी उद्बोधन में बताया कि नशा शरीर के अंगों तथा मानसिक प्रवृत्ति को विकृति की ओर ले जाता है। नशा त्याग करने की प्रभावी प्रेरणा के साथ श्री बोहरा ने स्वानुशासन व समय की पाबन्दी का आह्वान किया। इस अवसर पर उपस्थित बहनों ने राखी बांधने से पहले अपने भाइयों को नशा त्याग करवाने का प्रण लिया। कार्यशाला में 200 जैन–जैनेतर युवक–युवतियों ने भाग लिया।

-हितेश रांका, मंत्री-श्री जैन रत्न युवक परिषद्, भोपालगढ़

रायपुर (छतीसगढ़)- रायपुर दुर्ग हाइवे पर ग्राम कुम्हारी में कैवल्यधाम तीर्थ के निकट पूज्य श्री महेन्द्रसागरजी, युवा मनीषी श्री मनीषसागरजी महाराज एवं मरुधर ज्योति पूज्या श्री मणिप्रभाजी म.सा. की प्रेरणा से 'विचक्षण जैन विद्यापीठ' की परिकल्पना साकार रूप ले रही है। यह विद्यापीठ लगभग 11 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है, जहाँ दो लाख वर्ग फुट का निर्माण तीव्र गति से हो रहा है। इस संस्थान के प्रमुख तीन विभाग हैं– 1. साधना आश्रम, 2. गुरुकुल, 3. स्कूल। साधना–आश्रम में अध्ययन एवं साधना करने वाले साधकों की व्यवस्था रहेगी। गुरुकुल में संस्कृत, प्राकृत एवं जैन धर्म के अध्ययन की सुविधा रहेगी, इसके माध्यम से जैन समाज में पण्डित, पुजारी,

विधिकारक, संगीतकार, संचालक आदि की शिक्षा भी दी जायेगी। स्कूल में अंग्रेजी माध्यम से सीबीएसई पेटर्न पर शिक्षा प्रदान की जायेगी। स्कूल में प्रवेश की प्रक्रिया 09 अप्रेल 2017 से प्रारम्भ हो चुकी है। **सम्पर्क सूत्र:-** 98271-13615, 94255-02017, **ईमेल:-** vidyapeeth108@gmail.com, vvpeethraipur@gmail.com

सूरत- आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से 58 वर्षीय मुमुक्षु श्रीमती सीताबाई गौतमचन्दजी कटारिया, हैदराबाद-राणावास एवं 28 वर्षीय मुमुक्षु सुश्री खुशबु भंवरलालजी पारख, बालोद-छत्तीसगढ़ की जैन भागवती दीक्षा अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। *-महेश नाहटा, नगरी*

उदयपुर- राजस्थान के वन व पर्यावरण मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर ने 17 अगस्त 2017 गुरुवार को उदयपुर में संभागीय आयुक्त कार्यालय में आयोजित कार्यशाला में कहा कि सरकार ने झीलों में मछली पकड़ने पर पूर्ण प्रतिबंध का फैसला किया है, जो आगामी वर्ष से प्रभावी हो जायेगा। इसके बाद मत्स्याखेट के ठेके प्रतिबंधित कर दिये जायेंगे। उन्होंने कहा कि झीलों के किनारे और टापुओं पर पक्षियों का बसेरा रहता है। पक्षियों के जीवन को मछली पकड़ने के ठेके बुरी तरह प्रभावित करते हैं। अत: पक्षियों के संरक्षण के लिए भी मत्स्याखेट बन्द होना जरूरी है। इधर, उदयपुर के गुलाबबाग में लगभग साढ़े ग्यारह करोड़ रुपयों का पक्षी विहार (बर्ड पार्क) बनना प्रस्तावित है। सरकार पक्षी विहार के आसपास आतिशबाजी पर प्रतिबंध लगाने के लिए भी विचार कर रही है। *-डॉ. दिलीप धींग*

दिल्ली- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली में 16 अगस्त 2017 को जैन दर्शन विभाग के अन्तर्गत जैन विद्या के सर्टिफिकेट कोर्स का उद्घाटन माननीय कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। कुलपतिजी ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि विद्यापीठ की स्थापना में जैन समाज का बहुत योगदान रहा है। जैन विद्या के सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स के प्रारम्भ होने से दिल्ली की समाज के लोग अपने ज्ञान का विकास कर सकेंगे।

-डॉ. अनेकान्तकुमार जैन, पाठ्यक्रम संयोजक-97113-97716

बालोतरा- श्री हस्ती कल्याण संस्थान के सहयोग से एम्बुलेंस सेवा का शुभारम्भ राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द जी कटारिया द्वारा किया गया। श्री कटारिया ने संस्थान के सेवा-कार्यों को उल्लेखनीय बताया तथा रियायती दर पर जरूरतमंदों के लिए उक्त एम्बुलेंस सेवा को उपयोगी बताया। संस्थान के सचिव श्री ओमप्रकाशजी बांठिया ने गत 25 वर्षों से विभिन्न सेवा-कार्यों की जानकारी दी।

भोपाल- श्रमणसंघीय उपप्रवर्तक श्री अक्षयऋषिजी म.सा. व श्री अमृतऋषिजी म.सा. की पावन निश्रा में आचार्य श्री आनन्दऋषिजी म.सा. की 117 वीं जन्म जयंती सप्त दिवसीय महोत्सव के रूप में सोल्लास मनायी गयी। दर्शन, चारित्र व तप आराधना के अन्तर्गत प्रतिदिन विशेष जाप, विभिन्न त्याग यथा- रात्रिभोजन-त्याग, कंदमूल त्याग आदि व संवर, पौषध, सामायिक का बेला व तेला, एकाशन दिवस, ऊणोदरी, तेला दिवस, आयंबिल दिवस आयोजित किये गये। *-अरविन्द चौरडिया, मंत्री*

भीलवाड़ा- गुरुभक्त श्री राजेन्द्रजी गोखरू जैन इण्टरनेशनल ट्रेड ऑर्गोनाइजेशन (JITO) भीलवाड़ा चेप्टर के चेयरमेन घोषित किए गए हैं। आपकी सेवा भावना के साथ धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पाजी गोखरू भी तप-त्याग, सामायिक-सेवा आदि सभी गतिविधियों में आगे रहती हैं।

जयपुर- राज्य के प्रतिष्ठित 'समाज रत्न सम्मान-2017' हेतु खेल, कला, समाज सेवा, साहित्य, चिकित्सा, रक्तदान, पर्यावरण, संग्रहण, शोध, नशा मुक्ति, शिक्षा आदि किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, कर्मठता व सेवा

भावना से कार्य कर रहे व्यक्ति या संस्थाओं की प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। इच्छुक व्यक्ति **15 सितम्बर, 2017** तक राजस्थान जन मंच, पक्षी चिकित्सालय, 13-ए, सैन्ट एन्सलम स्कूल के पास, कैलगिरी रोड़, मालवीय नगर, जयपुर के पते पर प्रविष्टि भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- कमल लोचन-098280-22433

बधाई

'आचार्य श्री हस्ती अहिंसा अवार्ड' से सम्मानित हुए दिव्यांगों के मसीहा श्री यजुर्वेन्द्र महाजन

जलगांव- दीपस्तम्भ संस्था के संस्थापक श्री यजुर्वेन्द्र जी महाजन को 'रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन' जलगांव की ओर से 'आचार्य श्री हस्ती अहिंसा अवार्ड' के अन्तर्गत 5 लाख रुपये की राशि, शॉल, माला से हजारों भाई-बहिनों की उपस्थिति में 'कांताई हॉल' के सभागृह में सम्मानित किया गया। दीपस्तम्भ संस्था दिव्यांगों के शिक्षण-प्रशिक्षण से लेकर उनके सहयोग के लिए कार्य करती है। इस अवसर पर श्री रतनलालजी बाफना ने कहा- ''दिव्यांगों के लिए यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर हो इस हेतु 'रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट' की ओर से इस महान् कार्य के लिए 'प्रेरणा तीर्थ' बनाने हेतु **दो एकड़ जमीन एवं 1 करोड़ की राशि** मैं दीपस्तम्भ फाउण्डेशन को समर्पित करता हूँ।''

श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई ने अपने अध्यक्षीय भाषण में दीपस्तम्भ के कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्था प्रज्ञाचक्षुओं एवं दिव्यांगों के लिए मनोबल बढ़ाने का कार्य कर रही है। यह कार्य और आगे बढ़े इस हेतु उन्होंने अपनी ओर से 11 लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की। इस कार्यक्रम में श्री नवरतनमलजी कोठारी, श्री पारसचन्दजी हीरावत-मुम्बई, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, श्री पूरणराजजी अबानी-जोधपुर, श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, पूर्व सांसद श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी-जलगांव, जैन उद्योग समूह के श्री अशोकजी जैन आदि संघ सदस्य भी उपस्थित थे। पुरस्कार प्राप्त यजुर्वेन्द्र महाजन ने कहा-'इस राशि से आने वाले 2 वर्षों में राष्ट्रीय स्तर की संस्था खड़ी की जाएगी जहाँ पर क्रोनिक डिसेबल विकलांग बच्चों को शिक्षा दी जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि आज डेढ़ करोड़ विकलांग बच्चे हैं।' नागपुर के आयकर आयुक्त शौर्य गुप्ता ने यजुर्वेन्द्र महाजन के कार्यों की सराहना की। दीपस्तम्भ की ओर से दिव्यांग लक्ष्मी ने पैरों से आभार-पत्र लिखकर समर्पित किया। -*सुशील बाफना*

प्रो. प्रेमसुमन जैन को प्राकृत ज्ञान भारती अवार्ड

उदयपुर- प्राकृतविद्याविद् प्रोफेसर प्रेमसुमन जैन को बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोला के संस्थापक अध्यक्ष स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति की ओर से स्वर्णपदक के साथ विद्यापीठ का सर्वोच्च सम्मान **'प्राकृत ज्ञानभारती अन्तरराष्ट्रीय अवार्ड'** प्रदान किया गया। सम्मान के अन्तर्गत उन्हें शाल, माला एवं तीन लाख रुपयों की राशि के साथ प्रशस्तिपत्र राजस्थान के गृहमंत्री एवं अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के अतिथि गृह सभागार में 30 जुलाई 2017 को आयोजित समारोह में राजस्थान के गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने कहा कि प्राकृत साहित्य के प्रचार-प्रसार के साथ इस देश की संस्कृति और जीवनमूल्य जुड़े हुए हैं।

आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान-1997 से विभूषित प्रो. प्रेमसुमन के 75 वें जन्मवर्ष की सम्पूर्ति के इस अमृत महोत्सव के अवसर पर विद्याभूषण लोकमंगल न्यास, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. जयकुमार उपाध्ये ने डॉ. जैन को

एक लाख रुपयों के चैक एवं प्रशस्तिपत्र के साथ **आचार्य विद्यानन्द प्राकृत वाङ्मय पुरस्कार** भी प्रदान करने की घोषणा की एवं समारोह अध्यक्ष सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति प्रो. जे.पी. शर्मा तथा अतिथियों ने प्रो. प्रेमसुमन को यह सम्मान प्रदान किया।

भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी उदयपुर के महामंत्री प्रो. जिनेन्द्र जैन द्वारा सम्पादित 'अक्खर पाहुड' पुस्तिका का विमोचन महापौर चन्द्रसिंह कोठारी एवं अतिथियों ने किया। समाज के गणमान्य नागरिकों, मित्रों एवं संस्थानों द्वारा डॉ. जैन का सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया। *-डॉ. दिलीप धींग*

वाराणसी- विदुषी डॉ. मुन्नीजी जैन धर्मपत्नी प्रो. फूलचन्द जी जैन 'प्रेमी' को साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए

श्रवणबेलगोला में 11 से 13 अगस्त 2017 को आयोजित विशाल अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में 'आदर्श महिला सम्मान (Best Women Award)' से नवाजा गया। उन्हें श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, महा मस्तकाभिषेक महोत्सव की अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन, महिला सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती शीला अनन्तराज के द्वारा स्वर्णपदक, प्रशस्ति-पत्र, श्रीफल और शॉल से सम्मानित किया गया। डॉ. जैन ने विगत बीस वर्षों में ब्राह्मी लिपि के कई प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये हैं। इसके पूर्व भी आपके शोध प्रबन्ध पर दो पुरस्कार मिले हैं तथा उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा उत्कृष्ट संपादन हेतु आपको सम्मानित किया जा चुका है। *-डॉ. अनेकान्तकुमार जैन*

धनारीकलां- राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय धनारीकलां के संस्कृत विषय के अध्यापक श्री प्रकाशचन्दजी पारख को सत्र 2016-17 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में कक्षा दशम में संस्कृत विषय का परिणाम शत-प्रतिशत रहने पर 15 अगस्त 2017 स्वतन्त्रता दिवस को धनारीकलां की सरपंच महोदया श्रीमती गुलाबदेवीजी जैन द्वारा अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कोलकाता- सुश्राविका श्रीमती मंजु प्रेमचन्दजी भण्डारी पुत्रवधू श्री मदनरूपचन्दजी भण्डारी को अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन क्रॉन्फ्रेस की महिला शाखा द्वारा 03 अगस्त को मुम्बई में राष्ट्रीय नारी भूषण से सम्मानित किया गया।

बाड़मेर- श्री महावीर छाजेड़ सुपुत्र स्व. श्री मांगीलालजी छाजेड़ ने दी इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउण्टेंट ऑफ इण्डिया की परीक्षा सी.एम.ए. फाइनल में भारत वर्ष में 39 वीं रेंक प्राप्त की है। जोधपुर में उनका पहला स्थान तथा राजस्थान में उनका पाँचवा स्थान रहा है। आपने श्री कुशल जैन छात्रावास, जोधपुर में रहकर अध्ययन किया है।

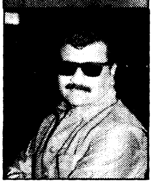

बालोतरा- सुश्रावक श्री धर्मेशकुमारजी चौपड़ा (कवास वाले) बालोतरा लघु उद्योग मण्डल समिति-बालोतरा के ट्रस्टी के रूप में चयनित हुए।

रीतेश जैन

विनम्र जैन

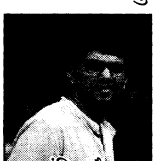
अंकित जैन

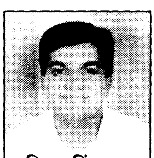
चिराग खिंवसरा

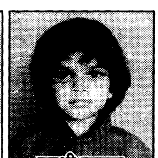
तनुश्री सुराणा

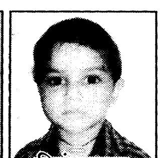
हिमांशु सुराणा

जयपुर- श्री रीतेश जैन सुपुत्र श्री रघुवीरजी जैन की 'दी राजस्थान स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक' में उप-महाप्रबन्धक के पद पर पदोन्नति हुई, एतदर्थ बधाई।

इन्दौर- श्री विनम्र जैन सुपुत्र श्रीमती अनिता-विनयजी जैन एवं सुपौत्र श्री ज्ञानचन्दजी मेडतवाल (बिजयनगर) ने सी.ए. के आई.पी.सी.सी. के दोनों ग्रुप की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

जयपुर- श्री अंकित जैन सुपुत्र श्रीमती बीना-निर्मलकुमारजी जैन ने आर.ए.एस. 2013 परीक्षा में 24 वां स्थान प्राप्त किया है तथा राजस्थान पुलिस सेवा में वरीयता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

जोधपुर- श्री चिराग खिंवसरा सुपुत्र श्रीमती शोभा-अशोकजी खिंवसरा एवं सुपौत्र स्व. श्री जौहरीमलजी खिंवसरा ने सी.ए. एवं आई.सी.डब्ल्यू.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

रायपुर- सुश्री खुशबू बरलोटा सुपुत्री श्री जितेन्द्रजी बरलोटा, उपाध्यक्ष श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ एवं सुपौत्री श्री शेषकरणजी जैन (छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ पत्रकार) ने सी.ए. की परीक्षा में सफलता प्राप्त की है।

जोधपुर- सुश्री तनुश्री सुराणा (8 वर्ष) ने 10 वर्ष आयु वर्ग में तथा श्री हिमांशु सुराणा (5 वर्ष) ने 6 वर्ष के आयु वर्ग में डिस्ट्रिक्ट एमचर रोलर स्केटिंग सोसायटी द्वारा आयोजित डिस्ट्रिक्ट लेवल इण्टर स्कूल रोलर स्केटिंग कॉम्पीटिशन में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

श्रद्धाञ्जलि

ब्यावर- संघ-सेवी सुश्रावक श्री मूलचन्दजी भण्डारी का 11 अगस्त 2017 को परलोकगमन हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावकजी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में वे सदैव तत्पर रहते थे। प्रतिदिन ज्ञानाराधना करने वाले श्रावकों में आपका अग्रणी स्थान था। आदरणीय श्री भण्डारीजी ने श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, ब्यावर में दीर्घ अवधि तक मंत्री पद का दायित्व भी बखूबी निर्वहन किया। आपके भ्राता श्री लक्ष्मीचन्दजी भण्डारी ने भी अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में राष्ट्रीय सहमंत्री पद का दायित्व निर्वहन किया। संघ व संघीय संस्थाओं द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों में आपके परिवार का सक्रिय सहयोग रहता है।

हैदराबाद- सुश्रावक श्री आनन्दजी बागमार (श्री जैन रत्न युवक परिषद्-हैदाबाद के वर्तमान अध्यक्ष) का 45 वर्ष

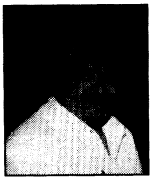

की अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया। आप गुरु हस्ती-हीरा-मान के प्रति अनन्य श्रद्धाशील, धर्मनिष्ठ युवारत्न थे। साधु-साध्वियों की विहार-सेवा, निर्दोष धोवन पानी, भिक्षाचर्या में गवेषणा हेतु सदैव तत्पर रहते थे। महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के हैदराबाद चातुर्मास में अन्तिम समय तक निःस्वार्थ, निर्दोष सेवा आप देते रहे। प्रतिदिन सामायिक, व्रत-पच्चक्खाण आपकी दिनचर्या थी। *-श्रीपाल देशलहरा*

जोधपुर- सुश्रावक श्री अर्जुनराजजी मेहता सुपुत्र स्व. श्री माणकराजजी मेहता का 07 अगस्त 2017 को स्वर्गारोहण

हो गया। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। वे स्थानक में पधारकर सामायिक-स्वाध्याय तथा संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन श्रवण का लाभ प्राप्त करते थे। आप एवं आपकी धर्मसहायिका दोनों ही धर्म-ध्यान में रत रहते। आपके पूज्य पिताश्री स्व. श्री माणकराजजी मेहता घोड़ों के चौक स्थित पौषधशाला में पधारकर प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करते थे तथा अन्यान्य श्रावकों को भी प्रेरणा करते थे।

राजकोट- श्री तिलोकचन्द्रजी (पूर्व में त्रिलोकमुनि) का 71 वर्ष की आयु में 14 अगस्त 2017 को राजकोट में

निधन हो गया। आप पूज्य श्री समर्थमलजी म.सा. के सान्निध्य में 18 वर्ष दीक्षित रहे तथा फिर संघ से पृथक् हो गये। 26 वर्ष पश्चात् स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से श्रावक जीवन अंगीकार कर लिया। आप आगम के मर्मज्ञ विद्वान् थे। आगम सम्बन्धी आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती बिदामजी मेहता धर्मसहायिका श्री रेखराजजी मेहता (जोधपुर निवासी) का 84 वर्ष की उम्र में 05 अगस्त 2017 को स्वर्गगमन हो गया। आप उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धा रखती थीं। आप सरल हृदया, मिलनसार एवं स्नेहयुक्ता थीं।

नागौर- गुरुभक्त, संघसेवी वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं चक्षु दाता श्री सागरमलजी पींचा का 24 अगस्त 2017 को 82 वर्ष की वय में संथारापूर्वक समाधिमरण बड़ोदरा में हो गया। आपका जीवन सादगीमय एवं सेवा कार्य में समर्पित था। संत-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में आप सदैव तत्पर रहते थे तथा नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले श्रावकरत्न थे। आप दो पुत्र एवं एक पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आपने स्वाध्याय संघ में वर्षों तक पर्युषण सेवाएँ प्रदान कीं।

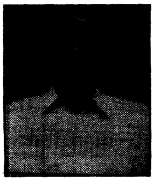

जयपुर- युवक परिषद् जयपुर के उत्साही कार्यकर्ता श्री आशीष कुमारजी नवलखा का 44 वर्ष की युवावय में 19 अगस्त 2017 को असामयिक निधन हो गया। श्रीमती सुमनजी एवं अरुणजी नवलखा के पुत्र मृदुभाषी आशीषजी ने अपने माता-पिता एवं अनुज मनीषजी की अग्लान भाव से सेवा की। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती ज्योत्सना सांसारिक पक्ष में व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. की भतीजी एवं साध्वी प्रमुखा श्री तेजकंवरजी म.सा. की भानजी हैं। आपके दादाजी डॉ. पन्नालालजी नवलखा एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य रहे। नवलखा परिवार संघनिष्ठ एवं गुरुभक्त परिवार है।

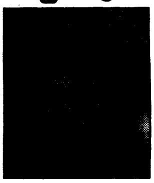

सवाईमाधोपुर- तपस्वी साधिका श्रीमती जडावदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री बजरंगलालजी जैन, कुण्डेरा वाले का 96 वर्ष की वय में 21 अप्रेल 2017 को देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन में तीन अठाई, 2 मासक्षपण, एक ग्यारह का उपवास, दो बार एकान्तर तप किए हैं। आप प्रतिदिन पाँच सामायिक करती थीं तथा सरल, सहज, उदारहृदया, धर्मशीला श्राविका थीं। संत-सतियों की सेवा-शुश्रूषा का लाभ लेती थीं। आप अपने पीछे श्री ए.एल. जैन, डॉ. एन.बी. जैन एवं श्री त्रिलोकजी जैन जैसे संस्कारी पुत्रों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

ऐरोली (नवीं मुम्बई)- सुश्राविका श्रीमती मैनादेवीजी कोठारी धर्मसहायिका श्री पूनमचन्दजी कोठारी (गोठडा वाले) का 84 वर्ष की आयु में 29 जुलाई, 2017 को स्वर्गवास हो गया है। वे सरल स्वभावी थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

क्षमा-याचना

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका के समस्त लेखकों एवं पाठकों से हमारा नियमित सम्बन्ध रहता है। न चाहते हुए भी हमारी किसी भूल से आपके हृदय को ठेस पहुँचना स्वाभाविक है। पर्वाधिराज सम्वत्सरी महापर्व पर हम निर्मल हृदय से अपनी भूल का परिमार्जन करते हुए आपसे हार्दिक क्षमायाचना करते हैं। आशा है आप क्षमा कर मैत्री को प्रगाढ़ बनायेंगे।

-सम्पादक, सहसम्पादक एवं जिनवाणी परिवार

जिनवाणी के अंकों पर आयोजित प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी मार्च-2015 से फरवरी-2016 के अंकों पर आयोजित प्रतियोगिता में 104 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों के उत्साह को देखते हुए पुरस्कार इस प्रकार घोषित (लाटरी द्वारा) किए जा रहे हैं- **प्रथम पुरस्कार (1100/-)-** अमितकुमार जैन-जयपुर (राज.)(100), **द्वितीय पुरस्कार (800/-)-** पुष्पा रामजीलालजी-धुलिया (महा.)(100), **तृतीय पुरस्कार (500/-)-** अनिल जैन-कोटा (राज.) (100), **100 अंक प्राप्त करने वाले आठ सांत्वना पुरस्कार (200/- प्रत्येक)-** 1. मंजुलता भण्डारी-बोरावड़ (महा.), 2. श्री जौहरी मल छाजेड़-जोधपुर (राज.), 3. विद्या जैन-अजमेर (राज.), 4. एस.एम.लोढ़ा-अजमेर (राज.), 5. शैली मेहता-जोधपुर (राज.), 6. कपिल कोठारी-जयपुर (राज.), 7. शिल्पा सुराणा-अजमेर (राज.), 8. नीरा भण्डारी-ब्यावर (राज.)। **100 अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतिभागी-**रेखाजी जैन-जयपुर, ज्ञानचन्दजी कोठारी-अजमेर, सविता खेराड़ा-अजमेर, श्रीमती विजयजी कोठारी-अजमेर, अनुरागजी सुराणा-अजमेर, नीता चौरड़िया जैन-जयपुर, हीरा रमेशजी कर्नावट-अहमद नगर (महा.), सुरेशचन्दजी जैन-अलवर, गुंजन चौपड़ा-जोधपुर, महेन्द्र बाफना-नाशिक, मंजूजी जैन-खंडवा (राज.), राजेन्द्र तेजमलजी जैन-भुसावल (महा.), धनवन्ती अनिलजी-नाशिक, प्रशान्तजी कोठारी-धुलिया, दीपांशुजी जैन-सवाईमाधोपुर, अमीशाजी कोठारी-अजमेर, रमेशचन्दजी छाजेड़-भुसावल, विद्याजी संघवी-बदनावर, लता नरेन्द्रजी जैन-भुसावल, करिश्माजी जैन-जयपुर, उषाजी सुराणा-जयपुर, सरोजजी गोलेच्छा-सनावद (मध्यप्रदेश), किरणजी कुम्भट-जोधपुर, अंजनाजी जैन-जयपुर, कँवलराजजी मेहता-जोधपुर, राजुल रमेशजी कोठारी-धुलिया, पिंकीजी जैन-जयपुर, पारसचन्दजी जैन-भरतपुर, प्रमिलाजी कोठारी-मेड़तासिटी, केतनजी जैन-जयपुर, मिनिषाजी जैन-अजमेर, संगीताजी जैन-जयपुर, अशोककुमारजी लुंकड़-वलसाड (गुजरात), कमलजी चोरड़िया-जयपुर, पुलकितजी संघवी-जोधपुर, वीरेन्द्रजी कुम्भट-जोधपुर, बलवन्तसिंहजी चोरडिया-पाटन (गुजरात), प्रकाशजी सिंघवी-जोधपुर, भरतसिंहजी जैन-सांगानेर, जयपुर। **99 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**मालती महेन्द्रकुमारजी जैन-खेरलीगंज, बुलबुल विपिनकुमार जी जैन-खेरलीगंज। **98 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**सुनीताजी जैन-उदयपुर, सुरेशजी गादिया-चेन्नई, सम्पतराजजी आंचलिया-अजमेर, पी.एम. जैन-चिंचवड़गाँव-पुना, बाबूलालजी जैन-भरतपुर, सुनीलजी जैन-मैसूर, सुनंदा प्रकाशजी-पुणे, रमेशचन्द तेजमलजी जैन-भुसावल, कमलादेवीजी सेठिया-अजमेर। **95 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**लताजी आंचलिया-धुलिया, प्रमिलाजी पोरवाल-धुलिया, मंगला प्रकाशजी गादिया-चालीसगाँव (महा.), चिरागजी जैन-जयपुर, पूनम किरण अलीझाड-नाशिक, भंवरसिंहजी जैन-जयपुर, तनुजा प्रशांतजी कोठारी-धुलिया, नीलमजी लोढ़ा-ब्यावर, सुवर्णा श्रेणिकजी-भुसावल, विशालजी जैन-सवाईमाधोपुर, संगीताजी जैन-कर्नाटक, संगीताजी जैन-कर्नाटक, अक्षतजी गोलेच्छा-जयपुर, एम.के. जैन पोरवाल-सवाईमाधोपुर, मधुबालाजी ओस्तवाल-नाशिक, पीरचन्दजी चोरडिया-जोधपुर, सुशीलाजी इं. रांका-जलगाँव, सरलाजी कांकरिया-जलगांव, वैभवीजी भण्डारी-नाशिक, आर.टी. जैन-भुसावल, गणेश नितीनजी कुचेरिया-जलगांव, शोभा राजेन्द्रजी जैन-भुसावल,। **94.5 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-** कंचनजी लोढ़ा-नाशिक, श्रेणिक राजेन्द्रजी जैन-भुसावल, **94 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-** ममताजी जैन-सवाईमाधोपुर, विनिताजी जैन-सवाईमाधोपुर, शोभा आर. जैन-जलगांव, आरतीजी जैन-गंगापुरसिटी (राज.), सुमनलताजी जैन-उदयपुर, अंजु राकेशजी जैन-बजरिया सवाईमाधोपुर। **90 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-** स्नेहजी जैन-सवाईमाधोपुर, कल्पनाजी छाजेड़-जोधपुर, कविताजी गादिया-चेन्नई, विमलाजी चोरडिया-चेन्नई, पारसजी जैन-बल्लारी (कर्नाटक), आशाजी दुगड़-चेन्नई, बीनारानीजी तातेड़-अजमेर। **85 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**अंजनाजी जैन-ब्यावर। **80 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-** सुशीलाबाईजी कोचर-नाशिक, चंचलबाई देवड़ा-बैंगलोर, चन्द्रा पवनजी देवड़ा-बैंगलोर, सरोज पारसमलजी रूणवाल-धुलिया। **60 अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभागी-**सुमन जसराजजी-कर्नाटक।

सांवत्सरिक क्षमायाचना

छद्मस्थता में त्रुटि स्वाभाविक है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए हमने भाद्रपद शुक्ला पंचमी, शनिवार, 26 अगस्त 2017 को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवों से विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की है। हम पूज्य आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द से अविनय-आशातना के लिए करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं, वहीं संघ-समाज के सभी भाई-बहिनों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं। विगत वर्ष के कार्यकाल में हमसे किसी वचन-व्यवहार व कार्यप्रणाली द्वारा किसी भी संघ-सदस्य की भावनाओं को ठेस पहुँची हो, इसके लिए हम अन्तःकरण से क्षमायाचना करते हैं।

क्षमाप्रार्थी

पी.एस. सुराणा	सुशीला बोहरा	आनंद चौपड़ा	पूरणराज अबानी
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

पारसचन्द हीरावत	पदमचन्द कोठारी	प्रमोद महनोत	विनयचन्द डागा
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

पूर्णिमा लोढ़ा	मीना गोलेच्छा	प्रमिला दुग्गड़	बीना मेहता
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

राजकुमार गोलेच्छा	राजेन्द्र लुंकड़	लोकेश कुम्भट	मनीष लोढा
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

ओमप्रकाश बांठिया	मंगला चोरडिया	गोपालराज अबानी
संयोजक	सह-संयोजक	सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

अशोक चोरडिया	अशोक बाफना	नवरतन गिड़िया
संयोजक	सह संयोजक	सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

हर्षवर्द्धन ललवाणी	विरेन्द्र कांकरिया	राजेश भंडारी
संयोजक	सह संयोजक	सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर

एवं

समस्त सदस्यगण, संचालन समिति एवं कार्यकारिणी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ व सहयोगी संस्थाएँ

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15828 से 15839 तक 12 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नाडसर, नाडसर में ज्ञानाराधना, धर्माराधना आदि का सुअवसर प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

4100/- श्री राजेन्द्रजी गोखरू, भीलवाड़ा, संघ सहायतार्थ।

3100/- श्रीमान् निर्मलचंदजी राजेन्द्रकुमारजी बाघमार, जबलपुर, श्रीमती इन्द्रा जी बाघमार द्वारा चातुर्मास में मासखमण तप करने के अवसर पर।

2100/- श्रीमती सरला प्रकाशजी ओस्तवाल, जोधपुर, अपनी पुत्रवधू श्रीमती दीपिका धर्मपत्नी श्री नितेश ओस्तवाल के 11 उपवास की तपस्या के अवसर पर।

2000/- श्रीमान् सौरभजी भण्डारी, बैंगलुरू, अवनी भण्डारी की द्वितीय वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

2000/- सुश्राविका श्रीमती कमलाबाईजी बम्ब (निमाज वाले), बैंगलोर, सुपौत्र श्री मुकेशजी-श्रीमती अर्चनाजी बम्ब के पुत्ररत्न का जन्म होने के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1101/- श्री रघुवीरजी, रितेशजी जैन, महारानी फार्म-जयपुर, श्री रितेशजी सुपुत्र श्री रघुवीरजी जैन की दी राजस्थान कॉपरेटिव बैंक में उप महाप्रबन्धक के पद पर नियुक्ति होने की खुशी में सप्रेम।

1101/- श्री महावीरराजजी, चन्द्रराजजी मेहता (जोधपुर वाले), जयपुर स्व. श्रीमती बिदामजी मेहता का 05 अगस्त 2017 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- डॉ. जीवराजजी जैन, जमशेदपुर, सुश्री निकिताजी जैन सुपौत्री डॉ. जीवराजजी एवं सुपुत्री श्री मनीषजी जैन को सरकारी मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिलने की खुशी में सप्रेम।

1100/- श्री हर्षजी, हेमन्तजी, पदमजी बरड़िया, जयपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री भोपालसिंहजी बरड़िया की पाँचवीं पुण्य तिथि 14 अगस्त के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले), बैंगलोर, भोपालगढ़ चातुर्मास में दर्शन लाभ का सौभाग्य प्राप्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती चंचलबाईजी, निर्मल कुमारजी बम्ब (निमाज वाले), बैंगलोर, सुपुत्र श्री मुकेशजी एवं पुत्रवधू श्रीमती अर्चनाजी के पुत्र रत्न का जन्म होने के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/- श्रीमती चंचलबाईजी, निर्मलकुमारजी बम्ब (निमाज वाले), बैंगलोर, वीरपिता श्री इन्दरचन्द जी गाँधी द्वारा भोपालगढ़ चातुर्मास में मासखमण की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री हस्तीमलजी, महेन्द्रजी, बुधमलजी, जितेन्द्रजी बोहरा, पीपाड़सिटी, सुश्रावक श्री जितेन्द्रजी एवं धर्मसहायिका सुश्राविका श्रीमती सुमनजी बोहरा की सजोड़े 9 की तपस्या भोपालगढ़ चातुर्मास में होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती दाखाबाईजी, ताराचन्दजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, राजेन्द्रकुमारजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, पूज्य श्री मूलचन्दजी जैन की 21 सितम्बर 2017 को तृतीय पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम।

1100/- श्रीमती कंचनजी जीरावला धर्मपत्नी श्री रूपराजजी जीरावला, जोधपुर, सुपौत्री होने के अवसर पर।

1100/- श्रीमान् मन्नालालजी पंकजजी कौशलजी बोथरा, जोधपुर। सहयोग हेतु।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-श्रीमती कमलाजी, श्री लोकेन्द्र नाथजी-श्रीमती रितुजी, सुश्री लोरी एवं आर्विजी मोदी, जोधपुर, श्रीमती विमलाबाईजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. श्री रणजीतसिंहजी भण्डारी की पुण्यस्मृति में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्त

100000/- श्रीमती शांति कुमारीजी धर्मसहायिका स्व. श्री कैलाशचन्दजी डागा, जयपुर, 'शास्त्र स्वाध्याय माला' के पुनः मुद्रण हेतु अर्थसहयोग प्राप्त।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

3100/- श्रीमान् निर्मलचंदजी राजेन्द्रकुमारजी बाघमार, जबलपुर, चातुर्मास में श्रीमती इन्द्रा जी बाघमार

द्वारा मासखमण तप करने के अवसर पर।

2100/- श्रीमान् स्वरूपजी सुराणा, जोधपुर। अपने सुपुत्र श्री संयम-आकांक्षा के पुत्री जन्म एवं स्व. श्रीमती किरण देवी-भंवरलालजी सुराणा के प्रपौत्री के जन्म के अवसर पर।

2100/- श्रीमान् शांतिमलजी जोहारमलजी मेहता, जोधपुर। सहयोग हेतु।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5100/- श्री अमितजी बोहरा, ब्यावर, जिला-अजमेर, जीवदया हेतु।

2000/- श्रीमती उमरावबाईजी भण्डारी, रायचूर (कर्नाटक) शिक्षा-दीक्षा हेतु।

2000/- श्री एस.सी. मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री रविजी कार्तिकजी जीरावला, जोधपुर, स्व. श्री जुगराजजी जीरावला की 26 वीं पुण्यस्मृति में।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड (अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

12000/- श्रीमती निर्मलादेवी गौतमचन्दजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ वाले) मोक्षद्वार ज्ञान पत्रिका, बैंगलोर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. नेहा के विवाह के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री महेन्द्रजी एम. गांग, सूरत, सहायतार्थ।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

गजेन्द्र फाउण्डेशन के नये सदस्य

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निम्नांकित महानुभाव गजेन्द्र फाउण्डेशन के नये सदस्य बने हैं। ट्रस्ट की ओर से इन सदस्यों का हार्दिक स्वागत है।

1. श्री सागरमलजी, महावीरजी, राजेशजी छाजेड़-चेन्नई (तमिलनाडु)।
2. श्री अनूपकुमारजी, संजयकुमारजी बाफना-इन्दौर (मध्यप्रदेश)।
3. श्री छतरचन्दजी, अरुणजी, सुनीताजी मेहता-जोधपुर (राजस्थान)।
4. श्री प्रकाशमलजी, आलोकजी, शेखरजी, कमलजी चोरडिया-चेन्नई (तमिलनाडु)।

-बसन्त मेहता, कोषाध्यक्ष

आगामी पर्व तिथि

आश्विन कृष्णा 8,	बुधवार	13.09.2017	अष्टमी
आश्विन कृष्णा 14,	मंगलवार	19.09.2017	चतुर्दशी
आश्विन कृष्णा 30,	बुधवार	20.09.2017	पक्खी
आश्विन शुक्ला 7,	बुधवार	27.09.2017	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला 8,	गुरुवार	28.09.2017	अष्टमी
आश्विन शुक्ला 10,	शनिवार	30.09.2017	आचार्य श्री भूधरजी म.सा. की पुण्यतिथि
आश्विन शुक्ला 14,	बुधवार	04.10.2017	चतुर्दशी
आश्विन शुक्ला 15,	गुरुवार	05.10.2017	पक्खी, आयम्बिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 1,	शुक्रवार	06.10.2017	आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा. की 164 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 8,	गुरुवार	12.10.2017	अष्टमी, आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी म.की 216 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 14,	बुधवार	18.10.2017	चतुर्दशी
कार्तिक कृष्णा 30,	गुरुवार	19.10.2017	पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक

बाल-जिनवाणी

क्षमा वीरस्य भूषणम्

श्री संजय अंशुजी सुराणा

दो बच्चे थे- संकल्प और संभव। दोनों एक ही विद्यालय में पढ़ते थे और उनके घर भी पास में ही थे। एक दिन संकल्प के पापा विदेश से उसके लिए बैटरी से चलने वाला रोबोट लेकर आये। वह उससे खेल ही रहा था, तभी संभव उसके घर आया। अब दोनों साथ में खेलने लगे। खेलते-खेलते अचानक संभव से खिलौना हाथ से छूट गया। वह पूरा खराब तो नहीं हुआ पर उसका एक कोना थोड़ा-सा टूट गया। संकल्प को क्रोध आ गया। उसने संभव के साथ बात करना बंद कर दिया। बहुत बार सॉरी कहने के बाद भी संकल्प नहीं माना। एक बार अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ होने वाली थीं और संकल्प को टाइफाइड हो गया। पूरे 15 दिन विद्यालय नहीं जा पाया। इस बात का पता चलने पर संभव उसके घर गया। 15 दिन में कक्षा में कराया कार्य उसने उसकी कॉपी में लिखा और समझाने-पढ़ाने में भी सहायता की। संकल्प की आँखों में आँसू आ गये, उसे बहुत पश्चात्ताप हुआ। वह बोला खिलौने तो फिर और आ जायेंगे पर मुझे तेरे साथ ऐसा नहीं करना चाहिए था। संभव ने भी सॉरी कहा और दोनों ने एक-दूसरे को माफ कर दिया। बच्चों इस कहानी से यह समझना चाहिए कि खुद से गलती हो जाए तो माफी माँग लो और दूसरों से हो जाए तो माफ कर दो। माफ करने वाला क्रोध करने वाले से बड़ा होता है। जब प्रेम से किसी बात का समाधान हो सकता है तो लम्बे समय तक क्रोध को अंदर रखकर द्वेष की तरंगों में क्यों रहना? शांति और सुख से क्यों वंचित होना? बच्चों! याद रखना जब तक हम क्रोध रूपी कषाय को अपने मन में रखकर किसी को माफी नहीं देते हैं, तो- 1. हमारे विनय और विवेक का नाश होता है। 2. मोहनीय कर्म का बंध होता है। 3. संसार बढ़ जाता और हम मोक्ष से दूर होते चले जाते हैं। इसलिए हमेशा ध्यान रखना जिस तरह एक छोटी-सी चिंगारी लकड़ी के बड़े ढेर को जला डालती है, एक बूंद ज़हर सैकड़ों मन दूध को जहरीला बना डालता है, एक छोटा-सा शब्द महाभारत का कारण बन जाता है, हमसे मिलकर कोई खुश हो या न हो मगर हमसे मिलकर कोई नाखुश ना हो यदि यह बात समझ में आ गई तो हृदय विशाल और दयालु बनता है, दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं, आत्मा का विकास होता है, जिससे हम सुखी बन सकते हैं।

क्षमा है जिसके मन में, संसार उसी को चाहता है,
सबका प्रेम वह पाता है, सर्वत्र प्रेम ही फैलाता है,
सुख, शान्ति, प्रगति, विकास को वह जल्दी पा जाता है,
जिसको प्रेम अस्त्र का कर प्रयोग, क्रोध से लड़ना आता है।

-जयपुर (राज.)

लेखक की सीख

डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक थे। लेकिन उन्हें यह प्रसिद्धि आसानी से नहीं मिली थी। इसके लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा था। जैसे-जैसे उनकी रचनाओं को पाठकों की सराहना मिलती गई वैसे-वैसे वे सफलता की बुलंदियों को छूते गए। इसके बाद उन्हें आए दिन अनेक कार्यक्रमों में शामिल होने के निमंत्रण मिलने लगे। वे बड़े हंसमुख और मिलनसार थे। इसलिए उनके चाहने वालों की एक लम्बी फेहरिस्त थी। एक दिन उन्हें एक कॉलेज के कार्यक्रम का मुख्य अतिथि बनाया गया। जॉर्ज बर्नॉर्ड शॉ ने सहजता से आमंत्रण को स्वीकार कर लिया और कार्यक्रम के दिन वे समय पर कॉलेज पहुँच

गए। जब कार्यक्रम समाप्त हुआ तो उनका ऑटोग्राफ लेने वालों की भीड़ इकट्ठा हो गई। उसी भीड़ में एक नौजवान ने उनके पैर छुए और अपनी हस्ताक्षर पुस्तिका देते हुए बोला- 'सर, मुझे साहित्य का बहुत शौक है और मैंने आपकी सभी पुस्तकें पढ़ी हैं। आप मेरे प्रिय लेखक हैं। मैं अपने जीवन में अभी तक अपनी पहचान नहीं बना पाया हूँ, लेकिन बनाना चाहता हूँ। इसके लिए आप मुझे कोई संदेश देकर अपने हस्ताक्षर करें तो बहुत मेहरबानी होगी। जॉर्ज नौजवान की बात पर मुस्कुराए और हस्ताक्षर पुस्तिका पर एक संदेश लिख अपने हस्ताक्षर कर दिए। नौजवान ने देखा तो लिखा था, 'अपना समय दूसरों के हस्ताक्षर इकट्ठा करने में नष्ट न करें, बल्कि खुद को इस योग्य बनाएँ कि दूसरे आपका हस्ताक्षर प्राप्त करने को लालायित रहें। अपनी अलग पहचान बनाने के लिए मेहनत बहुत आवश्यक है।' यह पढ़कर नौजवान ने उनके पैर छू लिए और बोला-'सर, मैं आपके इस संदेश को जीवन भर याद रखूँगा और अपनी एक अलग पहचान बनाकर दिखाऊँगा।' इस पर जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने नवयुवक की पीठ थपथपाई और आगे बढ़ गए।

बहुत बड़ी सीख

श्री पारसमल चण्डालिया

बड़ौदा हार्ट इंस्टीट्यूट एवं रिसर्च सेण्टर के प्रसिद्ध कार्डियो सर्जन (हृदय शल्य चिकित्सक) हैं- डॉ. पंकज जी माहेश्वरी, जिन्होंने 30 जनवरी, 2017 को मेरे हृदय की बाईपास सर्जरी (शल्य चिकित्सा) की थी। शल्य चिकित्सा के दौरान हृदय रोगियों की स्थिति देखकर मन में विचार आया कि कई रोगी ऐसे हैं जो धनाभाव के कारण हृदय की शल्य क्रिया, महंगा उपचार आदि नहीं करा पाते हैं। डॉ. साहब माहेश्वरी हैं, राजस्थान खासकर ब्यावर (अजमेर) में माहेश्वरी समाज बहुत बड़ा है। प्रतिवर्ष लाखों रुपये उत्सव-महोत्सवों में व्यय कर दिये जाते हैं, अतः डॉक्टर साहब की सेवाएँ शिविर के माध्यम से उधर प्राप्त हो सकें तो निर्धन व असहाय लोगों को भी राहत महसूस हो सके।

दिनांक 4 फरवरी 2017 को डॉक्टर साहब अपने सहयोगी नर्सिंग स्टॉफ के साथ चेकिंग हेतु राउण्ड पर मेरे कमरे में आये। पूछा- कैसे हो? मैंने कहा- ठीक हूँ। फाइल देखकर कमरे से बाहर निकल ही रहे थे कि उपर्युक्त आशय से मैंने पूछ लिया-'सर! आप मारवाड़ राजस्थान में कहाँ के हैं?' डॉक्टर साहब ने चलते-चलते उत्तर दिया- 'न मैं मारवाड़ का हूँ न राजस्थान का और न मध्यप्रदेश का, मैं तो भारत का हूँ।'

डॉक्टर साहब चलते-चलते राष्ट्रवाद की बहुत बड़ी सीख दे गये। मैं सोचता रहा, जहाँ हम अपने संकीर्ण विचारों-भावों के कारण धर्म, समाज और देश को बांटने की बातें करते हैं वहाँ उदात्त विचारों के धनी डॉक्टर साहब की यह बहुत बड़ी सीख विचारणीय और आचरणीय है।

-C/o. कमलेश जैन, 401, शील रेजीडेन्सी, 9 गुलाबवाडी, राधाकृष्ण चार रास्ता, अकोटा, बड़ौदा-390020 (गुज.)

जैन धर्म : उभरते प्रश्न व उत्तर

श्री प्रमोद महनोत

प्रश्नः- वंदना के कितने प्रकार हैं?

उत्तरः- वंदना के तीन प्रकार हैं- 1. जघन्य, 2. मध्यम, 3. उत्कृष्ट।

1. दोनों हाथ जोड़कर 'मत्थएण वंदामि', कहना जघन्य वंदना है।
2. पाँचों अंग नमा कर 'तिक्खुत्तो' के पाठ से वंदन करना मध्यम वंदना है। यही परिपाटी वंदन के लिए प्रचलित है और साधु-साध्वियों को इस पाठ द्वारा वंदन किया जाता है।
3. इच्छामि खमासमणो के पाठ से द्वादश आवर्त (12 आवर्तन के साथ वंदन करना) उत्कृष्ट वंदना है।

वंदन में क्रिया से अधिक महत्त्व भावना का है अतः किसी फल की कामना से किया जाने वाला वंदन **द्रव्य वंदन** है। निष्काम भाव से विशुद्ध गणानुरागवश किया जाने वाला **भाव वंदन** है।

प्रश्नः– ये वंदना कब-कब की जाती हैं?

उत्तरः– जघन्य वंदना जब-जब मुनिराज मार्ग में मिलें या विहार करके आयें तब की जाती है। जब मुनिराज स्थानक में विराजमान हों या कोई ज्ञान आदि सीखना हो, विशेष तप या प्रायश्चित्त लेना हो तब मध्यम वंदना की जाती है। उत्कृष्ट वंदना प्रातः एवं सायं दोनों समय प्रतिक्रमण में की जाती है।

प्रश्नः– 'तिक्खुत्तो' पाठ से वन्दन तीन बार क्यों किया जाता है?

उत्तरः– गुरु में तीन मुख्य गुण हैं- सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन व सम्यक् चारित्र। इन्हें रत्नत्रय की संज्ञा दी गई है। यही कारण है कि तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार वन्दन किया जाता है। हर वन्दन रत्नत्रय के एक गुण को स्मरण व ग्रहण करने के उद्देश्य से करते हैं। जो भी महापुरुष इन गुणों से युक्त हों, वे देव और गुरु पद के योग्य व आदरणीय वंदनीय माने गये हैं।

प्रश्नः– वन्दन में तीन बार आवर्तन क्यों करते हैं?

उत्तरः– आराधक देव व गुरु को सिर्फ काया (शरीर) से ही नहीं, बल्कि वचन (उच्चारण) के साथ मन से भी वन्दन करता है। अतः मन, वचन तथा काया से वन्दनीय होने से तीन बार आवर्तन किया जाता है।

-सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

MAINTAINING A HEALTHY RELATIONSHIP WITH YOUR PARENTS

Miss Anjita Bhandari

How often do you hear your parents complaining that now-a-days children are rebellious and refuse to listen? As a teenager, how many times have you complained that your parents do not at all understand you and always act as control heads?

The relationship between parents and teenager have been worsened. It seems like there is a gap between them as they could hardly communicate due to their busy schedules and their conversations always end with arguments. What is wrong with this relationship and who is responsible for these conflicts? This article may help you find out answers to such questions!

Parents should always gain respect from you as they brought you in this world and you owe them a lot. Acting in a disciplined manner may help them to trust us that we are responsible young people. We need to act in more mature manner when carrying out our duties. Act obediently. Be obedient.

Having a good relationship with your parents is a two way thing. If you do your part, your relationship with your parents will improve and you will have fewer arguments with them.

Here, it can be noted that problems between children and parents are never ending. Developing a better relationship with your parents involves assessing the underlying cause of the issues, fostering a more mature relationship with them and focusing on how you think and behave.

Thinking that our parents always control our thoughts and actions, we leave a negative impression on our own mind. Parent's first priority is their children's safety and welfare. Always ask them the reason related to decision they make for you and try understanding their point of view. If you are already facing conflicts that find out the root cause of the argument and try discussing it with your parents.

Now, let us think of the children who have all the liberty to do whatever they like and are not even asked about their

day-to-day activities. See the company they have, the places they visit, the work they do, and at last the bonding with their parents. They are all spoiled brats and don't at all care about others feelings and consider themselves as the divine creatures. Their future is dark and no success is guaranteed and end up hitting depression. They don't have any goals in their lives and will always live on their parent's money and will always be dependent on others.

So now do you think we all are lucky to have caring parents? Try understanding their situations and point of views and your life will have less of problems and you bond with your parents will improve.

-17 E-24, C.H.B. Jodhpur-342008 (Raj.)

पाँचवाँ बोल- पर्याप्ति छह

पर्याप्ति छह:-1. आहार पर्याप्ति, 2. शरीर पर्याप्ति, 3. इन्द्रिय पर्याप्ति, 4. श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, 5. भाषा पर्याप्ति और 6. मन पर्याप्ति।

आधार- भगवती सूत्र शतक 3, अध्ययन1, प्रज्ञापना 28 वाँ पद।

पर्याप्तिः नाम शक्तिः। अर्थात्-परिणमन करने की शक्ति को 'पर्याप्ति' कहते हैं। वह शक्ति विशेष जिससे जीव पुद्गल को ग्रहण करके उसे आहार, शरीर, इन्द्रियादि रूपों में परिणत करता है, उसे 'पर्याप्ति' कहते हैं। पर्याप्ति के छह भेद इस प्रकार हैं-

1. **आहार पर्याप्ति-** आहार के पुद्गलों को ग्रहण करके खल व रस के रूप में परिणत करने की जीव की शक्ति विशेष को 'आहार पर्याप्ति' कहते हैं। खल का अर्थ है-सार रहित भाग और रस का अर्थ है- सार भाग।
2. **शरीर पर्याप्ति-** रस रूप में परिणत पुद्गलों को सप्त धातु रूप में परिणत करने की जीव की शक्ति को 'शरीर पर्याप्ति' कहते हैं। सप्त धातु-रस, रक्त, मांस, मेद, हड्डी, मज्जा और वीर्य।
3. **इन्द्रिय पर्याप्ति-** शरीर पर्याप्ति द्वारा परिणत सप्त धातुओं से कान, आँख, नासिका आदि इन्द्रियों का निर्माण करने एवं उस रूप में परिणत करने की जीव की शक्ति विशेष को 'इन्द्रिय पर्याप्ति' कहते हैं।
4. **श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति-** जीव श्वासोच्छ्वास योग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण कर श्वास एवं उच्छ्वासरूप में परिणत करे, उस शक्ति विशेष को 'श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति' कहते हैं।
5. **भाषा पर्याप्ति-** जीव भाषा योग्य सूक्ष्म पुद्गलों को ग्रहण कर बोलने की योग्यता प्राप्त करे, वचनरूप में परिणत करे अर्थात्-वचन बोले, उस शक्ति विशेष को 'भाषा पर्याप्ति' कहते हैं।
6. **मन पर्याप्ति-** मनोवर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण करके चिन्तन मननरूप में परिणत करने की जीव की शक्ति विशेष को 'मन पर्याप्ति' कहते हैं।

जीव उत्पन्न होते समय सभी आत्म प्रदेशों से पुद्गलों को आहाररूप में ग्रहण करता है। उन पुद्गलों से सभी स्वयोग्य पर्याप्तियाँ जीव पूर्ण कर लेता है। एकेन्द्रिय जीव में प्रारम्भ की चार, बेइन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक के जीवों में मन को छोड़कर शेष पाँच पर्याप्तियाँ पायी जाती हैं। सन्नी पंचेन्द्रिय जीवों में सभी 6 पर्याप्तियाँ पायी जाती हैं।

You can

Do all the good you can
By all the means you can
In all the ways you can
At all the places you can
In all the times you can
To all the people you can
As long ....as you can

-Collected from 'Anmol Ratan'

सामायिक सूत्र : वर्ग पहेली

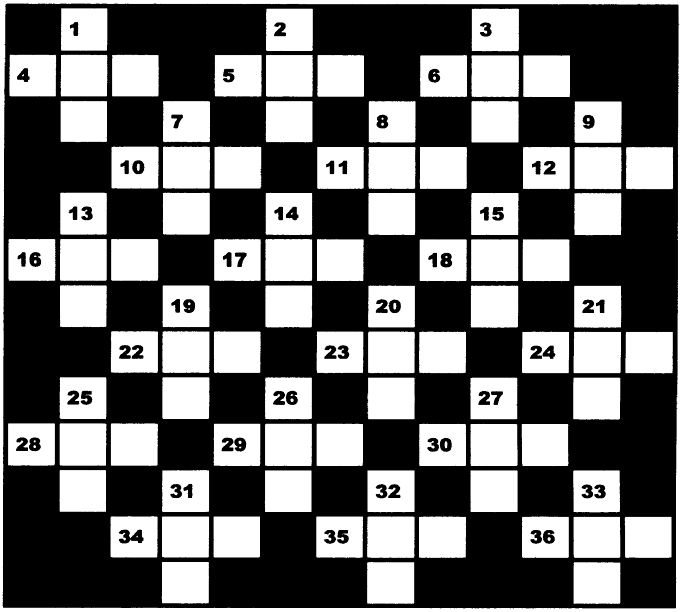

ऊपर से नीचे

1. सामायिक में ....योगों का त्याग किया जाता है।
2. सामायिक की कौनसी पाटी में आत्मा से परमात्मा बनने का पाठ है?
3. वचन युद्ध करने से लगने वाला दोष।
7. शुद्ध सामायिक करने वाला पूनिया कौन था?
8. सामायिक के दोष
9. निन्दा करता/करती हूँ।
13. लोगस्स सामायिक का कौनसा पाठ है।
14. वोसिरामि का अर्थ।
15. अरिहन्त भगवान में कौनसा उपयोग होता है।
19. 2 हाथ 2 घुटने 1 मस्तक ये हैं।
20. सामायिक का काल 48 .... है।
21. अरिहन्त हमें क्या देने वाले हैं?
25. तीर्थंकर धर्मरथ के हैं।
26. चार संज्ञाओं में एक संज्ञा
27. दसवें देवाधिदेव ....हैं।
31. इच्छकारेणं के पाठ में विराधित जीवों के नाम में से एक नाम।
32. वासुपूज्य के बाद होने वाले एक तीर्थंकर का नाम।
33. काया के दोष हैं।

बांये से दांये

4. सामायिक कौनसा तत्त्व है......................।
5. नवकार सब मंगलों में प्रथम..................है।
6. काया से लगने वाला दोष
10. सामायिक कौनसा व्रत है?
11. पाँच पदों में अक्षर
12. स्तुति करती हूँ।
16. मेरे दस दोष हैं।
17. तीर्थंकर को गंभीरता की उपमा किसने दी?
18. 12 आगारों में छठा आगार
22. 36 गुणों के धारी चतुर्विध संघ के नायक
23. पाँचवें गुणस्थान वालों की सामायिक का समय 48..... ....।
24. तीसरे जिनेश्वर
28. करना कराना अनुमोदनार्थ है।
29. साधु-साध्वी करते हैं।
30. शक्रस्तव सामायिक का कौनसा पाठ है।
34. सामायिक की विराधना कराने वाली कथा
35. पाँचवें तीर्थंकर
36. तीर्थंकर की हम चाहते हैं।

बाल-स्तम्भ

स्वच्छता और हम

श्री प्रणत धींग

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अक्टूबर, 2017 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान की शानदार शुरूआत की है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयन्ती 2 अक्टूबर 2014 (विश्व अहिंसा दिवस) से इस स्वच्छ अभियान की शुरूआत की गई, जो बापू की 150 वीं जयन्ती तक गतिमान रहेगा। बापू को साफ-सफाई बहुत प्रिय थी। सफाई करने में उन्हें न तो हिचक होती थी और न ही नफरत। वे स्वयं सफाई करतें थे और सबको कहते थे कि सफाई से कोई जी नहीं चुराए। बापू इतने बड़े आदमी थे तो भी खुद ही सफाई करते थे। महान् व्यक्ति ऐसे ही प्रेरक होते हैं।

काम करने से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है। अच्छा काम करने से आदमी अच्छा होता है और बुरा काम करने से बुरा होता है। सफाई करना और सफाई रखना अच्छा काम है। जब हमारे आसपास स्वच्छ वातावरण होगा तो हमें अच्छा लगेगा, हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। जब हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो हमारा मन और मस्तिष्क भी अच्छा रहेगा। जब हमारे मन-मस्तिष्क अच्छे रहेंगे तो हमारी पढ़ाई-लिखाई भी अच्छी होगी। जब हमारी पढ़ाई-लिखाई अच्छी होगी तो परीक्षा का तनाव नहीं रहेगा और हम अच्छे नम्बरों से पास होंगे। कहा जाता है कि जहाँ स्वच्छता होती है, वहाँ लक्ष्मी और सरस्वती का निवास होता है। इसका अर्थ यह है कि जहाँ स्वच्छता होती है, वहाँ गरीबी नहीं रहती है और वहाँ अज्ञान का अंधेरा भी नहीं रहता है। इस प्रकार स्वच्छता के साथ जीवन की सफलताएँ भी जुड़ी हुई हैं।

हम अपने घर में भी सफाई रखें और बाहर भी। हमें अपने गली-मौहल्ले और सार्वजनिक स्थानों पर भी कचरा पेटी में ही कचरा डालना चाहिये। हर कहीं नहीं थूंकना चाहिये। आखिर सफाई किसे अच्छी नहीं लगती है? सबको अच्छी लगती है। जो चीज़ सबको अच्छी लगती है, उसमें सबकी भागीदारी जरूरी है। सफाई केवल नगर प्रशासन और सफाई कर्मचारियों के भरोसे ही नहीं होती है। हमें हमारे प्रशासन और कर्मचारियों का सहयोग करना चाहिये। हमें एक छोटा-सा कागज का टुकड़ा भी हर कहीं नहीं फेंकना चाहिये। विद्यालय एवं इसके कक्षा-कक्ष में भी एक कागज का टुकड़ा भी हम विद्यार्थी इधर-उधर नहीं फेंकते हैं। हमारी छोटी-छोटी आदतें हमारे आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने में बहुत काम करती हैं।

छोटी कक्षा में हमें सुलेख लिखवाया जाता था- ''अपना काम आप करो।'' हमें खुद का काम खुद को ही करना चाहिये। जब सफाई की बात आती है

तब भी हमें खुद का काम खुद को ही करना चाहिये। हमारा काम हम करेंगे तो घर में फैलाव कम होगा, मम्मी को भी राहत मिलेगी तथा सारी व्यवस्था बनी रहेगी। हमारे विद्यालय में भी स्वच्छता का महत्त्व समझाया गया और विद्यार्थियों ने खुद ही अपने हाथों से सफाई की। खुद का काम खुद करने से साफ-सफाई के साथ हमारी आदत भी अच्छी बनती है। हम स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनते हैं। सबको प्रेरणा मिलती है कि स्वयं का कार्य स्वयं को ही करना चाहिये। हम सभ्य समाज के शिक्षित नागरिक कहलाते हैं तो हमें स्वयं भी स्वच्छ रहना होगा और आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ रखना होगा एवं उसे स्वच्छ रखने में मदद करनी होगी।

कभी-कभी हमारे घर में बड़े-बुजुर्ग और बीमार व्यक्ति खुद का काम खुद नहीं कर सकते हैं तो हमें उनकी सेवा करनी चाहिये। महात्मा गांधी तो हरिजन बस्ती में जाकर भी सफाई का सन्देश देते थे तो हमें शुरूआत हमारे घर से करनी चाहिये। सेवा और साफ-सफाई से बीमार व्यक्ति का स्वास्थ्य जल्दी अच्छा हो जायेगा और परिवार में दूसरा कोई बीमार नहीं होगा। इसके अलावा सेवा करने से बड़ों से आशीर्वाद और अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं।

स्वच्छता के साथ अनेक अच्छी बातें जुड़ी हैं। स्वच्छता से पर्यावरण भी स्वच्छ रहता है और प्रदूषण नहीं फैलता है। स्वच्छता होने से भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण; तीनों रुकते हैं। शाकाहारी जीवनशैली और स्वच्छता का चोली-दामन का साथ है। बूचड़खाने और मांसाहार से प्रदूषण होता है, अस्वच्छता और क्रूरता फैलती है तथा पानी की बर्बादी होती है। स्वच्छता बढ़ाने और प्रदूषण रोकने के लिए हमें शाकाहार ही करना चाहिये। शाकाहार को स्वच्छ आहार भी कह सकते हैं। शाकाहार से तन-मन और विचार भी स्वच्छ और स्वस्थ बने रहते हैं।

स्वच्छता के लिए प्लास्टिक की थैलियों पर भी अंकुश जरूरी है। प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग या तो नहीं करना चाहिये या कम करना चाहिये। क्योंकि प्लास्टिक जल्दी से नष्ट नहीं होता है, उससे नालियाँ भी अवरुद्ध हो जाती हैं। मेरे पापा तो कोई भी चीज़ लेने बाजार जाते हैं तो कपड़े का थैला साथ ले जाते हैं। वे प्लास्टिक की थैली लेने से मना कर देते हैं। थोड़ा ध्यान रखे तो हर व्यक्ति ऐसा कर सकता है। इसके अलावा, प्लास्टिक की थैलियों में खाने की चीजें फेंकने से यदि उन चीज़ों को गाय खा लेती है तो गाय के पेट में प्लास्टिक भी चला जाता है, जिससे गाय बीमार पड़ जाती है और मर भी सकती है। अत: पर्यावरण-रक्षा, पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम और करुणा के लिए भी स्वच्छता के नियमों का पालन करना चाहिये।

साफ-सफाई के लिए हमें हमारे आसपास जागरूकता फैलानी चाहिये। कितने ही लोग खुद के घर को तो साफ रखना चाहते हैं, लेकिन दूसरों की चिन्ता नहीं करते हैं। ऐसे लोगों को हमें समझाना चाहिये। आजकल टी.वी. और अखबारों में स्वच्छता के बारे में काफी जागरूकता फैलाई जा रही है। लेकिन हर मौहल्ले में सफाई के लिए समिति बननी चाहिये और सफाई के नियम बनने चाहिये। उन नियमों का पालन करना सबके लिए जरूरी होना चाहिये। जब एक-एक मौहल्ला स्वच्छ होगा तो सारा नगर स्वच्छ हो जायेगा और जब सारे नगर स्वच्छ होंगे तो सारा देश स्वच्छ हो जायेगा। इस प्रकार स्वच्छ भारत का हमारा सपना साकार हो जायेगा। कोई भी विदेशी भारत घूमने आयेगा तो स्वच्छ-सुन्दर भारत को देखकर उसके मन में भारत और भारतवासियों के प्रति अच्छी भावना बनेगी।

स्वच्छ भारत का एक अर्थ स्वस्थ भारत भी है। क्योंकि स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। स्वच्छता होने से हम तन और मन दोनों से स्वस्थ रहेंगे। इसीलिए साफ-सफाई सबको भा गई है। बड़े-बड़े नेताओं को भा

गई और अभिनेताओं को भा गई। खिलाड़ियों को भा गई और कलाकारों को भा गई। ग्रामीण को भा गई और शहरी को भा गई। देशी को भा गई और विदेशी को भा गई। सोनू को भा गई और मोनू को भा गई। गाय को भा गई और बकरी को भा गई। तोते को भा गई और मैना को भी भा गई। सार यह है कि साफ-सफाई जल-थल, धरती-आकाश, पशु-पक्षी आदि सभी को भा गई। अन्त में यही कहना चाहूँगा कि-

गांधीजी से प्रेरणा पाई,मोदीजी ने आवाज लगाई।
स्वच्छता की महिमा गाई, भारत देश ने ली अंगड़ाई।
सबने एक ही बात बताई, गंदगी है बहुत दु:खदाई।
साफ-सफाई सबको भायी, शाकाहार करो मिल भाई।

(डॉ. दिलीप धींग के सहयोग से लिखित)

-Ist Flr.,7, Ayya Mudali Street,
Sowcarpet, Chennai-600001

प्रश्न:-

1. स्वच्छता अभियान कब शुरु हुआ और वह कब तक चलेगा?
2. "काम करने से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है।" का अभिप्राय समझाइये।
3. सफाई रखने की जिम्मेदारी किस पर है?
4. स्वच्छता रखने के लिए आप क्या करेंगे?
5. वाक्य प्रयोग कीजिए-
   1. सपना साकार होना
   2. एक सिक्के के दो पहलू
6. 'स्वच्छता सभी को भा गई' से क्या आशय है?

बाल-स्तम्भ [जुलाई-2017] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2017 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'अधूरा ज्ञान' के प्रश्नों के उत्तर 34 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	ऋषभ चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	29.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	गुंजन चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	29
तृतीय पुरस्कार- 200/-	नमिता जैन-अजमेर (राज.)	28.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अरिष्ट कोठारी-अजमेर (राज.)	28
	निधी कीमती-रामपुरा (म.प्र.)	28
	सिमरन किरण-भुसावल (महा.)	28
	नमन श्रेणिक जैन-भुसावल (महा.)	28
	कुसुम मुरडिया-बल्लारी (कर्ना.)	28

बालस्तम्भ में प्रदत्त उत्तरों में से

स्वर्णिम बाल्यकाल

श्री अरिन चोरडिया

जिस प्रकार मनुष्य अपने शरीर पर स्वर्ण निर्मित आभूषणों को धारण कर अपने शरीर को सजाता है, संवारता है, ठीक उसी प्रकार बचपन को भी अनेक प्रकार से अच्छे संस्कारों से संवारकर, सुन्दर, श्रेष्ठ, प्रबुद्ध बनाया जा सकता है।

बाल्यकाल मानव जीवन का स्वर्णिम काल है, बाल्यकाल सोने के समान मूल्यवान है। यद्यपि सोना तो खोने पर पुनः खरीदा जा सकता है, किन्तु बचपन गया तो गया, वापस नहीं आता है। अतः बाल्यकाल ही ज्ञान प्राप्त करने का, नया कुछ सीखने का, जीवन निर्माण की बुनियाद (आधार) का स्वर्णिम काल है, इसको तरह-तरह के श्रेष्ठ मानवीय क्रिया-कलापों से सुसज्जित किया जाना चाहिए।

*-सुपुत्र श्री रजनीश चोरडिया,
46/101, ओरियेन्ट रैजीडेन्सी, लेन 6, धर्मपार्क,
श्यामनगर द्वितीय, जयपुर (राज.)*

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा–मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

BH Since 1986

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

Certificate No. H-2012-0136

राजस्थान व पड़ोसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

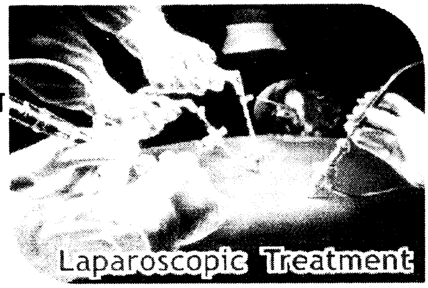

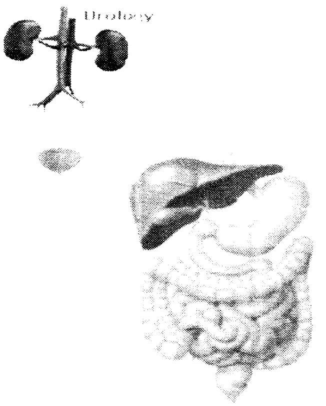

सुविधायें

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018

फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

– आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

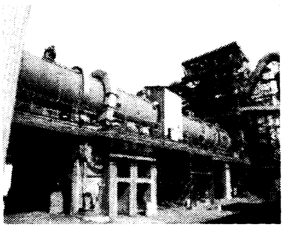

DRI Plant

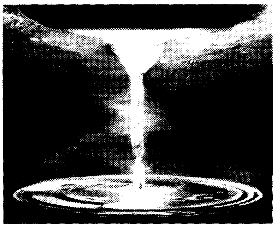

Electric Arc Furnace

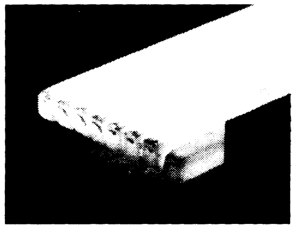

Billets

Rolling Mill

Captive Power Plant

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

 # 29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन–चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सर्म्पक करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Launches
N.H. Studios ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

!!Jai Guru Heera!! !!Jai Guru Hasti!! !!Jai Guru Man!!

LIFE
SHOULD NOT
ONLY BE LIVED,
IT SHOULD BE
CELEBRATED!

With best compliments from:

C. R. Kothari & Sons Group of Companies

Stock Broking - DP-CDSIL-NBFC-Solar Power

Mumbai - Baroda - Jaipur - Ajmer

Pradeep Kothari
Sanjay Kothari

Hemant Kothari
Alok Kothari

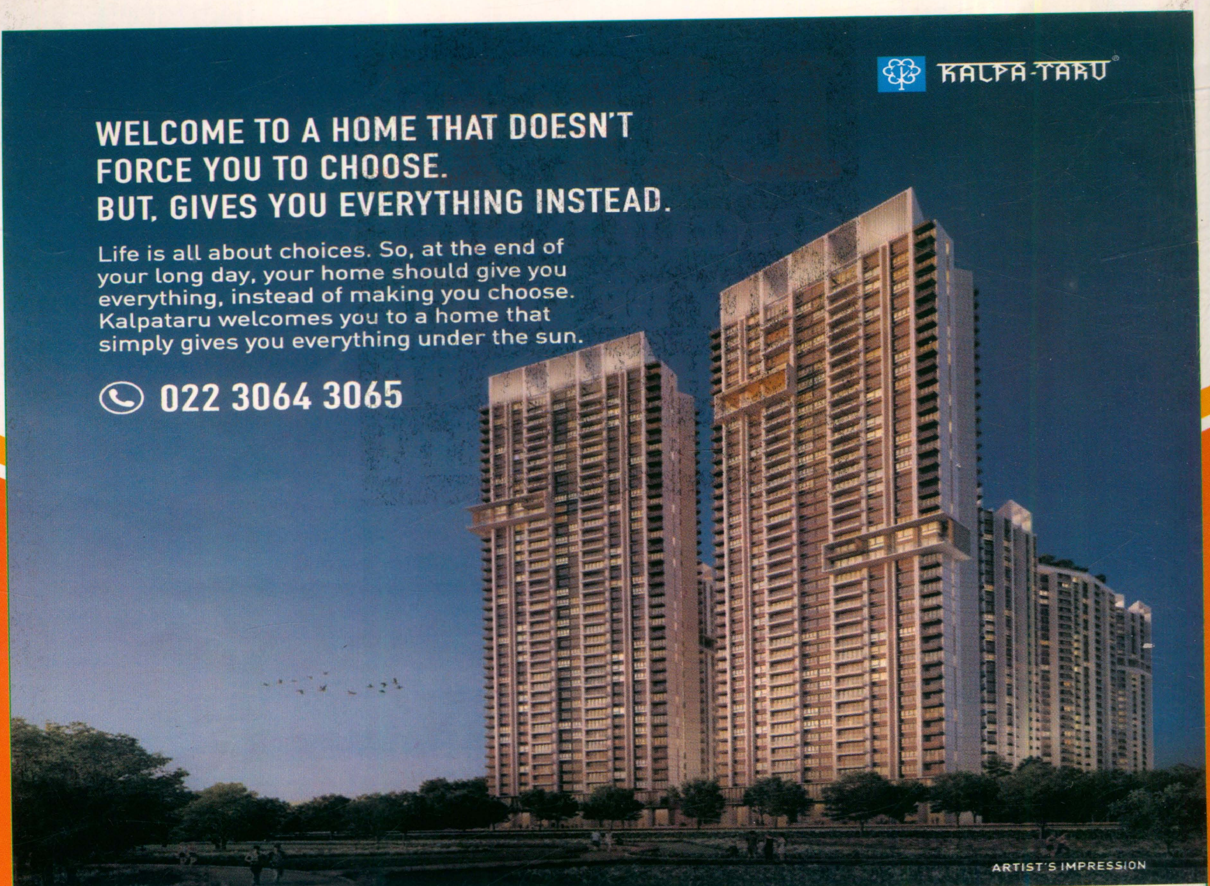

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT **IMMENSA** THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office**:101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | Tel: +91 22 3064 5000 | Fax: +91 22 3064 3131 | **Email**: sales@kalpataru.com | **Website**: www.kalpataru.com

In association with HDFC PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

(आ. स. 6700)
श्री मन्त्री महोदय
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, **कोबा-382007,**
जिला-गाँधीनगर (गुजरात)

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन